



केनरा ज्योति



केनरा ज्योति, अंक-46, अक्टूबर-दिसंबर 2025



हिंदी दिवस विशेषांक



केनरा बैंक

भारत सरकार का उपक्रम

Canara Bank

A Government of India Undertaking



सिंडिकेट Syndicate

Together We Can



मध्य, पश्चिम एवं दक्षिणी क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन

स्थान - देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (मध्यप्रदेश)

तिथि- 20 जनवरी 2026

श्री हरदीप सिंह अहलूवालिया, प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी (प्रभारी), को मध्य, पश्चिम एवं दक्षिणी क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय सम्मेलन के दौरान माननीय केंद्रीय गृह राज्य मंत्री, श्री बंडी संजय कुमार से "नराकास राजभाषा सम्मान" पुरस्कार श्रेणी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह कार्यक्रम दिनांक 20 जनवरी, 2026 को इंदौर में गृह मंत्रालय, भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित किया गया था। नराकास सदस्य सचिव, श्रीमती श्रीकला श्रीकुमार, सहायक महाप्रबंधक, राजभाषा एवं एचएमएल अनुभाग, प्रधान कार्यालय, ने संसद सदस्य श्री शंकर लालवानी से प्रमाण पत्र ग्रहण किया।



दिनांक 08 से 09 जनवरी, 2026 को केनरा बैंक उत्कृष्टता केंद्र, बागलुरु में राजभाषा अधिकारियों का 43वां अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में बैंक के विभिन्न अंचल/ क्षेत्रीय कार्यालयों/ प्रशिक्षण केंद्र में पदस्थ राजभाषा अधिकारीगण उपस्थित रहे। सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में श्रीमती श्रीकला श्रीकुमार, पर्यवेक्षी कार्यपालक, राजभाषा अनुभाग, प्रधान कार्यालय, बेंगलूरु व श्री रवि ए, सहायक महाप्रबंधक व केंद्र प्रभारी सीसीओई बागलुरु उपस्थित रहे।



हरदीप सिंह अहलूवालिया

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी (प्रभारी)



बी.पी. जाटव

मुख्य महाप्रबंधक



अमिताभ चटर्जी

महाप्रबंधक



श्रीकला श्रीकुमार

सहायक महाप्रबंधक व मुख्य संपादक

संपादक - बिबिन वर्गीस, वरिष्ठ प्रबंधक

सह-संपादक - निखलेश सोनी, राजभाषा अधिकारी

बिक्री के लिए नहीं

प्रकाशन:

केनरा बैंक, राजभाषा अनुभाग,
मानव संसाधन व जनसंपर्क विभाग,
प्रधान कार्यालय

112, जे.सी.रोड़, बेंगलूरु- 560002

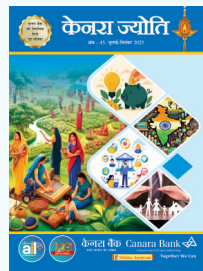
दूरभाष: 080-22234079

ई-मेल: hool@canarabank.com

वेबसाइट: www.canarabank.bank.in

केवल आंतरिक परिचालन हेतु

पत्रिका में अभिव्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। केनरा बैंक का उनसे सहमत होना ज़रूरी नहीं है।



विषय सूची	पृष्ठ संख्या
प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश - हरदीप सिंह अहलूवालिया (प्रभारी)	02
मुख्य संपादक का संदेश - श्रीकला श्रीकुमार	03
अगर हिंदी न होती.... - मयंक पाठक	04
डिजिटल उजाले में इंसानियत की ढलती शाम - अरुण शर्मा	08
उच्च शिक्षा में हिंदी की स्थिति - राजन प्रभाकर	11
अमृत काल में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं की परस्पर सहभागिता - साधिका सेठी	14
बदलते दौर में बैंकिंग प्रणाली: "जेन जी" की अपेक्षाएं और नवाचार की आवश्यकता - आलोक पाठक	16
ईज 8.0: भारतीय बैंकिंग में उत्कृष्टता की नई दिशा - डी बालकृष्ण	18
मैं तैयार हूँ - पावन अग्रवाल	19
प्रधान कार्यालय, अं.का. व क्षे. का. में हिंदी दिवस समारोह 2025 की झलकियां	20
मां की खामोशी में छिपा त्याग - हिंमाशु कुमार	24
मौन की पुकार - दिव्या प्रजापति	26
विकास की धारा, एकता की वाणी - दीपक ओझा	26
देवनागरी का लालित्य - अक्षय भास्कर बाजपेयी	27
हिंदी के लिए उपयोगी ई-टूल्स - धीरज जुनेजा	30
जो बांध सके फिर रिश्तों को, वो डोर कहां से लाऊं - विवेक मिश्रा	34
मेरी बिटिया मुझे छोड़कर जा रही है - राजीव कुमार	34
मेरी एक मुटठी मिट्टी - खुशबू	35
भारतीय कृषि: वर्तमान और भविष्य - नितिन सेतिया	36
वर्णों का वन.... - हर्षा के आर	39
परशिशनिक्कडवु मुत्तप्पन मंदिर - कीर्ति पी सी	41
45वें अंक पर आपकी प्रतिक्रियाएं	43
संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा किए गये निरीक्षण	44

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश

प्रिय केनराइट्स,

केनरा ज्योति के 46वें अंक (हिंदी विशेषांक) के माध्यम से आप सभी से संवाद स्थापित करते हुए मैं गर्व और प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। पत्रिका का प्रकाशन एक ऐसा मंच है जो कर्मचारियों को अपनी सृजनात्मक प्रतिभा एवं कला को प्रदर्शित करने का एक सुनहरा अवसर प्रदान करती है। इसके माध्यम से संगठन के उद्देश्यों के प्रसार के साथ ही ज्ञान, अभिव्यक्ति एवं रचनात्मकता को भी सार्थक दिशा मिलती है। साथ ही संगठन को भी सशक्त एवं सक्रिय बनाने में इससे सहायता मिलती है।



किसी भी देश की मौलिक चिंतन और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। किसी संस्थान की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपने कारोबार के क्षेत्र में किस सीमा तक भारतीय भाषाओं का प्रयोग कर बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान करने में सक्षम रहा है और इसका कितना व्यापक और समृद्ध रूप से सामान्य वार्तालाप में प्रयोग किया है। भाषा विचारों एवं भावनाओं के आदान-प्रदान का सशक्त एवं सार्थक माध्यम है। भाषा किसी भी देश की सामाजिक एवं सांस्कृतिक वाहिका का आधार होती है। ऐसे में राजभाषा हिंदी, देश की अखंडता एवं प्राचीन संस्कृति की वाहिका होने के साथ-साथ संपर्क भाषा के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

भाषा की शक्ति सर्वोच्च होती है और इसी मान्यता को समझते हुए बैंक द्वारा क्षेत्रीय भाषाओं के संवर्धन और विकास के साथ साथ बैंकिंग के समस्त क्षेत्रों में हिंदी का प्रभावी प्रयोग बढ़ाने के कई महत्वपूर्ण कार्य किए गए हैं। जन कल्याण से जुड़ी सरकारी योजनाओं एवं बैंक की अपनी योजनाओं को जन-जन तक निर्बाध रूप से पहुँचाने में देश की क्षेत्रीय भाषाओं का महत्वपूर्ण स्थान होता है। हमारे ग्राहक आधार को बढ़ाने और उसे सशक्त करने में क्षेत्रीय भाषाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए हमारे बैंक द्वारा "अपनी क्षेत्रीय भाषा को जाने" शीर्षक से अभी तक कुल छः भाषाओं क्रमशः कन्नड़, तमिल, तेलुगू, मलयालम, बंगाली और मराठी को सीखने संबंधी पुस्तकों का विमोचन किया जा चुका है और इसी कड़ी में भविष्य में अन्य प्रमुख भारतीय भाषाओं को सीखने हेतु पुस्तकों का प्रकाशन किए जाने की योजना है। मेरा मानना है कि बैंक और ग्राहकों के बीच सार्थक संवाद स्थापित करने के लिए क्षेत्रीय भाषा सीखने हेतु अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराना एक महत्वपूर्ण एवं सार्थक प्रयास है। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव हमारे बैंकिंग कारोबार पर भी दृष्टिगोचर होगा।

साथियों, यह बड़े हर्ष का विषय है कि हमारे प्रधान कार्यालय द्वारा संयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बेंगलूरु (बैंक व बीमा) को क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, बेंगलूरु द्वारा वर्ष 2024-25 के लिए उत्कृष्ट राजभाषा कार्यनिष्पादन के क्षेत्र में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इसके अलावा हमारे अंचल कार्यालयों/क्षेत्रीय कार्यालयों/शाखाओं को भी राजभाषा के क्षेत्र में कई क्षेत्रीय व स्थानीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

मुझे पूरा विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति रुचि बढ़ेगी और इस अंक में प्रकाशित सामग्री आप सभी के ज्ञानवर्धन में सहायक सिद्ध होगी और हमारे बैंक में उत्कृष्ट ग्राहक सेवा के साथ-साथ राजभाषा कार्यान्वयन को एक नई गति मिलेगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

हरदीप सिंह अहलूवालिया

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी (प्रभारी)



मुख्य संपादिका का संदेश

प्रिय पाठकों,

केनरा ज्योति के 46वें अंक के माध्यम से आप समस्त पाठकों से जुड़कर मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। यह नवीनतम अंक हिंदी विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। इस पत्रिका में हिंदी भाषा साहित्य और बैंकिंग के विभिन्न आयामों का अद्भुत संगम है। मैं यह मानती हूँ, कि हमारी पत्रिकाएं हमारी सोच, हमारे परिवेश का एक दर्पण होने के साथ-साथ बैंकिंग और वित्तीय विषयों से संबंधित नई-नई जानकारी साझा करने का एक रचनात्मक मंच भी है।



ग्राहकों को उनकी अपनी भाषा के माध्यम से सेवा प्रदान करने पर वे हर्ष का अनुभव करते हैं। जब हम ग्राहकों की अपनी भाषा में सम्प्रेषण करते हैं तो उनमें हमारे बैंक के प्रति अपनत्व की भावना का संचार होता है। भाषा मानव मन के विचारों को अभिव्यक्त करने का केवल एक माध्यम ही नहीं बल्कि यह मानव समाज की प्रगामी उन्नति की एक सरिता भी है। जिस प्रकार नदी के किनारों पर ही मानव जीवन और सभ्यता का विकास हुआ है, ठीक उसी प्रकार मातृ-भाषा का दामन थामकर ही वास्तविक उन्नति संभव है। इन तमाम बिन्दुओं का अनुसरण करते हुए हमारे बैंक में राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना का निरंतर अनुसरण हो रहा है।

आज के इस बाजारवाद से लेकर छोटे उद्योगों के विकास में कारोबारी भाषा के रूप में हिंदी का विकास हुआ है। तेजी से विकसित होती अर्थव्यवस्था ने हिंदी के विकास में अहम भूमिका निभायी है। उदारीकरण ने हिंदी को बाजार से जोड़ा, क्योंकि पूंजीवादी देश, भारत को एक बड़े बाजार के रूप में देखते हैं। इसलिये अपने मुनाफे के लिए हिंदी को बाजार की भाषा बनाना जरूरी है। वित्तीय संस्थानों में बैंक की कार्य शैली को ध्यान में रखते हुए यह नितांत आवश्यक है कि बैंक और ग्राहकों के बीच परस्पर सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित किए जाएं। राजभाषा हिंदी ऐसा ही एक प्रबल एवं बेहतर माध्यम है, जो हमारे ग्राहकों के साथ कारोबारी संबंधों को और अधिक प्रगाढ़ बनाने में बल प्रदान करता है, साथ ही बैंक में शीघ्र कार्य निष्पादन के साथ-साथ अच्छी ग्राहक सेवा प्रदान करने में भी सहायक होती है।

पत्रिका के इस अंक में राजभाषा हिंदी से संबंधित कई आलेख जैसे- अगर हिंदी न होती, उच्च शिक्षा में हिंदी की स्थिति, अमृत काल में हिंदी और भारतीय भाषाओं की परस्पर सहभागिता, डिजिटल उजाले में इंसानियत की ढलती शाम आदि विषयों पर प्रस्तुत आलेख निश्चित ही पाठकों के ज्ञान वर्धन में सहायक सिद्ध होंगे। आशा करती हूँ कि भविष्य में भी पत्रिका को बैंकिंग सहित अन्य विषयों पर आपकी उत्कृष्ट रचनाएँ प्राप्त होती रहेगी।

मैं पत्रिका में रचनात्मक सहयोग देने वाले सभी कर्मचारियों एवं लेखकों के प्रति अपना आभार प्रकट करती हूँ और आशा करती हूँ कि इस पत्रिका में दी गई जानकारी से प्रेरित होते हुए सभी स्टाफ सदस्य राजभाषा हिंदी में अपना कार्यालयीन कार्य संपन्न करेंगे और अपने कार्यालय में सकारात्मक हिंदीमय वातावरण का निर्माण करेंगे।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

श्रीकला श्रीकुमार

सहायक महाप्रबंधक

अगर हिंदी न होती.....



आलेख

मयंक पाठक

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

क्षेत्रीय कार्यालय गाज़ियाबाद

मानव सभ्यता और भाषा का अस्तित्व

मानव सभ्यता की महागाथा में भाषा वह श्रेष्ठतम आविष्कार है जिसने 'मर्कट' को 'मानव' और 'मानव' को 'मनीषी' बना दिया। मानवविज्ञानी मानते हैं कि लगभग 70,000 वर्ष पूर्व हुई 'संज्ञानात्मक क्रांति' के मूल में भाषा ही थी, जिसने हमारे मस्तिष्क को भोजन और सुरक्षा की चिंताओं से ऊपर उठाकर दर्शन, विज्ञान और कला रचने की शक्ति दी। यह केवल कंठ से निकली ध्वनियों का खेल नहीं, बल्कि चेतना का वह अद्वितीय संगीत है जो अमूर्त विचारों को आकार देता है। यदि भाषा रूपी यह जादुई कूट न होता, तो वेद की ऋचाओं से लेकर आइंस्टीन के सिद्धांतों तक सारा ज्ञान केवल मस्तिष्क की तरंगों में गुम होकर रह जाता।

भाषा की शक्ति केवल सृजन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वह 'अदृश्य हथियार' है जो बिना रक्त बहाए बड़ी-बड़ी क्रांतियाँ लाने का माद्दा रखती है। अतीत साक्षी है कि मार्टिन लूथर किंग के 'आई हैव अ ड्रीम' जैसे चंद शब्दों ने नस्लभेदी दीवारों को हिला दिया, गांधी जी के 'सत्य-अहिंसा' के मंत्र ने विश्व के सबसे शक्तिशाली साम्राज्य को घुटने टेकने पर विवश कर दिया। तो बात यह है कि मानव सभ्यता के विकास में भाषा का योगदान धमनियों में प्रवाहित रक्त के समान है, जिसने विचारों को शब्द का परिधान पहनाकर उन्हें अमरत्व प्रदान किया है।

भाषा वास्तव में किसी भी समाज का 'सांस्कृतिक डीएनए' होती है; यूनेस्को के तथ्य बताते हैं कि जब एक भाषा विलुप्त होती है, तो उसके साथ उस समुदाय का पारिस्थितिकीय ज्ञान, भौगोलिक चेतना और सहस्राब्दियों का संचित इतिहास भी काल के गर्त में सदा के लिए विलीन हो जाता है। अतः भाषा केवल संवाद और व्याकरण के नियमों का ढांचा नहीं, बल्कि सभ्यता की वह धड़कन है जो विगत के सार को आगत की चेतना में प्रवाहित करती है, और हमें 'मैं' की संकीर्ण परिधि से मुक्त कर 'हम' के विराट क्षितिज तक विस्तार देती है।

हिंदी : भारत भाषा भारती

अब यदि हम वैश्विक क्षितिज से दृष्टि हटाकर भारतवर्ष की पुण्यभूमि का अवलोकन करें, तो हिंदी यहाँ केवल 'संवाद' का उपकरण नहीं, अपितु राष्ट्रीय चेतना का वह 'विराट महासेतु' है, जो कन्याकुमारी की उत्ताल तरंगों को कश्मीर की हिम-वादियों से एकाकार कर देता है। वैविध्य के इंद्रधनुषी रंगों से रंजित इस विराट उपमहाद्वीप में, जहाँ 'कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बानी' की उक्ति जीवन का पर्याय है, वहाँ हिंदी ही वह 'सांस्कृतिक मेरुदंड' है, जिसने सदियों से राष्ट्र की अनंत भिन्नताओं को एकात्म के अखंड सूत्र में अनुस्यूत कर रखा है। हिंदी भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों की प्राणवायु है; जो स्वाधीनता संग्राम में 'गांधी की लाठी' और 'सुभाष की हुंकार' बनकर फिरंगियों के विरुद्ध गूँजी थी। आज वही हिंदी बाजार के कोलाहल से लेकर संसद के गलियारों तक और गाँव की चौपालों से लेकर डिजिटल स्क्रीन तक, भारत के 'मन' और 'मत' दोनों को साधने वाली सशक्त शक्ति है। यह अन्य भारतीय भाषाओं की स्पर्धी नहीं, अपितु उनकी स्नेहिल सहचरी है; जो भारतीयता की गहन विरासत को आधुनिकता के नूतन कलेवर में सुसज्जित कर, वैश्विक क्षितिज पर भारत के सांस्कृतिक अभ्युदय का शंखनाद कर रही है।



इस परिप्रेक्ष्य को समझने के बाद, जरा कल्पना करें कि "अगर हिंदी न होती.....?"

क्या भारत अपनी वर्तमान अस्मिता और स्वरूप को अक्षुण्ण रख पाता?

क्या हमारी लोकसंस्कृति, हमारी लोककथाएँ, हमारे गीत और हमारा मनस उसी तरह जीवंत रह पाता?

क्या कबीर का रहस्य, तिरुक्कुरल का दर्शन, तुलसी का लोक मंगल, मीराबाई की भक्ति और रवींद्र का संगीत विश्व-हृदय को झंकृत कर पाता?

क्या प्रेमचंद की कहानियों में वही दर्द और वही मिट्टी की सोंधी महक होती और क्या आज सचमुच लोकतंत्र होता?

यह प्रश्न 'भाषा' या 'लिपियों' का नहीं, अपितु सभ्यता के उस शाश्वत प्राण-तत्व का है, जो हमारी विखंडित अस्मिताओं को अखंडता के अविच्छिन्न सूत्र में आबद्ध करता है। इसके अभाव में तो एक डरावनी 'सांस्कृतिक

शून्यता' दिखाई देती है। यदि हिंदी रूपी यह महासूत्र न होता तो यह विराट राष्ट्र उस खंडित माला सा होता, जिसके अनमोल मोती जुड़ने के बजाय विलग और एकाकी रहते। तब एक ही ध्वज के नीचे रहकर भी हम 'अजनबी' होते; जहाँ एक राजस्थानी, मराठा, तेलगु, बंगाली और तमिल भाई के बीच कामचलाऊ संवाद तो होता, पर वह 'आत्मिक संवेदना' न होती जो माँ, माटी और मन से उपजती है।

स्वाधीनता के महायज्ञ की वह प्रचंड ज्वाला, जो हिंदी की एक हुंकार से समूचे राष्ट्र में धधक उठी थी। वह संभवतः क्षेत्रीय सीमाओं में सिमटकर, छिन्न-भिन्न होकर बुझ जाती। यदि यह 'संपर्क-सूत्र' न होता, तो आज हम स्वजनों के सुख-दुख साझा करने के लिए किसी विदेशी भाषा की बैसाखियों पर आश्रित होते। तब हमारी राष्ट्रीय एकता का यह भव्य प्रासाद भावनात्मकता के बिना, केवल राजनीतिक मानचित्रों पर अंकित एक निष्प्राण और खोखली संरचना मात्र रह जाता। हिंदी का न होना, मात्र एक भाषा का अभाव नहीं, अपितु भारत की 'सामूहिक चेतना' का 'चिर-मौन' हो जाना होता।



हिंदी का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य : उद्भव एवं विकास

देववाणी से लोकवाणी की ओर हिंदी की यह विकास यात्रा, 'वैदिक संस्कृत' के उत्तुंग शिखरों से उतरकर 'लोक-वाणी' के विस्तृत सागर तक पहुँचने की एक युगांतरकारी साधना है। ऋचाओं के गंभीर नाद से निकलकर, यह धारा भगवान महावीर की 'प्राकृत-अर्धमागधी' और भगवान बुद्ध की 'पालि' के घाटों को स्पर्श करती हुई, जब 'अपभ्रंश' के बीहड़ और ऊबड़-खाबड़ पथ पर चली, तो कहीं टूटती- कहीं जुड़ती ध्वनियों 1000 ई. के आसपास हिंदी का 'अंकुर' बन गई। यह वह संक्रांति काल था जब शब्द केवल व्याकरण के बंधनों में नहीं, बल्कि जन मानस की धड़कनों में ढल रहे थे। वीरगाथा काल की 'डिंगल-पिंगल' की खड़्ग ध्वनि से लेकर भक्तिकाल में 'ब्रज' और 'अवधी' की माधुर्य मंदाकिनी तक; हिंदी ने कभी चंदबरदाई के शौर्य में तो कभी सूर- तुलसी की भक्ति में स्वयं को तपाकर कुंदन बनाया। हिंदी ने सिद्ध किया कि वह केवल संवाद की भाषा नहीं, अपितु आत्म परिष्कार का माध्यम है।

18वीं शती के बाद हिंदी की यह यात्रा जब आधुनिक काल के द्वार पर

पहुँची, तो 'खड़ी बोली' के रूप में इसने 'नव-जागरण' का सूत्रपात किया। 13वीं सदी में अमीर खुसरो की पहलियों में जो 'हिंदवी' अठखेलियाँ कर रही थी, उसे भारतेन्दु युग (1850-1900) में साहित्य का 'राजसी परिधान' मिला और द्विवेदी युग (1900-1920) में व्याकरण की कसौटी पर कसकर उसे 'सुसंस्कृत' किया गया। 20वीं सदी के स्वतंत्रता संग्राम के महासमर में यही हिंदी 'गांधी की सत्य-चेतना' और 'सुभाष की सिंह-गर्जना' बनकर उभरी, जिसने फिरंगियों की जड़ों को हिला दिया। आज हिंदी भाषा वैदिक संस्कृत की पौत्री और अपभ्रंश की पुत्री के रूप में, अपने 3500 वर्षों के अतीत के गौरव और भविष्य की अनंत संभावनाओं को अपने आँचल में समेटे, भारतवर्ष के मस्तक पर 'विजय-तिलक' की भांति देदीप्यमान है।

कल्पना करें, अगर हिंदी न होती.....! भारतीय साहित्य का स्वरूप कितना एकाकी होता, हमारी संवेदनाएं संस्कृत के 'शास्त्रीय अनुशासन' या अंग्रेजी की 'औपचारिकता' में घुटकर रह जातीं, और लोक जीवन का उन्मुक्त प्रवाह हमेशा के लिए थम जाता।

हिंदी : सांस्कृतिक समन्वय

हिंदी के अभाव में भारत का सांस्कृतिक मानचित्र दिशाओं के द्वंद्व में बिखर जाता। यदि यह 'संपर्क-सूत्र' न होता, तो उत्तर के हिमाद्रि की शीतलता, दक्षिण के सागर के गांभीर्य से कभी एकाकार न हो पाती। पूरब के 'बाउल' संगीत की मिठास, पश्चिम के 'रण-भेरी' के शौर्य तक पहुँचने से पहले ही दम तोड़ देती। हिंदी ही वह 'त्रिवेणी' है, जिसने कामरूप के उगते सूरज को गुजरात के ढलते संध्या वंदन से जोड़ा है। इसके बिना, हमारी भौगोलिक दिशाएं तो जुड़तीं, लेकिन उनकी 'सांस्कृतिक आत्माएं' अपने-अपने कोणों में सिमटकर, सदा के लिए विभाजित और विशृंखल हो जातीं। एक ऐसे विराट शरीर की भांति, जिसके विविध अवयव तो हैं, किन्तु उनमें प्रवाहित होने वाली 'सांस्कृतिक चेतना' और 'संवेदना का रक्त' एक नहीं है।

हिंदी केवल वर्णों का पुल नहीं, बल्कि भारत के सांस्कृतिक उल्लास का महाद्वार है। यह इसी भाषा का चमत्कार है कि मलयालम बोलने वाला दक्षिण का भक्त, ब्रज की होली के रंगों में सराबोर होकर राधे-राधे पुकार उठता है। गुजराती 'गरबा' की थाप, असम के 'बिहू' गीतों के साथ सुदूर पूर्वोत्तर में गूजने लगती है। यदि हिंदी रूपी यह 'संवाद-सेतु' न होता, तो तमिलनाडु का 'पोंगल' और पंजाब की 'लोहड़ी' एक-दूसरे के लिए केवल कैलेंडर की तिथियां बनकर रह जातीं। हिंदी ने ही इन भौगोलिक दूरियों को मिटाकर एक ऐसा 'सांस्कृतिक आंगन' रचा, जहाँ बंगाल की 'दुर्गा पूजा' का निमंत्रण महाराष्ट्र के 'गणेश उत्सव' तक बिना किसी अनुवादक के पहुँचता है। वास्तव में, हिंदी वह अदृश्य धागा है जिसने भारत की विविध भाषाओं और त्योहारों को एक साझा माला में पिरोकर, 'क्षेत्रीयता' से ऊपर उठाकर 'भारतीयता' का बोध कराया है।

हिंदी : भारतीय एकता का मेरुदंड

स्वतंत्रता संग्राम के उस महासमर में, हिंदी केवल संवाद की भाषा नहीं, अपितु पराधीनता के अंधकार को चीरने वाली 'क्रांति मशाल' थी। उस कालखंड में हिंदी ने वह असाध्य कार्य सिद्ध किया जो तत्कालीन कोई भाषा न कर सकी। उसने अंग्रेजी की दासता और प्रांतीय सीमाओं के मध्य फंसे जनमानस को एकता के एक अविभाज्य सूत्र में बाँध दिया। जब लोकमान्य तिलक ने 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है' का उद्धोष किया और गांधीजी ने 'हिंदी, हिंदुस्तान की भाषा है' का मंत्र फूँका तो यह महज एक नारा नहीं, बल्कि तत्कालीन भारत की राजनैतिक अनिवार्यता और अस्मिता का जयघोष बन गया।

यही वह 'समरस-संजीवनी' थी जिसने बंगाल के खुदीराम बोस जैसे क्रांतिकारियों के शौर्य और पंजाब के भगत सिंह जैसे देशभक्तों के त्याग को एक ही स्वर में ढाल दिया। किंतु, जरा विचार कीजिए, अगर हिंदी न होती.....!, तो क्या यह जनांदोलन इतनी व्यापकता ग्रहण कर पाता? भाषा की विषमता ने समाज को पहले ही जाति और प्रांत के खण्डों में विभक्त कर रखा था। ऐसे में हिंदी ने ही उन विभाजनों से ऊपर उठकर एक साझा मंच प्रदान किया, जिसके बिना 'भारत माता' की यह भावात्मक और एकीकृत छवि शायद कभी मूर्त रूप न ले पाती।

कहा गया है: "यत्र स्वभाषा तत्र संस्कृति, यत्र संस्कृति तत्र राष्ट्रम्।"

हिंदी : प्रशासनिक और सामाजिक संवाद

हिंदी के बिना भारत का प्रशासनिक और सामाजिक संवाद उस सघन कुहरे से आच्छादित महापथ के सदृश होता, जहाँ सहयात्री एक-दूसरे के समीप होकर भी एक रहस्यात्मक अजनबीपन में लिपटे रहते। सत्ता के गलियारों से निःसृत आदेश, जन-सामान्य के लिए किसी 'दुरूह कूट लिपि' में परिवर्तित हो जाते, जिनका 'अनुपालन' तो देह भय से होता, किंतु 'अनुमोदन' मन से न होता। शासन और प्रजा के मध्य एक ऐसी दीवार खड़ी हो जाती, जिसके आर-पार देखा तो जा सकता था, पर सुना और महसूस नहीं किया जा सकता था। संवाद की वह सहज मधुरता, जो कठोर शासन को भी मृदु बना देती है, विलीन हो जाती। सत्ता के उच्च शिखरों से प्रवाहित आदेश समाज पर एक 'शैल-खंड' की भाँति गिरते, जो केवल 'आघात' देते, 'बोध' न उपजाते।

विद्यालयों के प्रांगण से लेकर न्यायालय के गंभीर कक्षों तक, हम अपनी ही मेधा और सत्य को एक 'विदेशी दुभाषिण' की बैसाखी पर टिकाने को विवश होते, जहाँ ज्ञान 'प्रज्ञा' न बनकर केवल 'सूचना' रह जाता और न्याय 'करुणा' से रिक्त होकर 'निर्मम निर्णय' बन जाता। यह केवल एक भाषा का अभाव न होता, अपितु उस संवेदनात्मक सूत्र का विच्छेदन होता, जो शासन की 'कठोर वैधानिकता' को लोक हृदय की 'सहज स्वीकार्यता' में परिवर्तित करता है। हिंदी के अभाव में हमारा सामाजिक और प्रशासनिक

ढाँचा उन समानांतर रेखाओं की भाँति होता, जो अनंत तक साथ तो चलतीं, पर संवाद के किसी भी बिंदु पर एक-दूसरे को स्पर्श नहीं कर पातीं।

हिंदी : ज्ञान-विज्ञान और मीडिया

हिंदी के अभाव में तो विज्ञान और प्रौद्योगिकी भारतीयों के लिए उस इंद्रजाल की भाँति होती, जिसे विस्मय से देखा तो जा सकता था, परंतु उसके तर्कों को आत्मसात नहीं किया जा सकता था। नवाचार हमारी 'प्रज्ञा' से नहीं उपजता, अपितु हम आयातित ज्ञान के 'बौद्धिक उपनिवेश' बनकर रह जाते। हमारा मस्तिष्क केवल 'अनुकरण' करने के लिए प्रशिक्षित होता, 'अनुसंधान' के लिए नहीं। मीडिया, जो लोकतंत्र की जीवंत श्वास है, हिंदी से विमुख होते ही केवल एक विशेषाधिकारयुक्त प्रसारण तंत्र में बदल जाता, जहाँ सूचनाएँ तो तेज गति से दौड़तीं पर वे लोक पीड़ा के मर्म को स्पर्श करने में असमर्थ होतीं। समाचारों का संसार उस 'कांच के घर' जैसा होता जहाँ से समाज का यथार्थ दिखाई तो देता पर उसके भीतर एक 'संवेदनात्मक शून्यता' पसरी रहती। और फिर सत्य; न जाने कौन सी भाषा के आवरण में लिपटा हुआ, अपने ही लोगों के बीच एक सम्मानित अतिथि सा होता, जिसे आदर तो मिलता पर अपनापन कभी न मिलता।

विज्ञान और तकनीकी के इस युग में भी हिंदी ने अपनी प्राणशक्ति का जयघोष किया है। इंटरनेट, सोशल मीडिया और डिजिटल पत्रकारिता के नव माध्यमों ने हिंदी को वैश्विक संवाद के एक सशक्त रूप में प्रतिष्ठित किया है। यदि इस परिदृश्य में हिंदी अनुपस्थित होती, तो 'डिजिटल भारत' का स्वप्न अपने व्यापक अर्थ खो देता और सीमित होकर एक विशेष वर्ग की डिजिटल परिधि तक सिमट जाता। ज्ञान और सूचना की इस क्रांति में करोड़ों भारतीय नागरिक एक ऐसे 'तकनीकी वनवास' को भोगने के लिए विवश होते, जहाँ वे प्रगति के महासागर के तट पर खड़े तो रहते, किंतु हिंदी के अभाव में उस 'अमृत-जल' का आचमन करने से सदैव वंचित रह जाते।

हिंदी : भारतीय साहित्य और भावनाओं का संसार

हिंदी वह महासंगम है, जहाँ उत्तर का 'तप-तेज', पूरब की 'भाव-साधना', पश्चिम का 'कर्म-योग' और दक्षिण का 'गूढ़-दर्शन' मिलकर एक राष्ट्रीय स्वर बन जाते हैं। पूरब के 'रवींद्र' का आध्यात्मिक निनाद, पश्चिम की 'मीरा' व 'नामदेव' की भक्ति तथा समर्पण और दक्षिण के 'शंकर' का अद्वैत-दर्शन व 'सुब्रह्मण्यम भारती' का ओज अपने-अपने भूगोल में सिमटकर रह जाते। यह हिंदी ही है जो इन पृथक साहित्यिक दीपों को संयोजित कर एक 'राष्ट्र-दीप' प्रज्वलित करती है।

और अगर हिंदी न होती....., तो भारतीय संवेदनाओं का वह 'चिन्मय आकाश' सर्वथा निरस्तेज रह जाता, जिसे तुलसी की 'मर्यादा' और सूर के 'वात्सल्य' ने युगों से आलोकित किया है। प्रसाद का 'दार्शनिक गांधीर्य',

निराला का 'ओजस्वी विद्रोह' और महादेवी की 'करुण-पीड़ा'; ये सब एक 'मौन महासागर' में विलीन हो जाते। रेणु के 'मैला आंचल' की आंचलिक गंध और मुक्तिबोध की 'बौद्धिक बेचैनी' एक विदेशी भाषा के शीतगृह में कभी पनप न पाती। साहित्य का वह दर्पण खंडित हो जाता जिसमें भारतीय जनमानस अपना यथार्थ प्रतिबिंब देखता है। और हम, अपनी ही धरती पर, अपनी ही भावनाओं के अनुवादक बनकर रह जाते, जहाँ हम अपने हर्ष और विषाद को व्यक्त करने के लिए किसी पराई लिपि में 'शब्द' भिक्षा मांग रहे होते।

हिंदी : शिक्षा, कारोबार व अर्थतंत्र

शिक्षा का उद्देश्य मस्तिष्क को केवल तथ्यों और सूचनाओं से भरना नहीं, बल्कि उसमें 'मौलिक चिंतन' की ज्योति प्रज्वलित करना है, और यह अद्वितीय सामर्थ्य केवल मातृभाषा में ही निहित है। जब एक विद्यार्थी विज्ञान के जटिल सिद्धांतों या गणित के सूत्रों को हिंदी के सहज परिवेश में समझता है, तो वे उसके लिए 'रटने' का बोझ नहीं, बल्कि 'बोध का आनंद' बन जाते हैं। पराई भाषा का अभेद्य कुहासा अक्सर विद्यार्थी की सहज जिज्ञासा का दम घोंट देता है, और स्वभाषा उसे तर्क व कल्पना के आकाश में उड़ने के लिए उन्मुक्त पंख देती है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी इसी सत्य का उद्घोष है कि अपनी जड़ों से जुड़ी भाषा ही नवाचार को जन्म दे सकती है। ये सत्य है कि निज भाषा में आत्मसात किया गया ज्ञान ही 'संस्कार' और 'सृजन' में रूपांतरित होता है। भारत में हिंदी मौलिकता और बोध का द्वार है। यदि हिंदी न होती, तो हमारी पूरी शिक्षा व्यवस्था केवल 'रटत-विद्या' का एक निर्जीव कारखाना बनकर रह जाती; जहाँ हम 'सफल यांत्रिक मानव' तो गढ़ लेते किंतु प्रज्ञावान, संवेदनशील एवं चिंतनशील मनुष्य कभी न बना पाते।

आपको याद होगा : "निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल"

भारतीय अर्थतंत्र के विशाल कुरुक्षेत्र में, हिंदी केवल संवाद-साहित्य की भाषा नहीं, अपितु कारोबार सफलता की अनिवार्य शर्त बन चुकी है। भूमंडलीकरण के इस दौर में, वैश्विक महाशक्तियों ने यह स्वीकार कर लिया है कि भारत के विशाल उपभोक्ता-वर्ग की तिजोरी की चाबी, उसकी मातृभाषा के पास है। गाँव की पगडंडियों से लेकर महानगरों के मॉल तक, यदि आपको अपना उत्पाद बेचना है, तो 'भारत से भारत की भाषा' में संवाद करना होगा। हिंदी स्टार्टअप और डिजिटल बाजार का वह राजपथ है, जो उद्यमी की सीमित परिधि को असीम संभावनाओं तक विस्तार देती है। और प्रश्न कि हिंदी न होती, तो भारत की अर्थव्यवस्था केवल 'भाषाई सामंत' की जागीर बनकर रह जाती। फिर देश का एक बड़ा हिस्सा, जिसे हम 'भारत' कहते हैं, वह अर्थतंत्र की मुख्यधारा के तट पर खड़ा विकास में 'सशक्त भागीदार' न होकर एक 'विवश शिकार' बनकर रह जाता।

हिंदी : भाषा का वैश्विक आयाम

जब हम इसके वैश्विक आयाम की ओर दृष्टिपात करते हैं, तो हिंदी भौगोलिक सीमाओं और मानचित्र की लकीरों का अतिक्रमण कर, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के शाश्वत मंत्र की सबसे सशक्त वाहक बनकर उभरती है। आज यह भाषा मॉरीशस और फिजी के तटों पर गिरमिटिया मजदूरों के संघर्ष की साक्षी बनने से लेकर, संयुक्त राष्ट्र के मंचों और पश्चिमी विश्वविद्यालयों के शोध-पत्रों तक, अपनी वैज्ञानिकता और सहजता का परचम लहरा रही है। यह पुरातन संस्कारों और नूतन विज्ञान की देहरी पर जलती उस 'अखंड ज्योति' के समान है, जिसके प्रकाश का उद्घोष है कि हिंदी अब एक भौगोलिक भूभाग की ध्वनि नहीं, वरन 'संपूर्ण धरा की धड़कन' है।

हिंदी भारतीय अध्यात्म के उस 'वटवृक्ष की घनी छाँव' के समान है, जिसने भौतिकवाद की धूप में झुलसते पश्चिम को पहली बार शीतलता का अनुभव कराया। यदि संस्कृत ऋचाओं का 'अनमोल बीज' थी, तो हिंदी वह 'अमृत फल' बनी, जिसके आस्वादन से विश्व ने भारतीय ज्ञान का रसास्वादन किया। हिंदी ने गूढ़ दर्शन को किसी जटिल पहली की तरह नहीं, बल्कि 'सहज लोकगीत' की तरह परोसा, जिससे कबीर की फकड़ता और मीरा के प्रेम ने पश्चिमी विद्वानों के हृदय के बंद दरवाजे खटखटाए। हिंदी ने पश्चिम को बताया कि जीवन केवल दौड़ना नहीं, बल्कि ठहरकर खुद को पाना है; इस प्रकार, हिंदी ने पूर्व की आध्यात्मिक विरासत का द्वार पूरी दुनिया के लिए खोल दिया।

निष्कर्ष : हिंदी है हम

यह सत्य है कि हिंदी का अस्तित्व और भारत का व्यक्तित्व दो पृथक सत्ताएं नहीं, अपितु एक ही आध्यात्मिक सत्य के दो मूर्त विग्रह हैं। हिंदी का होना, भारत की उस 'सनातन चेतना' का प्रवाहमान रहना है, जो शब्द को 'ध्वनि' नहीं, वरन 'ब्रह्म' मानती है। यह राष्ट्र की सामूहिक स्मृति का वह अक्षय पात्र है, जिसमें हमारे अतीत का गौरव और भविष्य का स्वप्न एक साथ सुरक्षित है। यदि भारत एक 'विराट महाकाव्य' है तो हिंदी उसका 'मूल छंद' है, जिसके बिखरते ही राष्ट्र की लय टूट जाएगी। इसलिए हिंदी भारत के लिए भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि हमारे स्वत्व का प्रमाण है। भारत हिंदी के बिना एक 'चेतना-शून्य पिंड' है, और हिंदी के साथ एक 'जागृत राष्ट्र-पुरुष'।

वेदवाङ्मयसंरक्षिका, विज्ञानस्य पथप्रदा।

अनुजाभाषासहचरिणी, हिंदी साधयति प्रगतिम्॥

भावार्थ : हिंदी वेद परंपरा को संभालते हुए आधुनिक विज्ञान का मार्ग भी दिखाती है, और अपनी अनुजा भाषाओं के साथ मिलकर विकास को सिद्ध करती है।



डिजिटल उजाले में इंसानियत की ढलती शाम

(रोशनी बढ़ती गई... और मन की खिड़कियाँ
धीमे-धीमे बंद होती चली गईं)



आलेख

अरुण शर्मा, प्रबंधक
मानव संसाधन व जनसंपर्क
विभाग, प्रधान कार्यालय

आज की दुनिया रोशनी से भरी है। पहले घरों में केवल एक-दो बल्ब जलते थे, अब हर कमरे में ऐसी रोशनी है कि अँधेरे की याद भी नहीं रहती। पर इस बढ़ती रोशनी के बीच कुछ ऐसा है जो धीरे-धीरे धुँधला हो रहा है-मनुष्य का मन, उसकी संवेदना, उसकी गहराई, उसका अपनापन। हम तकनीक की चमक में इतना आगे बढ़ गए कि यह देखना ही भूल गए कि हमारे भीतर की मनुष्यता कब पीछे छूट गई।

पहले घरों में बातें होती थीं, ठहाके गूँजते थे, छोटे-छोटे मतभेद भी हँसी में बदल जाते थे। अब घर वही हैं, पर हर कमरा एक छोटे डिजिटल द्वीप की तरह हो गया है, जहाँ लोग तो रहते हैं, पर एक-दूसरे तक पहुँचते नहीं। स्क्रीन चमकती हैं, आँखें थकती हैं, पर दिलों में खालीपन बढ़ता जा रहा है।

यह परिवर्तन अचानक नहीं आया; यह धीरे-धीरे, चुपचाप, हमारे दरवाज़ों से अंदर आया और अब हमारे जीवन का हिस्सा बन चुका है।

घर की दीवारें पहले हँसी से गूँजती थीं, आज नोटिफिकेशन की आवाज़ से

कभी घरों में थोड़ी-सी आवाज़ भी पूरे माहौल को बदल देती थी-किसी की हँसी, किसी की पुकार, किसी का मज़ाक, किसी की नाराज़गी। हर बात इंसानी थी, हर प्रतिक्रिया जीवित थी। लेकिन आज घरों में आवाज़ें तो हैं, पर वे स्क्रीन से आती हैं। लोग साथ बैठते हैं, पर बात नहीं करते; लोग एक-दूसरे को देखते हैं, पर महसूस नहीं करते;

लोग आसपास हैं, पर पास नहीं हैं।

में एक दिन एक परिचित के घर गया। बाहर से घर बेहद सुंदर, साफ-सुथरा, सुव्यवस्थित। अंदर रोशनी थी, हवा थी, शांति थी। लेकिन वह शांति किसी संतोष की नहीं थी-वह शांति खामोशी की थी, दूरी की थी, एक ऐसे सूनेपन की थी जिसे शब्दों में नहीं बांधा जा सकता।

पिता मोबाइल स्क्रीन पर लगातार घूमते वीडियो देखते हुए सोफे पर टिके थे। माँ रसोई में खड़ी होकर हाथ से सब्जी काट रही थीं, पर आँखें मोबाइल में घुसी थीं। बेटा अपने खेल में इस कदर खोया था जैसे दुनिया उसके चारों ओर सिमट गई हो और दादी चुपचाप ऊन में गांठ सुलझा रही थीं-असल में, दिल में जमा अकेलेपन की गांठें सुलझा रही थीं।

मैंने पूछा- दादी, आप ठीक हैं?

उन्होंने मुस्कुराकर कहा- सब ठीक है, बस अब लोग घर में रहकर भी घर में नहीं रहते। उनकी यह बात पूरे समाज की स्थिति का सार है। घर में रहने और घर का हिस्सा होने में कितना फर्क है-यह आज सबसे अधिक दिखता



है।

त्योहार जो दिलों में उतरते थे, आज कैमरों में कैद होकर रह गए

त्योहार हमारे समाज की आत्मा हुआ करते थे। दीपावली की रोशनी आँखों में चमक लाती थी, होली के रंग मन को रंग देते थे, रक्षाबंधन की राखी रिशतों को फिर से जोड़ देती थी। लेकिन आज त्योहारों की तुलना करना मुश्किल नहीं। अब दीपावली में दीया जलाने से पहले कैमरा जलता है। अब होली में सबसे पहले रंग नहीं, वीडियो बनता है। अब राखी में बहन का स्नेह नहीं, फोटो की फ्रेमिंग मायने रखती है।

गत वर्ष की दीपावली का एक दृश्य मन में छपा है। एक परिवार बाहर आँगन में दीये लगाने निकला। बच्चे बेहद उत्साहित थे-पर उत्साह दीया जलाने का नहीं था, रेकार्डिंग का था। माँ ने कहा- रुको, पहले सही कोण ढूँढना है। उन्होंने चार बार दीये की लाइन बदली, तीन बार कैमरा सेट किया, फिर बच्चों से बोला-हँसो.. ऐसे हँसो जैसे बहुत खुश हो।

बच्चों ने हँसी दिखाई- पर आँखों में भाव नहीं थे।

दादी पास बैठी-बैठी बोलती- पहले घर की पूजा होती थी, अब फोन की पूजा होती है। त्योहारों का उजाला अब चेहरों पर नहीं, मोबाइल स्क्रीन पर उतरने लगा है।

जन्मदिन का प्यार अब दिलों से नहीं, 'स्टेटस' से मापा जाता है

पहले जन्मदिन पर घर के दरवाजे खुलते थे। दोस्त आते थे, मिठाई खाते थे, गले मिलते थे, मजाक करते थे, और सारी दुनिया एक दिन उस व्यक्ति के चारों ओर घूमती थी। आज जन्मदिन पर दरवाजा नहीं खुलता-स्क्रीन खुलती है।

किसी के दिल की बात अब इन बातों से तय नहीं होती कि किसने फोन किया, बल्कि इस बात से तय होती है कि किसने कितनी देर में 'स्टेटस' लगाया।

हाल ही में मैंने एक लड़की को रोते देखा। मैंने पूछा-क्या हुआ?

वह बोली - मेरी सबसे करीबी सहेली ने मेरा जन्मदिन आने पर स्टेटस नहीं लगाया। मैंने पूछा - क्या उसने तुम्हें सुबह-सुबह फोन करके प्यार से शुभकामनाएँ दीं?

लड़की बोली -हाँ... पर सबको कैसे पता चलेगा कि हम दोस्त हैं?

यह बात जितनी सरल लगती है, उतनी ही दर्दभरी है। आज सच्चाई यह है कि लोग दोस्ती निभाते कम हैं, दिखाते ज्यादा हैं।

बुजुर्गों का अकेलापन सबसे बड़ा दुख बन गया है.

एक दिन पार्क में एक बूढ़े बाबा बैठे-बैठे बच्चों को खेलते देख रहे थे। उनकी आँखों में अपनापन था, पर मन में खालीपन। मैंने पूछा- बाबा, क्या सोच रहे हो?

वे बोले- पहले बच्चे हमारी जेब से टॉफी ढूँढते थे, अब हमारा मोबाइल ढूँढते हैं।

उस क्षण उनकी आँखों में जो नमी थी - वह किसी बूढ़े व्यक्ति की नहीं, पूरे समाज की नमी थी।

आज बुजुर्ग घरों में रहते हुए भी सबसे ज्यादा अकेले हो गए हैं। उनकी कहानियाँ मोबाइल की शोर के नीचे दब गई हैं। उनकी आवाज़ें रीलियों के संगीत में खो गई हैं। उनका अनुभव अब 'लंबी बात' लगने लगा है।

सफर में लोग साथ होते हैं, पर किसी की नज़र किसी से नहीं मिलती

एक बार ट्रेन में सफर कर रहा था।

सामने एक माँ अपनी छोटी बच्ची को बाहर का दृश्य दिखाने की कोशिश

कर रही थी- देखो, खेत कैसे हरे हैं, नदियाँ कैसे चमक रही हैं, बादल कैसे दौड़ रहे हैं...

पर बच्ची ने कहा- मम्मी, ये सब बाद में... पहले मेरा वीडियो देखो।

उसकी दुनिया खिड़की से बाहर नहीं, मोबाइल में थी।

मैंने बच्ची को देखा- वह उस उम्र में थी जहाँ बच्चों की आँखों में दुनिया की सच्ची चमक होती है। पर उसकी चमक बाहर से नहीं, स्क्रीन की रोशनी से निकल रही थी। यह दृश्य एक कहानी नहीं, हर गली, हर शहर, हर घर का सच है।

रिश्तों में सबसे बड़ी बीमारी-तुलना

डिजिटल दुनिया ने तुलना को एक ऐसी आग में बदल दिया है जो धीरे-धीरे घरों की शांति जला रही है।

किसी ने नया घर लिया-हम बेचैन। किसी ने विदेश की यात्रा की-हम उदास। किसी ने परिवार की तस्वीर डाली-हमारा परिवार फीका लगने लगा। किसी ने अपने बच्चे की उपलब्धि दिखा दी-हमने अपने बच्चे को उससे तौल दिया।

लोग भूल जाते हैं - किसी की सोशल मीडिया वाली दुनिया असल दुनिया नहीं होती। वह सिर्फ चुने हुए, चमकाए गए क्षण होते हैं पर हम पूरे जीवन को उन्हीं क्षणों से तौल देते हैं।

पति-पत्नी-एक ही घर में दो अलग दुनिया

आजकल ऐसा लगातार देखने में आता है-पति घर आता है, थका-मांदा, दिनभर के काम से भरा हुआ।

पत्नी उसकी ओर देखती है, दिल में ढेर सारी बातें, थोड़ा-सा स्नेह, थोड़ा-सा गुस्सा, थोड़ी-सी उम्मीदें।

वह कहती है - बैठो, थोड़ी-सी बात करते हैं।

लेकिन पति सोफ़े पर बैठते ही स्क्रीन खोल लेता है। तीन घंटे स्क्रीन चलती है, पर दो वाक्य पत्नी से नहीं निकलते। पत्नी कभी पूछती है - क्या हुआ? कहां खोए हो?



और पति कहता है- अभी नहीं...

पति-पत्नी एक ही घर में होते हैं, पर बातचीत की कमी ऐसे बढ़ती है, जैसे पानी की कमी से मिट्टी दरक जाती है।

रिश्ते आवाज़ पर चलते हैं- और आज वही आवाज़ सबसे ज्यादा गायब है।

बच्चों का बचपन स्क्रीन में कैद होने लगा है

पहले बच्चे घर से निकलते ही हवा को पकड़ने की कोशिश करते थे, पेड़ों पर चढ़ते थे, साइकिल चलाकर दौड़ लगा देते थे, घुटने छिल जाते थे, पर चेहरे पर हँसी बनी रहती थी। अब बच्चे अपने कमरे में बैठकर युद्ध खेलते हैं (मोबाइल में), पर असली मैदान से दूर होते जा रहे हैं। वे स्क्रीन पर जीतते हैं, पर ज़िंदगी के असली खेल में हार रहे हैं।

एक बार एक पिता ने अपने बेटे से कहा-

चलो थोड़ा बाहर खेलते हैं।

बेटा बोला - मैं अभी व्यस्त हूँ... मेरा खेल चल रहा है।

पिता मुस्कराकर चुप हो गया, पर उसकी आँखों में चिंता थी - बचपन का असली उजाला कहीं खोता जा रहा है।

मानवीय संवेदना-सबसे बड़ी हानि

पहले किसी के चेहरे पर मुस्कान न हो तो लोग तुरंत पूछते थे- क्या हुआ?

कुछ परेशान हो?

अब लोग किसी की चुप्पी नहीं पहचानते।

लोग किसी के आँसू नहीं पढ़ते।

लोग किसी की आवाज़ की काँप नहीं सुनते।

पर यह ज़रूर देख लेते हैं कि किसने किसका स्टेटस देखा या नहीं।

दुख अब साझा नहीं किए जाते,

पोस्ट किए जाते हैं।

खुशी अब महसूस नहीं की जाती,

दिखाई जाती है।

समाज जहाँ जा रहा है, वह दिशा रोशनी की नहीं-छाया की है

तकनीक हमें जोड़ रही है- पर मन से नहीं। लोग संपर्क में ज्यादा हैं-

पर संबंधों में कम।

लोग बातें कर रहे हैं- पर बातचीत नहीं हो रही। हम एक ऐसी दुनिया में पहुँच रहे हैं जहाँ लोग पास हैं, पर पहुँच से बाहर।

समाधान: कोई बड़ी क्रांति नहीं-बस एक छोटी-सी मानवीय हरकत

समय सभी को दो। लेकिन मन... सिर्फ़ इंसानों को।

थोड़ा-सा समय किसी की आँखों में देखने में लगे, किसी की बात सुनने में लगे, किसी की मुस्कान को समझने में लगे, किसी की थकान पकड़ने में लगे।

तकनीक सुविधा दे सकती है- पर गर्माहट नहीं। तकनीक रोशनी दे सकती है- पर उजाला नहीं। उजाला तो मानवीय दिल से निकलता है।



**हम सब मिलकर दें सम्मान
निज भाषा पर करें अभिमान
हिंदुस्तान के माथे की बिंदी
जन-जन की आत्मा बने हिंदी**

उच्च शिक्षा में हिन्दी की स्थिति



आलेख

राजन प्रभाकर

सहायक महाप्रबंधक
अंचल कार्यालय
तिरुवनंतपुरम

आमुख

वह भूमि जिस पर किसी का जन्म हुआ हो या जहाँ वह पला-बढ़ा हो, और उसके साथ व्यक्ति भावनात्मक रूप से जुड़ा हुआ हो, उसे 'मातृभूमि' कहा जाता है। यह, जन्मभूमि या अपने देश के रूप में भी जाना जाता है। मातृभूमि शब्द न केवल एक भौगोलिक स्थान को दर्शाता है, बल्कि उस स्थान के साथ जुड़ी हुई महान संस्कृति, इतिहास और परंपराओं को भी दर्शाता है। अपनी मातृभूमि की भाषा को 'मातृभाषा' कहा जाता है। मातृभाषा, वह पहली भाषा है जिसे कोई व्यक्ति बचपन में अपने परिवार या समुदाय से सीखता है और जिसे व्यक्ति स्वाभाविक रूप से बोलता और समझता है। मातृभाषा उसकी पहचान और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी होती है। जैसा कि किसी ने कहा था, 'कोई भी व्यक्ति अपनी मातृभाषा में शिक्षा पाकर, बेहतरीन ढंग से ज्ञानार्जन कर सकता है, और प्राप्त मूल्यों से बेहतरीन इन्सान बन सकता है।'

हिन्दी भाषा की उत्पत्ति व विकास

'हिन्दी' वास्तव में फारसी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है - हिन्द का या हिन्द से संबंधित। हिन्दी शब्द की उत्पत्ति सिन्धु-सिंध से हुई है। ईरानी भाषा में 'स' का उच्चारण 'ह' किया जाता था। इस प्रकार हिन्दी शब्द वास्तव में सिन्धु शब्द का प्रतिरूप है। कालांतर में हिंद शब्द संपूर्ण भारत का पर्याय बनकर उभरा। इसी 'हिन्द' से हिन्दी शब्द बना। प्रारम्भ में 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग विदेशी मुसलमानों ने किया था। इस शब्द से उनका तात्पर्य 'भारतीय भाषा' का था। आज हम जिस भाषा को हिन्दी के रूप में जानते हैं, वह आधुनिक आर्य भाषाओं में से एक है। आर्य भाषा का प्राचीनतम रूप वैदिक संस्कृत है, जो साहित्य की परिनिष्ठित भाषा थी।

संस्कृतकालीन आधारभूत बोलचाल की भाषा परिवर्तित होकर 'पाली', 'प्राकृत' व अपभ्रंश से होते हुए हिन्दी भाषा का जन्म हुआ। मध्यकाल के भक्ति आन्दोलन में हिन्दी खूब फली फूली। पूरे देश के भक्त कवियों ने

अपनी वाणी को जन-जन तक पहुंचाने के लिये हिन्दी का सहारा लिया। आगे चलकर भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में हिन्दी और हिन्दी पत्रकारिता की महती भूमिका रही। महात्मा गांधी सहित अनेक राष्ट्रीय नेता हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने लगे थे और भारत के स्वतन्त्र होने पर हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित किया गया।

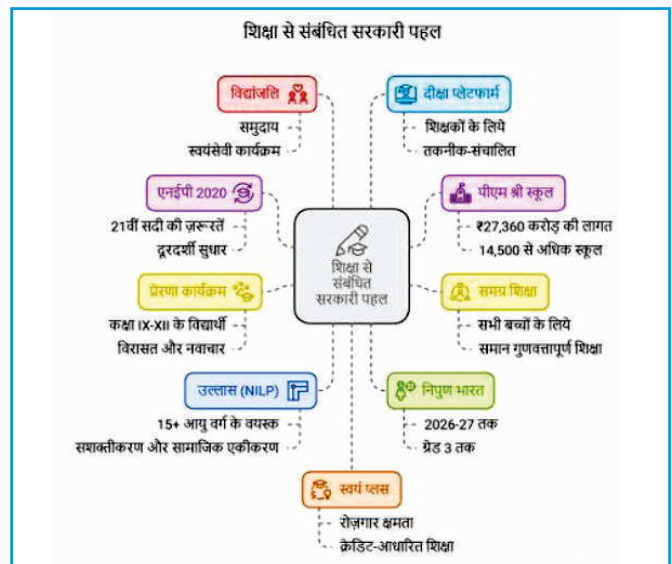
हिन्दी - संपर्क भाषा :

भिन्न-भिन्न भाषा-भाषियों के मध्य परस्पर विचार-विनिमय का माध्यम बनने वाली भाषा को संपर्क भाषा कहा जाता है। हिन्दी भारत में संपर्क भाषा का कार्य करती है और कुछ हद तक पूरे भारत में सामान्यतः सरल रूप में समझी जानेवाली भाषा है। अपने राष्ट्रीय स्वरूप में ही हिन्दी पूरे भारत की संपर्क भाषा बनी हुई है। हिन्दी विभिन्न भाषाभाषियों के बीच परस्पर सम्प्रेषण का माध्यम बनी हुई है। सम्पूर्ण भारतवर्ष में बोली और समझी जाने वाली देशभाषा हिन्दी है।

विश्व भाषा हिन्दी

प्रति वर्ष 10 जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस मनाया जाता है। विश्व में हिन्दी का विकास करने और इसे प्रचारित-प्रसारित करने के उद्देश्य से विश्व हिन्दी सम्मेलनों की शुरुआत की गई और प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन 10 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित हुआ। विश्व हिन्दी दिवस का उद्देश्य विश्व में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए जागरूकता पैदा करना, हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में पेश करना, हिन्दी के लिए वातावरण निर्मित करना, हिन्दी के प्रति अनुराग पैदा करना, हिन्दी की दशा के लिए जागरूकता पैदा करना तथा हिन्दी को विश्व भाषा के रूप में प्रस्तुत करना आदि है।

हिन्दी का एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में संवर्द्धन करने और विश्व हिन्दी सम्मेलनों के आयोजन को संस्थागत व्यवस्था प्रदान करने के उद्देश्य से



विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना का निर्णय लिया गया। विश्व हिन्दी सचिवालय मॉरीशस में स्थित है जो 11 फरवरी 2008 से कार्यरत है। विदेशों में भारत के दूतावास इस दिन को विशेष रूप से मनाते हैं। सभी सरकारी कार्यालयों में विभिन्न विषयों पर हिन्दी में व्याख्यान आदि आयोजित किए जाते हैं।

अभी विश्व के सैंकड़ों विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है और पूरी दुनिया में करोड़ों लोग हिन्दी बोलते हैं। दक्षिण प्रशान्त महासागर के मेलानेशिया में स्थित फिजी में हिन्दी को आधिकारिक भाषा का दर्जा दिया गया है। इसे फिजियन हिन्दी या फिजियन हिन्दुस्तानी भी कहते हैं। यह अवधी, भोजपुरी और अन्य बोलियों का मिलाजुला रूप है। भारतीय उपमहाद्वीप स्थित देशों के साथ-साथ कई अन्य देशों में हिन्दी बोली जाती है। त्रिनिदाद एंड टोबैगो में हिंदी का व्यापक प्रचार-प्रसार है और बहरीन में हिंदी भाषा को अदालत की भाषा के रूप में स्वीकृति मिली है।

भारत में शिक्षा और त्रिभाषा सूत्र

वर्ष 1968 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में त्रिभाषा सूत्र को अपनाया गया था। इसका उद्देश्य बहुभाषावाद को बढ़ावा देना और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करना था। वर्ष 1986 की शिक्षा नीति में भी इस सूत्र को बरकरार रखा गया था। त्रिभाषा सूत्र के अनुसार छात्रों को तीन भाषाएँ सीखनी होती हैं। इनमें से दो भाषाएँ भारतीय होनी चाहिए, जिनमें से एक क्षेत्रीय भाषा (मातृभाषा) और दूसरी हिंदी या कोई अन्य आधुनिक भारतीय भाषा हो सकती है। तीसरी भाषा संसद में प्रयोग की जानेवाली कोई भाषा या कोई अन्य आधुनिक विदेशी भाषा हो सकती है।

शिक्षा का माध्यम मातृभाषा

इसका मतलब यह है कि शिक्षण संस्थानों, जैसे विद्यालयों व महाविद्यालयों में मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करते हैं। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होने के कई फायदे हैं। इससे छात्रों को अपनी मातृभाषा में अवधारणाओं को बेहतर ढंग से समझने और सीखने का अवसर प्राप्त होता है। सीखने की प्रक्रिया को आसान करने में यह मददगार है। बच्चे अपनी मातृभाषा में खुद को अधिक सहज और सक्षम महसूस करते हैं। मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने से छात्रों का आत्मविश्वास बढ़ता है। शिक्षक और छात्र द्वारा एक ही भाषा बोलने से सीखने का माहौल सकारात्मक बनता है और शिक्षक-छात्र संवाद बेहतर होता है।

उच्च शिक्षा में हिन्दी की स्थिति

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी कई वर्षों से एक महत्वपूर्ण मुद्दा रही है। महान संस्कृतियुक्त हमारे देश में भाषा, परंपरा और शिक्षा के आपस में गहन संबंध है। उच्च शिक्षा में हिन्दी की स्थिति पर आम तौर पर ऐसा लगता है कि, जहाँ तक उच्च शिक्षा की बात है, विशेषकर विश्वविद्यालयों और शोध

संस्थानों में, हिन्दी की स्थिति चिंताजनक है। उच्च शिक्षा में हिन्दी माध्यम पर आधारित पाठ्यक्रमों की संख्या सीमित है। ज्यादातर साहित्य, भाषाविज्ञान, सामाजिक विज्ञान, इतिहास जैसे विषयों में हिन्दी में पढ़ाई होती है, लेकिन प्रबंधन, विज्ञान, सांख्यिकी, अभियांत्रिकी, चिकित्सा-पारिस्थितिकी जैसे क्षेत्रों में हिन्दी का माध्यम अत्यंत सीमित या नगण्य है।

लेकिन हमारे सामने मध्यप्रदेश सरकार की सकारात्मक पहल है कि सरकारी चिकित्सा महाविद्यालयों में एमबीबीएस की पढ़ाई हिंदी माध्यम से शुरू की है। मुक्त विश्वविद्यालय जैसे- इग्नू ने हिन्दी माध्यम से स्नातक, परास्नातक और शोध पाठ्यक्रमों की पेशकश की है, जिससे बड़े पैमाने पर लोग शैक्षणिक योग्यताएं हासिल कर रहे हैं।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में लोगों के दिल-दिमाग में यह गलतफहमी भी है कि अंग्रेजी व्यावसायिक, तकनीकी और वैज्ञानिक साहित्य का प्रमुख माध्यम है और इस कारण हिन्दी माध्यम के छात्र छात्राओं को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा में कठिनाई होती है। हमारे देश के संसाधन से योग्यताएं हासिल करने के पश्चात विदेश स्थित कंपनियों में काम करने के बारे में क्यों सोचना है?

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी माध्यम को बढ़ावा देने के प्रयास किए गए। केरल राज्य के कोट्टयम जिले के पाला (Palai) शहर स्थित सेंट थॉमस महाविद्यालय में वर्ष 1957 में हिंदी की स्नातकोत्तर कक्षाएँ शुरू की गईं। देश के अनेक प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों, जैसे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय सहित कई अन्य विश्वविद्यालयों में हिन्दी माध्यम से शिक्षण को स्थापित करने का प्रयास हुआ।

वर्ष 1975 में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन में लिए गए निर्णयों के अनुसार वर्षा में 'महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय' की स्थापना की गई जो संसद द्वारा पारित अधिनियम, 1996 (1997, क्रमांक 3) के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय है, जहाँ विभिन्न पाठ्यक्रम हिंदी माध्यम में करवाए जाते हैं।

सरकारी पहल :

अनुवाद और तकनीकी शब्दावली (वैज्ञानिक तथा पारिभाषिक शब्दावली आयोग)

हिन्दी में वैज्ञानिक और तकनीकी अवधारणाओं के लिए उपयुक्त शब्दावली (टर्मिनोलॉजी) का निर्माण एक जटिल कार्य है। हालाँकि भारत में कई संस्थाएँ और लेक्सिकॉन (lexicon) प्रयास कर रही हैं, फिर भी व्यापक स्वीकृति और उन्नत तकनीकी शब्दावली का अभाव है। भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् वैज्ञानिक-तकनीकी शब्दावली के लिए शिक्षा मंत्रालय ने सन् 1950 में वैज्ञानिक शब्दावली बोर्ड की स्थापना की। सन् 1952 में बोर्ड के तत्वाधान में शब्दावली निर्माण का कार्य प्रारंभ हुआ

और अन्ततः 1960 में केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की स्थापना हुई। यह वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (सीएसटीटी) हिन्दी और अन्य सभी भारतीय भाषाओं के वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों को परिभाषित एवं नए शब्दों का विकास करता है। सन् 1962 में डॉ. डी एस कोठारी की अध्यक्षता में वैज्ञानिक तथा पारिभाषिक शब्दावली आयोग की स्थापना की गई। इस प्रकार विभिन्न अवसरों पर तैयार शब्दावली को 'पारिभाषिक शब्द संग्रह' शीर्षक से प्रकाशित किया गया, जिसका उद्देश्य एक ओर वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के समन्वय कार्य के लिए आधार प्रदान करना था तथा दूसरी ओर अन्तरिम अवधि में लेखकों को नई संकल्पनाओं के लिए सर्वसम्मत पारिभाषिक शब्द प्रदान करना था।

उच्च शिक्षा में हिन्दी की स्थिति : कमियों को कैसे दूर करें

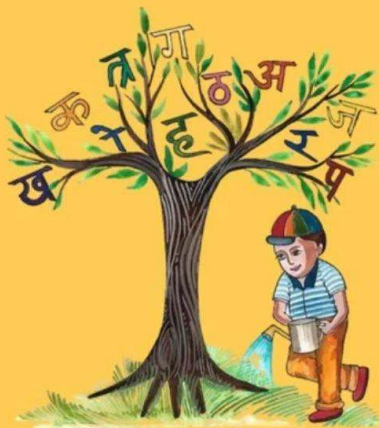
- विज्ञान, तकनीकी और सामाजिक विज्ञान के क्षेत्रों में हिन्दी में पर्याप्त और समकालीन पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराना है। पुस्तकें, शोधपत्र, ऑनलाइन संसाधन आदि हिन्दी में भी उपलब्ध कराना है।
- सभी विश्वविद्यालयों और संकायों को हिन्दी माध्यम से पढ़ाई को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। रुचिकर पाठ्यक्रमों का अभाव, प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी, सुविधाओं की अपर्याप्तता आदि बाधाओं को दूर करने की दिशा में कार्य करना चाहिए।
- वर्तमान में डिजिटल शिक्षा के माध्यम से हिन्दी माध्यम को सशक्त बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। यूट्यूब चैनल आदि के माध्यम से कुछ सरकारी और निजी संस्थान हिन्दी में व्याख्यान, वीडियो पाठ, और शिक्षण सामग्री उपलब्ध करा रहे हैं।
- हिन्दी में शोधपत्रों, जर्नलों और किताबों की संख्या बढ़ाने की

आवश्यकता है। हिन्दी में सामाजिक-वैज्ञानिक और साहित्य-संवादी शोध प्रस्तुत करने वाले विद्वानों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

- मशीन अनुवाद, स्वचालित टंकण / उच्चारण, पाठ-पठन उपकरण और स्मार्टफोन-आधारित शिक्षण ऐप्स को हिन्दी में विकसित करना और प्रचारित करना चाहिए।
- विकीपीडिया, ओपनस्ट्रीट मैप और अन्य सहयोगी प्लेटफॉर्म जैसे हिन्दी ज्ञान-शेयरिंग समुदायों के माध्यम से हिन्दी में योगदान बढ़ाया जा सकता है।
- कृत्रिम बुद्धि (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) : भाषा मॉडल, चैटबोट्स और एनएलपी आधारित टूल्स के माध्यम से हिन्दी शिक्षण को और सुलभ और प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

निष्कर्ष

हिन्दी को उच्च शिक्षा की भाषा के रूप में संरक्षित और समृद्ध करने में सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। देखा जाए तो उच्च शिक्षा में हिन्दी की स्थिति उतनी संतोषजनक नहीं है। इस दिशा में बहुत दूरी तय करना बाकी है। कुछ क्षेत्रों में मान्यता और बढ़ती सहभागिता तो है, लेकिन अधिकांशतः किसी अन्य भाषा का प्रभुत्व बना हुआ है। हिन्दी को उच्च शिक्षा में सशक्त करने के लिए सबसे पहले हमें अपनी मानसिकता में परिवर्तन करना चाहिए। इस दिशा में बहुआयामी रणनीति रूपायित की जाने की आवश्यकता है। नीति-निर्माण के साथ-साथ संसाधन की उपलब्धता, तकनीकी समर्थन और शोध को प्रोत्साहित करना चाहिए। यदि हम इन दिशाओं में सार्थक प्रयास करें, तो न केवल भारतीय भाषा-सांस्कृतिक विविधता सुदृढ़ होगी, बल्कि शिक्षा अधिक समावेशी और सार्वभौमिक भी बनेगी।



हिन्दी दुनिया की एकमात्र ऐसी भाषा है,
जो 'अ' अनपढ़ से शुरू होकर
'ज' ज्ञानी पर समाप्त होती है।

अमृत काल में हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं की परस्पर सहभागिता



आलेख

साधिका सेठी
अधिकारी,
क्षेत्रीय कार्यालय पानीपत

आज़ादी का अमृत महोत्सव भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्षों का भव्य उत्सव था। यह महत्वपूर्ण मील का पत्थर केवल अतीत का स्मरण नहीं, बल्कि राष्ट्र की विकास यात्रा और भविष्य की आकांक्षाओं का भी एक प्रतिबिंब था। इस उत्सव के प्रमुख पहलुओं में से एक था, भारत की समृद्ध भाषाई विविधता पर जोर देना, विशेष रूप से हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं पर। यह आज़ादी के अमृत महोत्सव के संदर्भ में इन भाषाओं की भूमिका, ऐतिहासिक महत्व, सांस्कृतिक प्रभाव और भविष्य की संभावनाओं को भी उजागर करता है।

भारत ने वर्ष 2023 को आज़ादी की 75वीं वर्षगांठ को अमृतकाल के रूप में मनाया था। माननीय प्रधानमंत्री ने 2047 तक के समय को अमृतकाल की संज्ञा दी है जिस दौरान देश के सामाजिक, आर्थिक, शिक्षा, अंतरिक्ष, रक्षा, रेल, सड़क, राजमार्ग संपर्क, खाद्यान्न, मेक इन इंडिया के अंतर्गत कई पहलों आदि में आत्मनिर्भरता, युवाओं के लिए रोजगार अवसरों आदि सहित सर्वांगीण विकास यात्रा पर चलते हुए 'विकसित भारत' के लक्ष्यों को साकार करने का विज्ञान है। इन्हीं परिवर्तनकारी पहलों में से एक है 'उच्चतर शिक्षा'।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने एनईपी-2020 में कई पहलों की हैं। एनईपी-2020 का उद्देश्य युवाओं को पारंपरिक तौर पर पाठशालाओं में तथा दूर-दराज में बसे शिक्षार्थियों को पारंपरिक भारतीय संस्कृति एवं उसके मूल्यों को अक्षुण्ण रखते हुए भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए ऑनलाइन माध्यम से उच्चतर शिक्षा एवं रोजगारपरक कौशल प्रदान करना है ताकि वे अमृतकाल में देश का नेतृत्व कर सकें।

भारतीय भाषाओं का ऐतिहासिक महत्व

भारत विविध भाषाओं की भूमि है, जहां प्रत्येक क्षेत्र अपनी अनूठी भाषाई विरासत का दावा करता है। हिंदी, जो भारत की आधिकारिक भाषाओं में से एक है, राष्ट्र के इतिहास में एक विशेष स्थान रखती है। इसने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान देश के लोगों को एकजुट करने में अहम भूमिका निभाई और देश के विभिन्न प्रांतों में स्वतंत्रता सेनानियों के बीच महत्वपूर्ण संचार के माध्यम के रूप में कार्य किया। नवजागरण काल, देशभक्ति गीतों, भाषणों और साहित्य में हिंदी के उपयोग ने औपनिवेशिक शासन के खिलाफ जनता को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हिंदी के अलावा, अन्य क्षेत्रीय भाषाओं जैसे बंगाली, तमिल, मराठी, गुजराती और तेलुगु ने भी स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। रवींद्रनाथ टैगोर, सुब्रमण्यम भारती और बाल गंगाधर तिलक जैसे नेताओं ने अपनी-अपनी भाषाओं का उपयोग करके लोगों में राष्ट्रवाद की भावना को प्रेरित और जागृत किया। भारत की भाषाई विविधता एक बाधा नहीं थी, बल्कि यह उसकी एक ताकत थी जिसने देश को स्वतंत्रता दिलाने में सभी को एकजुट किया।

भारतीय भाषाओं का सांस्कृतिक प्रभाव

किसी भी राष्ट्र की सभ्यता और संस्कृति के विकास में उसकी भाषा का विशेष योगदान होता है, क्योंकि भाषा और संस्कृति का आपस में अटूट संबंध होता है। अतः कहा जा सकता है कि भाषा ही संस्कृति की संवाहक है। प्रत्येक भाषा का एक इतिहास होता है जो देश विशेष एवं उसके नागरिकों की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक पृष्ठभूमि से जुड़ा होता है। हालांकि भारत के संविधान में 22 भारतीय भाषाओं को सम्मिलित किया गया है, किंतु देश के अधिकतर भाग में बोली अथवा भाषा, साहित्य रचना एवं लेखन आदि में हिंदी का प्रयोग प्रचुर रूप में किया जाता है। भारतीय भाषाओं का इतिहास, भूमिका एवं प्रभाव भी इसी प्रकार रहा है।

भारत की सांस्कृतिक समृद्धि उसकी भाषाओं के साथ गहराई से जुड़ी हुई है। प्रत्येक भाषा अपनी अनूठी सांस्कृतिक पहचान की द्योतक है, जो उसके साहित्य, संगीत, नृत्य और परंपराओं में परिलक्षित होती है। उदाहरण के लिए, हिंदी में प्राचीन महाकाव्यों जैसे रामायण और महाभारत से लेकर आधुनिक उपन्यासों और कविताओं तक का विशाल साहित्यिक संग्रह है। हिंदी फिल्म उद्योग, जिसे लोकप्रिय रूप से बॉलीवुड के नाम से जाना जाता है, ने भी भाषा को लोकप्रिय बनाने और भारतीय संस्कृति को वैश्विक स्तर पर फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इसी तरह, अन्य भारतीय भाषाओं की अपनी समृद्ध साहित्यिक और सांस्कृतिक परंपराएं हैं। रवींद्रनाथ टैगोर और बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय जैसे महान साहित्यकारों के साथ बंगाली साहित्य ने भारतीय और विश्व

साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। प्राचीन संगम कविता और आधुनिक कृतियों के साथ तमिल साहित्य भारतीय संस्कृति की गहराई और विविधता को दर्शाता है। आज़ादी के अमृत महोत्सव ने इस सांस्कृतिक विविधता को उजागर करने का एक अवसर प्रदान किया।

शिक्षा में भारतीय भाषाओं की भूमिका

शिक्षा एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जहां भारतीय भाषाओं के महत्व को तेजी से पहचाना जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने पर जोर देती है। इस नीति का उद्देश्य शिक्षा को अधिक समावेशी और सुलभ बनाना है, यह सुनिश्चित करना है कि बच्चे अपनी ही मातृभाषा में शिक्षा ग्रहण कर सकें और अच्छी तरह समझ पाएं।

आजादी के अमृत महोत्सव के दौरान, शिक्षा में भारतीय भाषाओं के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न पहल शुरू की गई हैं। इन्हीं में से एक है 'अस्मिता (ASMITA) जिसका उद्देश्य विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के नेतृत्व में भारतीय भाषा समिति के सहयोग से स्नातक पाठ्यक्रमों के लिए कला, विज्ञान और वाणिज्य के विषयों को कवर करते हुए 22 भारतीय भाषाओं में 2200 पुस्तकों का मौलिक लेखन कर उन्हें उपलब्ध कराना है। शिक्षा प्रणाली में भाषाई विविधता को संरक्षित और बढ़ावा देने में ऐसे प्रयास महत्वपूर्ण हैं।

'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' संकल्प के तहत विद्यार्थियों को अपनी मातृभाषा और भारतीय भाषाओं से परिचित कराने और उन्हें बढ़ावा देने के लिए 'भाषा संगम' कार्यक्रम शुरू किया गया है। इसलिए, यह समय भारतीय साहित्य, धर्म, दर्शन और विज्ञान का अमृतकाल कहा जाएगा, जिसने भारतीय भाषाओं को कई नए आयाम दिए हैं।

प्रौद्योगिकी प्रगति और भारतीय भाषाएं

डिजिटल युग ने भारतीय भाषाओं के प्रचार और संरक्षण के लिए नए रास्ते खोले हैं। प्रौद्योगिकी के आगमन के साथ, अब कई भाषाओं में डिजिटल कन्टेंट बनाना संभव हो गया है, जिससे सूचना और ज्ञान को व्यापक शिक्षार्थियों तक पहुंचाना आसान हो गया है। आजादी के अमृत महोत्सव



के दौरान, भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए कई डिजिटल पहलें शुरू की गई हैं। उदाहरण के लिए, भाषा सीखने वाले ऐप्स और ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के विकास से लोगों के लिए विभिन्न भारतीय भाषाओं को सीखना और समझना आसान हो गया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और डिजिटल पुस्तकालयों ने भी क्षेत्रीय भाषाओं और साहित्य को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भाषा संरक्षण और प्रचार में प्रौद्योगिकी का उपयोग आजादी के अमृत काल के दौरान एक प्रमुख प्राथमिकता वाला क्षेत्र रहेगा।

चुनौतियों और भविष्य की संभावनाएं

भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने के प्रयासों के बावजूद, इस राह में कई चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। शिक्षा और पेशेवर क्षेत्रों में अंग्रेजी का प्रभुत्व अक्सर क्षेत्रीय भाषाओं को पीछे धकेल देता है। भारतीय भाषाओं के शिक्षण और अधिगम में सहायता प्रदान करने के लिए अधिक संसाधनों और बुनियादी ढांचे की भी आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, वैश्वीकरण और शहरीकरण की बढ़ती गति भाषाई विविधता के संरक्षण के लिए खतरा पैदा कर रही है।

फिर भी, भारतीय भाषाओं के संदर्भ में, भावी संभावनाएं आशाजनक हैं। आजादी के अमृत महोत्सव ने भाषाई विविधता के महत्व पर विशेष ध्यान केंद्रित किया। सरकारी पहलें, प्रौद्योगिकी प्रगति के साथ मिलकर, भारतीय भाषाओं के लिए एक उज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं। मातृभाषा शिक्षा पर जोर, डिजिटल सामग्री का निर्माण और क्षेत्रीय साहित्य और संस्कृति को बढ़ावा देना सही दिशा में उठाए गए कदम हैं।

निष्कर्ष

आजादी का अमृत महोत्सव केवल भारत की स्वतंत्रता का उत्सव नहीं है, बल्कि यह समृद्ध भाषाई और सांस्कृतिक विरासत के प्रति भी श्रद्धांजलि है। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं ने राष्ट्र और संस्कृति एवं मूल्यों को एक पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और उम्मीद है कि ये भविष्य में भी ऐसा करती रहेंगी। हमारे लिए हिंदी के राजभाषा बनने की 75वीं वर्षगांठ का उत्सव इस आलोक में भी महत्वपूर्ण है कि हम भारत की भाषाई विविधता को अक्षुण्ण रखें और इसे निरंतर प्रोत्साहित करें ताकि यह राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में अहम योगदान दे सके। ऐसा करके, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हमारी भाषाओं की विरासत आने वाली पीढ़ियों के लिए परिरक्षित रहेगी।

बदलते दौर में बैंकिंग प्रणाली: "जेन ज़ी" की अपेक्षाएं और नवाचार की आवश्यकता



आलेख

आलोक पाठक,
वरिष्ठ प्रबंधक,
अध्ययन व विकास केंद्र, रांची

बैंकिंग जगत आजकल उस बेचारे स्कूल शिक्षक की तरह लगने लगा है जो 90 के दशक वाले बच्चों को पढ़ाने का आदी था—जहाँ बच्चे "सर, टॉयलेट?" पूछते हुए भी डरते थे—और अचानक 2025 में उसे "जेन ज़ी" नामक प्रजाति मिली है, जो आत्मविश्वास में इतनी आगे है कि जब तक क्लास में वाई-फाई नहीं चलता, उनका दिमाग बूट ही नहीं होता। इन बच्चों को आप करेंसी नोट दिखाएँ तो वे पूछते हैं—"सर, ये स्कैन कहाँ करना है?" और डिजिटल वॉलेट पर एक छोटा-सा कैशबैक दे दीजिए, तो वे आपके बैंक को अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर ऐसी पब्लिसिटी दें जैसे आपने उनकी कार की ईएमआई माफ़ कर दी हो।

जेन ज़ी बैंकिंग से क्या चाहती है? यह सवाल उतना ही भारी है जितना शादी में घर वालों से पूछना कि "सब्ज़ी में नमक ठीक है?" हर कोई अलग राय देगा। कोई कहेगा-"बिलकुल ठीक!", कोई बोलेगा-"थोड़ा कम है!", और तीसरा कहेगा-"मेरे टेस्ट का नहीं है।" ठीक ऐसा ही जेन ज़ी का बैंकिंग अनुभव है—हर एक की उम्मीदें अलग, तेज़, रंगीन, क्रिएटिव और अक्सर बैंक की नीतियों से तीन कदम आगे।

बैंकिंग दुनिया जहाँ अभी भी कमरे और तिजोरी को "स्ट्रॉन्ग रूम" कहकर खुद को सुरक्षित समझने में गर्व महसूस करती है, वहीं जेन ज़ी को असली सुरक्षा "स्ट्रॉन्ग ऐप" में दिखती है—ऐप ऐसा, जो खुले भी बिजली की रफ़्तार से और चले भी बिना हॉफे। उन्हें यह परवाह नहीं कि बैंक की शाखा किस सड़क पर है या मैनेजर की टेबल पर कौन-सा शोपीस रखा है; उनकी पूरी दुनिया उस क्षण में सिमट जाती है जब वे ऐप खोलते हैं और उम्मीद करते हैं कि स्क्रीन बिना किसी ड्रामा के तुरंत जाग जाए। जेन ज़ी का भरोसा इंटरफ़ेस की स्मूदनेस, इंस्टेंट लोडिंग और बग-फ्री अनुभव में है।

पहले बैंकों में लाइन लगती थी। लोगों को ऐसा लगता था कि जीवन में अगर कहीं शांति मिल सकती है, तो बैंक की लाइन में ही मिलेगी, क्योंकि

वहाँ हर आदमी एक ही भाव में, एक ही लक्ष्य से खड़ा होता था—"किसी भी तरह यह लाइन आगे बढ़े।" लेकिन जेन ज़ी के लिए लाइन में लगना जीवन का सबसे बड़ा अपमान है। वे बैंक के बाहर लगाए गए उस बोर्ड "Queue Starts Here" को देखकर भी दुखी हो जाते हैं, मानो यह लाइन नहीं, बल्कि पिछली सदी की किसी अवशेष प्रथा की निशानी है।

आज के युवा के लिए, बैंक खाते में ₹1,000 की कम राशि होने से ज़्यादा ज़रूरी है कि बैंक ऐप में डार्क मोड जैसी सुविधा हो। डार्क मोड न हो तो उन्हें लगता है कि बैंकिंग अभी भी प्राचीन काल में फँसी हुई है—जैसे खिड़की पर तौलिया लटकाकर ग्राहकों को टोकन बाँटते थे और अगर बैंक ऐप का पासवर्ड बार-बार बदलने का रिमाइंडर दे तो जेन ज़ी का क्रोध वैसे ही उभर आता है जैसे किसी ऑनलाइन गेम में हारने पर आता है—"फिर बदलूँ? मतलब आपको मुझ पर भरोसा ही नहीं है?"

जेन ज़ी को बैंकिंग में स्पीड चाहिए—और सिर्फ स्पीड ही नहीं—वो कहते हैं, स्पीड भी ऐसी हो कि पेमेंट भेजते ही दूसरी तरफ़ का फोन वाइब्रेट होने लगे। अगर भुगतान में दो सेकंड भी लग गए, तो जेन ज़ी की दुनिया हिल जाती है। वे सोचने लगते हैं कि इंटरनेट साथ छोड़ रहा है, या बैंक स्टाफ़ को नींद आ गई है, या किसी सर्वर रूम से कोई चाय लेने निकल गया है। यह पीढ़ी जीवन में इतनी तेज़ चलती है कि अगर आप उनके सामने UPI में "Processing..." लिखकर दो सेकंड दिखा दीजिए, तो वे समझते हैं कि उनका अकाउंट 'हैक' हो गया है।



बैंकिंग प्रणाली को अब इस नई मानसिकता के अनुसार बदलना ही पड़ेगा। अब वो ज़माना नहीं रहा जब बैंक ग्राहक से फॉर्म भरवाते-भरवाते थक जाते थे। जेन ज़ी के लिए फॉर्म भरना ऐसा काम है, जैसे किसी को किसी पहाड़ी पर पत्थर ढोने के लिए कह दिया गया हो। अगर उन्हें एक से अधिक बार "Name" लिखना पड़े, तो वे मान लेते हैं कि सिस्टम का डिज़ाइनर किसी दूसरे ग्रह से आया है।

जेन ज़ी को बैंक से सिर्फ सेवा नहीं चाहिए—उन्हें अनुभव चाहिए और वह भी ऐसा अनुभव जो उनके फ़ोन के कैमरे से लेकर इमोजी के चुनाव तक को प्रभावित कर दे। अगर बैंक ऐप में किसी ट्रॉज़ेक्शन के बाद एक प्यारा-

सा एनिमेशन आता है, तो वे उसे टेक्नोलॉजी की उपलब्धि नहीं, बल्कि मानसिक शांति का स्रोत मानते हैं। आप सोचिए—पहले लोग पासबुक अपडेट कराने पर संतोष महसूस करते थे, अब जेन ज़ी स्क्रीन पर उछलते सिक्कों या एनिमेटेड स्माइली देखकर खुश हो जाते हैं।

पर्सनलाइजेशन भी जेन ज़ी की बैंकिंग अपेक्षाओं में सबसे ऊपर है। अगर बैंक ऐप उन्हें "Good Morning" या "You're doing great financially!" जैसी लाइनें दिखा दे, तो वे इसे बैंक का प्यार समझते हैं। भले ही खाते में बैलेंस 423 रुपये 19 पैसे ही क्यों न हो—इस संदेश से उन्हें लगता है कि दुनिया अभी भी उम्मीद से भरपूर है। बैंक मैनेजर के लिए यह महज़ एक ऑटो-जेनरेटेड लाइन है, लेकिन जेन ज़ी के लिए यह भावनात्मक सपोर्ट है।

जेन ज़ी को कस्टमर सपोर्ट भी इंस्टाग्राम DM जैसी स्पीड में चाहिए। अगर वे कस्टमर केयर पर कॉल करें और "आपका कॉल हमारे लिए महत्वपूर्ण है..." सुन जाएँ, तो उन्हें यह सबसे झूठी लाइन लगती है। वे सोचते हैं—अगर मेरा कॉल इतना ही महत्वपूर्ण है तो आप मेरी बातें तुरंत क्यों नहीं सुनते?

जेन ज़ी के लिए सुरक्षा भी ज़रूरी है, पर उनका धैर्य सीमित है। अगर ऐप उन्हें आधे घंटे में तीन बार OTP भेजे—एक बार लॉगिन के लिए, एक बार बैलेंस देखने के लिए और एक बार पासवर्ड बदलने के लिए—तो वे परेशान हो जाते हैं। वे सोचते हैं कि यह बैंक है या कोई शक करने वाली आंटी, जो हर पल पूछती रहती है—"पक्का? सच में? सच-सच बताओ!"

बैंकिंग में नवाचार की ज़रूरत इसलिए भी है क्योंकि जेन ज़ी का वित्तीय व्यवहार थोड़ा विचित्र है। उनके लिए निवेश की परिभाषा है—कहाँ कैशबैक ज़्यादा मिलता है। वे कहते हैं—"FD? ओह प्लीज़... हमें वो प्रोडक्ट चाहिए जिसमें एक म्यूजिक ऐप का प्रीमियम फ्री मिल जाए।" बैंक चाहे तो महंगाई दर, ब्याज दर और वैश्विक अर्थव्यवस्था की कहानी सुना ले—पर अगर ऑफर में 15 रुपये वाला कूपन भी जोड़ दें, तो जेन ज़ी तुरंत अकाउंट खोल देती है।

जेन ज़ी बैंकिंग के हर क्षेत्र में क्रिएटिव आइडिया चाहती है। वे चाहते हैं कि बैंक के नोटिफिकेशन भी फनी हों। "Your balance is low" के बजाय अगर नोटिफिकेशन आए—"बॉस, अब खर्चा थोड़ा संभालकर"—तो वे मानते हैं कि बैंक ने उन्हें व्यक्तिगत तौर पर समझा है। आप देखिए, यह पीढ़ी भावनात्मक रूप से संवेदनशील है, पर आर्थिक रूप से प्रयोगात्मक। बैंक को यही मिश्रण संभालना है।

नवाचार की आवश्यकता इसलिए भी बढ़ गई है क्योंकि जेन ज़ी डिजिटल दुनिया को अपने डीएनए की तरह मानती है। उनके लिए इंटरनेट केवल

सुविधा नहीं—पूरा जीवन है। अगर बैंक ऐप में कोई सर्वर डाउन हो जाए, तो जेन ज़ी उस बैंक को मानसिक रूप से पिछड़ा हुआ घोषित कर देती है, ठीक उसी तरह जैसे वे किसी वेबसाइट को "स्कैम" कह देते हैं अगर वह 0.3 सेकंड अधिक लोड ले ले।

और अब आती है बात बैंक शाखाओं की। जेन ज़ी शाखा में तभी पहुँचती है, जब सारे डिजिटल उपाय फेल हो जाएँ और वह भी उस अवस्था में पहुँचकर जैसे कोई इंसान जंगल में भटककर थक गया हो और अंत में पानी की तलाश में किसी गाँव पहुँच गया हो। शाखा पहुँचकर वे उम्मीद करते हैं कि स्टाफ उनके सामने लैपटॉप से जादू कर देगा। उधर शाखा में बैठा कर्मचारी सोचता है—"इतना भी क्या था जो ऐप से नहीं हो पाया?" दोनों की नज़रें मिलती हैं—और यह मुलाकात दो पीढ़ियों के बीच की सांस्कृतिक दूरी की झलक देती है।

सच तो यह है कि बैंकिंग उद्योग अब विकल्पों के दौर में नहीं—बल्कि अनिवार्यता के दबाव में नवाचार कर रहा है। ग्राहक पहले बैंक बदलते थे—अब ऐप बदलते हैं और ऐप बदलने में उतना ही समय लगता है जितना एक जेन ज़ी ग्राहक को सेल्फी एडिट करने में लगता है।

अगर बैंक नहीं बदले, तो ग्राहक बदल देंगे और जेन ज़ी ग्राहक बदलने में हिचकते नहीं। यह पीढ़ी लंबी योजनाओं से ज़्यादा त्वरित सुविधा चाहती है। चाहे पेमेंट हो, निवेश हो, या लोन—उन्हें सब कुछ "अब", "अभी", "यहीं" चाहिए। बैंक अगर कहे—"48 घंटे का समय दें"—तो जेन ज़ी सोचती है कि बैंक शायद समय का हिसाब सौर मंडल के किसी दूसरे ग्रह से लगा रहा है।

इसलिए बैंकिंग का भविष्य वही है जो जेन ज़ी की उम्मीदों में समाहित है—स्मार्ट, तेज़, सुरक्षित, सहज, और थोड़ी-सी भावनात्मक समझ वाला। ऐसा बैंकिंग अनुभव जहाँ ग्राहक को लगे कि वित्तीय लेन-देन कोई औपचारिक दायित्व नहीं, बल्कि एक आधुनिक, सरल और डिजिटल-फ्रेंडली प्रक्रिया है। जहाँ तकनीक ग्राहक को डराए नहीं, बल्कि मदद करे; जहाँ ऐप ग्राहक के साथ तालमेल बैठाकर चले; और जहाँ बैंक यह समझ ले कि नया दौर सिर्फ सेवाओं का नहीं—अनुभवों का है।

अंत में कहा जा सकता है कि बैंकिंग प्रणाली को अब भीम ऐप की तेजी भी चाहिए, डिजिटल भुगतान की विश्वसनीयता भी, और साथ ही थोड़ा-सा हास्य भी—क्योंकि जेन ज़ी केवल ग्राहक नहीं, बल्कि टेक्नोलॉजी-फ्रेंडली, इमोशन-सेंसिटिव और त्वरित-संतुष्टि वाले मानव हैं। बैंक अगर इनकी धड़कन पकड़ ले, तो उनके पास सिर्फ ग्राहक नहीं—लॉयल ब्रांड एंबेसडर भी होंगे, जो रात के दो बजे भी किसी UPI ट्रांज़ैक्शन की सफलता पर इंस्टाग्राम स्टोरी लगा देते हैं—मेरा बैंक, मेरी स्पीड।

ईज 8.0 : भारतीय बैंकिंग में उत्कृष्टता की नई दिशा



आलेख

डी बालकृष्ण
वरिष्ठ प्रबंधक,
अंचल कार्यालय, भुवनेश्वर

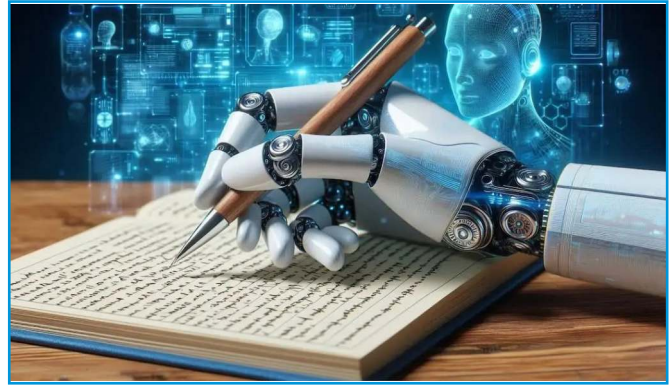
भारत का सार्वजनिक क्षेत्रीय बैंकिंग तंत्र देश की आर्थिक प्रगति की रीढ़ है। बदलते आर्थिक परिदृश्य, तीव्र तकनीकी विकास और ग्राहकों की बढ़ती अपेक्षाओं के बीच बैंकिंग व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, दक्ष और ग्राहक-केंद्रित बनाना समय की आवश्यकता बन गया है। इसी उद्देश्य से वित्त मंत्रालय, भारत सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्रीय बैंकों के लिए ईज (E.A.S.E – Enhanced Access and Service Excellence / उन्नत पहुँच और सेवा उत्कृष्टता) नामक सुधार कार्यक्रम प्रारंभ किया। यह पहल अब अपने आठवें संस्करण — ईज 8.0 — के रूप में विकसित हो चुकी है। इसके साथ ही पी.एस.बी. मंथन वह महत्वपूर्ण मंच बन गया है जहाँ सभी सार्वजनिक क्षेत्रीय बैंक एक साथ आकर अपने अनुभव, उपलब्धियाँ और नवाचार साझा करते हैं तथा भविष्य की दिशा निर्धारित करते हैं।

ईज कार्यक्रम की शुरुआत वर्ष 2018 में वित्त मंत्रालय और भारतीय बैंक संघ (आई.बी.ए.) के सहयोग से हुई थी। इसका उद्देश्य था — सार्वजनिक क्षेत्रीय बैंकों को ग्राहक सेवा, डिजिटल दक्षता और परिचालन उत्कृष्टता के क्षेत्र में विश्वस्तरीय मानकों तक पहुँचाना। इस कार्यक्रम ने बैंकिंग के अनेक आयामों — जैसे ग्राहक सुविधा, डिजिटल बैंकिंग, जोखिम प्रबंधन, मानव संसाधन विकास और शासन व्यवस्था — में व्यापक सुधार की दिशा प्रशस्त की। पी.एस.बी. मंथन इस सुधार यात्रा का जीवंत प्रतीक है। यह एक वार्षिक आयोजन है, जहाँ सार्वजनिक क्षेत्रीय बैंकों के अध्यक्ष, वरिष्ठ अधिकारी और वित्त मंत्रालय के प्रतिनिधि मिलकर बैंकिंग प्रणाली की उपलब्धियों, चुनौतियों और आगामी रणनीति पर चर्चा करते हैं। यह केवल विचार-विमर्श का मंच नहीं, बल्कि सहभागी नवाचार और साझा दृष्टिकोण का माध्यम है, जो पूरे बैंकिंग तंत्र को नई दिशा प्रदान करता है।

ईज 8.0 का मूल मंत्र है — "टेकसक्षम बैंकिंग के माध्यम से ग्राहक सेवा में उत्कृष्टता।" इस संस्करण में ग्राहक अनुभव सुधार को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। बैंकिंग सेवाओं को अधिक सरल, त्वरित और ग्राहक-अनुकूल बनाने के लिए अधिकांश बैंकों ने ऑनलाइन खाता खोलने, मोबाइल ऐप पर चैटबॉट सहायता और त्वरित लोन ट्रैकिंग जैसी सुविधाएँ प्रारंभ की हैं।

उदाहरणस्वरूप, केनरा बैंक का "केनरा ए1 चैटबॉट और बैंक ऑफ बड़ौदा का "बीओबी वर्ल्ड अस्सीस्टेंट ग्राहकों को 24x7 सेवा उपलब्ध कराते हैं। ईज 8.0 के अंतर्गत बैंकिंग प्रणाली को पूर्णतः डिजिटल और पारदर्शी बनाया जा रहा है। ऋण स्वीकृति और वितरण प्रक्रिया में अब ऑनलाइन ट्रैकिंग सिस्टम लागू हैं, जिससे ग्राहक अपने आवेदन की स्थिति वास्तविक समय में देख सकते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और आंकड़ा विश्लेषण का उपयोग जोखिम प्रबंधन, धोखाधड़ी रोकथाम और ग्राहक व्यवहार अध्ययन में किया जा रहा है, जिससे बैंक निर्णय लेने में अधिक सटीक और सक्रिय बन रहे हैं।

ग्रामीण और समावेशी बैंकिंग को भी इस कार्यक्रम में विशेष महत्व दिया गया है। बैंक मित्र (बीसी) मॉडल और माइक्रो एटीएम के माध्यम से डिजिटल सेवाएँ अब गाँवों तक पहुँच रही हैं। वित्तीय साक्षरता केंद्र ग्रामीण नागरिकों को डिजिटल बैंकिंग के प्रति शिक्षित और आत्मनिर्भर बना रहे हैं। ईज 8.0 ने साइबर सुरक्षा को भी सर्वोच्च प्राथमिकता दी है।



बैंकों में मल्टी-फैक्टर ऑथेंटिकेशन, ओटीपी-आधारित सुरक्षा और नियमित साइबर ऑडिट की व्यवस्था लागू की गई है। इससे ग्राहक डेटा की सुरक्षा और सिस्टम की विश्वसनीयता बढ़ी है। साथ ही, सतत विकास और हरित बैंकिंग के क्षेत्र में भी बैंकों ने उल्लेखनीय कदम उठाए हैं। अधिकांश शाखाओं में सौर ऊर्जा प्रणाली लागू की जा रही है और "पेपरलेस बैंकिंग" को बढ़ावा देकर पर्यावरण संरक्षण में योगदान दिया जा रहा है।

मानव संसाधन विकास भी ईज सुधारों का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। कर्मचारियों को नई तकनीक और डिजिटल प्रक्रियाओं के अनुरूप प्रशिक्षित किया जा रहा है। "केनरा गुरुकुल" और "बॉब एकेडमी" जैसे ऑनलाइन प्रशिक्षण मंचों के माध्यम से कर्मचारियों की दक्षता और ग्राहक

सेवा क्षमता को सुदृढ़ किया जा रहा है। इसके साथ ही, प्रदर्शन आधारित मूल्यांकन प्रणाली के माध्यम से उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। फिनटेक कंपनियों के साथ साझेदारी ने बैंकों को नई तकनीकी शक्ति प्रदान की है। डिजिटल भुगतान, त्वरित ऋण प्लेटफॉर्म और रूपाई, यूपीआई, भीम ऐप जैसी सेवाएँ भारतीय बैंकिंग नवाचार का उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

ग्राहक शिकायत निवारण को भी तकनीक-संचालित बनाकर पारदर्शी और समयबद्ध बनाया गया है। ऑनलाइन शिकायत पोर्टल, मोबाइल एप्लिकेशन और साप्ताहिक समीक्षा तंत्र के माध्यम से शिकायतों का त्वरित समाधान सुनिश्चित किया जा रहा है।

ईज 8.0 का प्रमुख उद्देश्य "एक भारत — एक डिजिटल बैंकिंग व्यवस्था" की अवधारणा को साकार करना है। इसके माध्यम से सार्वजनिक क्षेत्रीय बैंक तकनीक-संचालित, पारदर्शी और ग्राहक-केंद्रित संस्थानों के रूप में रूपांतरित हो रहे हैं। साझा प्रदर्शन सूचकांक के माध्यम से प्रत्येक बैंक की प्रगति का मूल्यांकन किया जाता है, जिससे पारदर्शिता और प्रतिस्पर्धात्मक सुधार दोनों को प्रोत्साहन मिलता है। इन सुधारों से बैंकिंग क्षेत्र में उल्लेखनीय परिवर्तन आए हैं — डिजिटल ऋण स्वीकृति प्रक्रिया तेज हुई है, गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों में कमी आई है और ग्राहक

शिकायत निवारण प्रणाली अधिक प्रभावी बनी है। अब बैंक प्रोएक्टिव बैंकिंग की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, जहाँ निर्णय आंकड़ा विश्लेषण और ग्राहक व्यवहार पर आधारित होते हैं।

पी.एस.बी. मंथन केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि सहभागी सुधार और सामूहिक उत्कृष्टता का प्रतीक है। यह सार्वजनिक क्षेत्रीय बैंकों के बीच प्रतिस्पर्धात्मक सहयोग की भावना को मजबूत करता है और उन्हें साझा लक्ष्यों की दिशा में एकजुट करता है। यह भारतीय बैंकिंग को "प्रौद्योगिकी-सशक्त, पारदर्शी और आत्मनिर्भर" बनाने की दिशा में एक सशक्त कदम है। अंततः कहा जा सकता है कि ईज 8.0 और पी.एस.बी. मंथन का संगम भारतीय बैंकिंग सुधारों का स्वर्णिम अध्याय है। इन पहलों ने बैंकिंग प्रणाली में नवाचार, दक्षता और उत्तरदायित्व को नई ऊँचाई दी है। सार्वजनिक क्षेत्रीय बैंक अब "डिजिटल उत्कृष्टता" की दिशा में अग्रसर हैं, जहाँ ग्राहकों को न केवल तेज सेवा मिल रही है बल्कि सुरक्षित, पारदर्शी और आधुनिक बैंकिंग अनुभव भी प्राप्त हो रहा है।

"ईज 8.0 — तकनीक के माध्यम से विश्वास, सुविधा और उत्कृष्टता की ओर अग्रसर भारत।"

मैं तैयार हूँ



कविता

पावन अग्रवाल,
अधिकारी,
चांद शाखा

किसी की इच्छा है बड़ा बनने की
किसी की इच्छा है अच्छा इंसान बनने की
लोगों के भविष्य को साकार करने के लिए
अपने वर्तमान पर काम करने के लिए
मैं तैयार हूँ।
हाँ, मैं तैयार हूँ।

मन में एक उत्साह है, एक जुनून है
अब जो प्रण कर ही लिया है

तब क्या ही पानी क्या ही खून है
अपनी मेहनत से सफलता पाने के लिए
अपना नाम पावन करने के लिए
मैं तैयार हूँ।
हाँ, मैं तैयार हूँ।

अपने घर से मीलों दूर रहता हूँ।
पर लोगों को उनका घर देता हूँ।
अपनी संस्था की प्रगति के लिए
ग्राहकों को खुशी देने के लिए
मैं तैयार हूँ।
हाँ, मैं तैयार हूँ।

बाजार में कई खड़े हैं लम्बी कतार में
जैसे कुछ अच्छा होने के है इंतजार में
उन सबसे आगे बढ़ने के लिए
नई ऊँचाइयों को छूने के लिए
अब मैं तैयार हूँ।
हाँ, अब मैं तैयार हूँ।

प्रधान कार्यालय में हिंदी दिवस समारोह की झलकियां



विभिन्न अंचल / क्षेत्रीय कार्यालयों में हिंदी दिवस समारोह की झलकियां



विभिन्न अंचल / क्षेत्रीय कार्यालयों में हिंदी दिवस समारोह की झलकियां



विभिन्न अंचल / क्षेत्रीय कार्यालयों में हिंदी दिवस समारोह की झलकियां



माँ की खामोशी में छिपा त्याग



कहानी

हिंमाशु कुमार

प्रबंधक

सीआईबीएम, मणिपाल

हमारे जीवन में कई आवाज़ें होती हैं-किसी की हँसी, किसी की फटकार, किसी की सलाह, किसी की मांगें... पर इन सबके बीच एक आवाज़ ऐसी होती है, जो सुनाई नहीं देती, फिर भी जीवन की हर धड़कन में बसती रहती है। यह आवाज़ है माँ की खामोशी।

यह खामोशी कभी थकान ढक लेती है, कभी दर्द को छिपा लेती है, कभी भूख को भूल जाती है और कभी रातों की नींद को। लेकिन इस खामोशी के भीतर जो त्याग छिपा होता है, उसका कोई माप नहीं, कोई भाषा नहीं, और कोई सीमा नहीं।

कहते हैं कि माँ बोलती कम है, महसूस ज्यादा कराती है। शायद इसलिए उसके त्याग शब्दों में नहीं, उसकी चुप्पियों में दर्ज होते हैं।

माँ का त्याग - जो कभी बताया नहीं जाता

घर में सुबह सबसे पहले आँख किसकी खुलती है?

और सबसे आखिर में कौन सोता है?

कभी देखा है कि माँ की थकान कभी उसके चेहरे पर वैसी नहीं दिखती, जैसी दूसरों पर दिखती है।

वह अपने दर्द को ऐसे सहेज लेती है, जैसे उसकी कोई कीमत ही न हो। शायद इसलिए कि उसके लिए परिवार से बड़ा कुछ नहीं।

कितनी ही बार ऐसा हुआ है कि उसके हिस्से का फल, उसकी पसंद की सब्जी, या उसकी आखिरी रोटी भी उसने यह कहकर छोड़ दी कि-"मुझे भूख नहीं है... तुम खा लो।"

यह सिर्फ त्याग नहीं, यह एक अदृश्य प्रेम है।

ऐसा प्रेम जो बदले में कुछ नहीं मांगता—न तारीफ, न शुक्रिया, न सम्मान।

उसे सिर्फ इतना चाहिए कि उसके बच्चे खुश रहें, सुरक्षित रहें, और मुस्कुराते रहें।

खामोशी जो बहुत कुछ कहती है

माँ की खामोशी कई भाषाएँ बोलती है—

- जब वह नाराज होती है पर कुछ कहती नहीं—तो वह बस बोझ नहीं डालना चाहती।
- जब दिल दुखा होता है पर वह रोती नहीं—वह नहीं चाहती कि उसकी कमजोरी हम पर असर डाले।
- जब वह गुस्सा करती नहीं—तो इसलिए कि कहीं उसके शब्द हमें चोट न पहुँचा दें।
- जब वह अपनी तकलीफ छुपा लेती है—तो इसलिए कि उसकी पीड़ा हमारे सपनों के बीच न आए।

उसकी चुप्पी में प्रेम की ऐसी गहराइयाँ होती हैं, जिन्हें समझने में जीवन बीत जाता है।



हमने कभी उसकी खामोशी को समझा ही नहीं

हम उसकी आवाज़ सुनते हैं, पर अक्सर उसकी खामोशी को नहीं।

बचपन में जब हम रोते थे, वह चुप रहती थी लेकिन उसके हाथ हमारे आँसू पोंछते थे।

युवावस्था में जब हम किसी बात पर नाराज होकर घर से निकल जाते थे, वह खामोश रहती थी, पर दरवाजे के पास खड़ी रहती थी कि कब वापस आएँ।

बड़े होकर जब हम दूर चले जाते हैं, माँ फोन कम करती है, क्योंकि उसे डर होता है कि कहीं हम व्यस्त न हों या परेशान न हो जाएँ।

माँ का सारा जीवन ही "अपनों की सुविधा" के हिसाब से ढला होता है।

माँ का त्याग - समय के साथ समझ आने वाली कहानी

जीवन में एक समय ऐसा आता है जब हम समझते हैं कि माँ ने जो किया, वह कोई छोटी बात नहीं थी।

- बचपन में हमारे लिए जो कपड़े उसने खुद काटकर सिल दिए,
- जो रातें उसने हमारी खांसी-बुखार में जागकर बिताईं,
- जो त्योहारों में उसने अपनी नई साड़ी छोड़कर हमारे खिलौने चुने,
- जो हर परीक्षा में उसने अपने सपनों से ज्यादा हमारी सफलता की दुआ की...

इन सबका हिसाब कोई नहीं चुका सकता।

सबसे बड़ी बात यह है कि हमें यह एहसास बहुत देर से होता है।

जब जिम्मेदारियाँ हमारे कंधों पर आती हैं,

जब कोई हमें "माँ" कहकर बुलाता है,

या जब हम खुद किसी की चिंता में रातें जागते हैं -

तभी समझ आता है कि त्याग कैसा होता है,

और खामोशी कितनी गहराई रखती है।

माँ की खामोशी में एक दुनिया बसती है

माँ की चुप्पी हमें गले भी लगाती है और सिखाती भी है। वह बिना कहे यह बताती है

- प्यार जताने के लिए शब्दों की जरूरत नहीं,
- रिश्तों को निभाने के लिए शोर नहीं,
- और त्याग दिखाने के लिए प्रमाण नहीं चाहिए।

माँ का प्रेम हमेशा दिखाई नहीं देता,

पर वह हमेशा महसूस होता है—

एक स्पर्श की तरह,

एक सुगंध की तरह,

एक दुआ की तरह।

क्या हम कभी उसका त्याग लौटा सकते हैं?

सच यह है—नहीं।

हम चाहे जितनी कोशिश कर लें,
माँ जो देती है वह जीवन से परे है।

फिर भी हम उसके त्याग का सम्मान कर सकते हैं

- उसकी बात ध्यान से सुनकर,
- उसकी थकान देखकर उसके पास बैठकर,
- उसके लिए समय निकालकर,
- उन खामोशियों को पहचानकर, जिनमें वह खुद को छुपा लेती है।

माँ को सबसे बड़ी खुशी यही है कि हम खुश हैं और जब हम उसके प्रति अपना स्नेह जताते हैं,

तो उसकी खामोशी त्याग से बदलकर संतोष बन जाती है।

निष्कर्ष

"माँ की खामोशी में छिपा त्याग" सिर्फ एक निबंध का विषय नहीं, बल्कि हर इंसान के दिल में छिपी एक अदृश्य कहानी है।

माँ शब्द छोटा है, पर उसके भीतर समाई दुनिया अनंत है।

उसकी खामोशी एक नदी की तरह है—शांत, गहरी और जीवनदायी।

हम चाहे कितने भी बड़े हो जाएँ, उसका त्याग हमें हमेशा छोटा और विनम्र बना देता है।

क्योंकि हमारा पहला कदम,

पहली सीख, पहला सपना

सब उसी की खामोशी की गोद में पले-बढ़े हैं।



जिस देश को अपनी भाषा और
साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है,
वो देश उन्नत नहीं हो सकता

डॉ. राजेंद्र प्रसाद



मौन की पुकार



कविता

दिव्या प्रजापति

अधिकारी
हर्ष नगर शाखा, कानपुर

यह मौन की पुकार है,
निशब्द यह प्रहार है।
यह मौन की पुकार है,
हर मूक एक तलवार है।

जो शब्द से व्यक्त हैं,
वह मात्र एक गुहार हैं,
और जो निशब्द रह गए,
वह नीरवहंकार हैं।
जो बोलते थे, आज हैं वो मूक
ये मूकता है किसकी चूक?
हर एक शब्द जो हुए दमित
किस संघात की है यह हूंक।

यह हूंक बन गए हैं तर्क,
हर तर्क को मिला वितर्क,
तब दृग से बह गए अविरल,
वह जा पहुँचे हैं न्यायद्वार,
और जो रह गए हैं अचंचल में,
वो बन गए हैं निशब्द पुकार।

जो नेत्र जल कल-कल बहे,
अपनी व्यथा हर पल कहे,
और जो लौट गए अधर से,
उम्र भर निर्वात में रहे।
जो चीखे भी तो शून्य में,
या त्रिशंकु बने पाप पुण्य में,
जो कह न पाये एक शब्द,
क्या सुन सकोगे उनका वृतांत?

वो मूक थे अशक्त नहीं,
वह हैं सामर्थ्य का दृष्टांत।
ये मूकता है उन पर सवाल,
जिनकी ध्वनियाँ हैं विशाल।
वो सामना भी न कर पायेंगे,
अगर उठा ली मौन ने मशाल।
नेत्र जल फिर से बहेंगे,
पर आग बनकर कहेंगे,
इस बार ना लौटेंगे अधरों से,
मौन और निराधार,
मूक को मिल गया आधार,
मौन बन गया साकार।
मौन बन गया साकार।

हिन्दी : विकास की धारा, एकता की वाणी



कविता

दीपक ओझा

वरिष्ठ प्रबंधक,
सीआईबीएम, मणिपाल

संस्कृत की कोख से जन्मी,
पाली, प्राकृत से होकर गुजरी।
शौरसेनी अपभ्रंश की वो बेटी,
हर युग में नया रूप सँवारती निखरी ॥

कभी खड़ी बोली का लिया रूप,
कभी ब्रज, अवधी की बनी धूप।
हर बोली से लेती रही वो रंग,
जैसे कोई बहती निर्मल गंगा तरंग ॥

मीरा की भक्ति में वो गूंजी,
कबीर की साखी में वो गूंजी।
तुलसी की चौपाई का वो आधार,
प्रेमचंद के उपन्यासों का वो संसार ॥

ये सिर्फ भाषा नहीं, एक सेतु है,
उत्तर को दक्षिण से जोड़ने हेतु है।
पूरब के बिहू संग, पश्चिम की धड़कन,
हर प्रांत को पिरोती, ये भारत का मन ॥

बदले समय संग, बदली इसकी चाल,
इंटरनेट पर भी, बिछाया अपना जाल।
कभी अखबारों में, कभी फ़िल्मों में,
आज विश्व पटल पर, गूंजती हर जुबानों में ॥

ये केवल अक्षर नहीं, ये एहसास है,
हर भारतीय के दिल की ये प्यास है।
आइए मिलकर इसका मान बढ़ाएँ,
हिंदी को विश्व में, गर्व से फैलाएँ ॥

देवनागरी का लालित्य



आलेख

अक्षय भास्कर बाजपेयी
राजभाषा अधिकारी,
अंचल कार्यालय, मदुरै

‘लालित्य’ का शाब्दिक अर्थ है — भाव — सौन्दर्य, सरसता, कोमलता आदि। साहित्य के लालित्य पर काव्यशास्त्रों में विस्तृत विवेचना की गयी है। अलंकार संप्रदाय के प्रस्ताता आचार्य भामह ने कविता की तुलना स्त्री के अलंकारशोभित सुंदर मुख से की है — "न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनितामुखम्"। जिस तरह मुख सुंदर होने पर भी स्त्री आभूषणरहित नहीं होती, ठीक वैसे ही अलंकार के बिना कविता शोभायमान नहीं मानी जाती। काव्य के शोभाकारक तत्व के रूप में अलंकार की गणना की गयी। आचार्य रामचंद्र शुक्ल अपने महत्त्वाकांक्षी निबंध ‘कविता क्या है’ में सौंदर्य को परिभाषित करते हुए लिखते हैं "जैसे वीरकर्म से पृथक् वीरत्व कोई पदार्थ नहीं, वैसे ही सुंदर वस्तु से पृथक् सौंदर्य कोई पदार्थ नहीं।" देवनागरी का लालित्य उसके संघर्ष से जुड़ा हुआ है। स्वाधीनता संग्राम के विराट नाटकीय दौर में जनजागरण के लिए सभी सेनानियों ने पत्र - पत्रिकाओं का सहारा लिया। देश में बीसवीं शताब्दी का नवजागरण राजनैतिक पराभव से उबरने का महान प्रयास था। स्वराज की भट्टी में तपकर देवनागरी लिपि कुंदन सदृश हो गई।

निस्संदेह साहित्यिक अभिरुचि युग की छाया से संपृक्त रहती है। समय के साथ-साथ साहित्यिक अभिरुचि में परिवर्तन होता गया।

आज के प्रतिस्पर्धी युग में भाषा के लालित्य के साथ ही लिपि का लालित्य भी लोकप्रिय हो रहा है। भारत जैसे विविधतासंपन्न देश में देवनागरी लिपि राष्ट्रीय एकता और अखंडता की वाहक बनी हुई है। पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक देवनागरी लिपि की स्वीकार्यता और इसके प्रभाव ने कमोबेश इसके बाजार मूल्य को बढ़ा दिया है।

संविधान में देवनागरी लिपि की अवस्थिति

संविधान की आठवीं अनुसूची में अंतर्विष्ट भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग किया जाता है। सन् 2018 में प्रकाशित भाषाई जनगणना

2011 के आँकड़ों के अनुसार देश में मुख्यतः भारोपीय, द्रविड़, ऑस्ट्रो-एशियाई और चीनी-तिब्बती परिवार की भाषाएँ बोली जाती हैं। इनमें से देवनागरी लिपि का प्रयोग तीन भाषा-परिवारों द्वारा किया जाता है —

भाषा परिवार	भाषाएँ	व्यवहृत लिपि / लिपियाँ
भारोपीय	हिंदी	देवनागरी
	संस्कृत	देवनागरी
	कोंकणी	देवनागरी
	डोगरी	देवनागरी
	नेपाली	देवनागरी
	मराठी	देवनागरी
	मैथिली	देवनागरी
	गुजराती	देवनागरी और गुजराती
ऑस्ट्रो-एशियाई	संथाली	देवनागरी और ओलचिकी
चीनी-तिब्बती	बोडो	देवनागरी

इसके अतिरिक्त देश के लगभग सभी राज्यों में देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी द्वितीय अथवा तृतीय भाषा के रूप में प्रयोग की जाती है। देश की बहुप्रतिष्ठित कंपनियाँ अपने उत्पादों में देवनागरी के कलात्मक प्रयोग द्वारा अपने व्यापार का संवर्धन करती हैं।

ब्राह्मी की उत्तर और दक्षिण शाखाओं से प्रायः सभी भारतीय लिपियों की उत्पत्ति हुई है। इसलिए बाएँ से दाएँ लिखी जाने वाली सभी लिपियों में रूप के स्तर पर साम्यता परिलक्षित होती है। देवनागरी लिपि में वर्ण जहाँ वर्तुलाकार हैं वहीं रैखिक भी। अक्षरों में खड़ी लकीर और शिरोरेखा का संयोजन इनकी मनोहरता को बढ़ाता है। समानुपाती रेखन-विन्यास से सुलेखन में भी सुविधा होती है। शब्द संयोजन के पश्चात भी वर्णों का क्रमशः विलगाव अन्य लिपियों की प्राचीनता को दर्शाता है। ब्राह्मी से अब तक की विकास-यात्रा में क्रमशः संशोधन एवं परिवर्धन द्वारा देवनागरी लिपि ने अपने स्वरूप को सौष्ठव बनाया है। इस अभिनव प्रकृति के कारण लिपि में निरंतर निखार आता गया।



तालिका : संविधान में अनुसूचित भाषाओं की लिपियों का लेखन वर्तनीगत प्रस्तुतीकरण ORTHOGRAPHIC REPRESENTATIONS OF SCHEDULED AND NON-SCHEDULED LANGUAGES (VARIOUS SCRIPTS)

Roman Script	VOWELS SCHEDULED LANGUAGE																
	Assamese	Bengali	Bodo	Dogri	Gujarati	Hindi	Kannada	Kashmiri	Konkani	Marathi	Malayalam	Manipuri	Marathi	Nepali	Odia	Punjabi (Gurmukhi)	Roman Script
a	অ	অ	ਅ	अ	અ	अ	ಅ	अ	अ	अ	अ	ਅ	अ	अ	ଅ	ਅ	a
a:	আ	আ	ਅ	आ	આ	आ	ಅ	आ	आ	आ	ਅ	ਅ	आ	आ	ଆ	ਅ	a:
i	ই	ই	ই	इ	ઇ	इ	इ	इ	इ	इ	इ	ই	इ	इ	ಇ	ਅ	i
u	উ	উ	উ	उ	ઉ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	উ	उ	उ	ಊ	ਅ	u
ri	রী	রী	রী	रि	રિ	रि	ರಿ	रि	रि	रि	रि	রী	रि	रि	ਰਿ	ਰਿ	ri
ru	রু	রু	রু	रु	રુ	रु	ರು	रु	रु	रु	रु	রু	रु	रु	ਰੂ	ਰੂ	ru
e	এ	এ	এ	ए	એ	ए	ಎ	ए	ए	ए	ए	এ	ए	ए	ಀ	਀	e
ai	এই	এই	এই	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	এই	ऐ	ऐ	ਐ	ਐ	ai
oi	ও	ও	ও	ओ	ઓ	ओ	ಓ	ओ	ओ	ओ	ओ	ও	ओ	ओ	ਓ	ਓ	oi
o:				ओ	ઓ	ओ	ಓ	ओ	ओ	ओ	ओ	ও	ओ	ओ	ਓ	ਓ	o:
au																	au
ou	ও	ও	ও	औ	ઔ	औ	ಔ	औ	औ	औ	औ	ও	औ	औ	ਔ	ਔ	ou

Roman Script	VOWELS SCHEDULED LANGUAGE							VOWELS NON-SCHEDULED LANGUAGE									
	Sanskrit	Sindhi	Santali	Tamil	Telegu	Urdu	Bhili/Bhildi	Halabi	Kharia	Korku	Lepcha	Limbu	Nisi	Sherpa	Tibetan	Tulu	Roman Script
a	अ	अ	□	அ	ఆ	ا	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	a
a:	आ	आ	□	ஊ	ఊ	ا	आ	आ	आ	आ	आ	आ	आ	आ	आ	आ	a:
i	इ	इ	□	இ	ఱ	ا	इ	इ	इ	इ	इ	इ	इ	इ	इ	इ	i
u	उ	उ	□	ஊ	ఊ	ا	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	u
ri	रि	रि	□	ரீ	ఱి	ا	रि	रि	रि	रि	रि	रि	रि	रि	रि	रि	ri
ru	रु	रु	□	ரூ	ఱు	ا	रु	रु	रु	रु	रु	रु	रु	रु	रु	रु	ru
e	ए	ए	□	ஏ	ఱ	ا	ए	ए	ए	ए	ए	ए	ए	ए	ए	ए	e
ai	ऐ	ऐ	□	ஐ	ఱి	ا	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ai
oi	ओ	ओ	□	ஔ	ఱి	ا	ओ	ओ	ओ	ओ	ओ	ओ	ओ	ओ	ओ	ओ	oi
o:																	o:
au																	au
ou	औ	औ															ou

Roman Script	CONSONANTS SCHEDULED LANGUAGE																
	Assamese	Bengali	Bodo	Dogri	Gujarati	Hindi	Kannada	Kashmiri	Konkani	Marathi	Malayalam	Manipuri	Marathi	Nepali	Odia	Punjabi (Gurmukhi)	Roman Script
k	ক	ক	କ	क	ક	क	ಕ	क	क	क	क	କ	क	क	ਕ	ਕ	k
kh	খ	খ	ਖ	ख	ખ	ख	ಖ	ख	ख	ख	ख	ਖ	ख	ख	ਖ	ਖ	kh
g	গ	গ	ਗ	ग	ગ	ग	ಗ	ग	ग	ग	ग	ਗ	ग	ग	ਗ	ਗ	g
gh	ঘ	ঘ	ਘ	घ	ઘ	घ	ಘ	घ	घ	घ	घ	ਘ	घ	घ	ਘ	ਘ	gh
ng	ঙ	ঙ	ਙ	ङ	ઙ	ङ	ಙ	ङ	ङ	ङ	ङ	ਙ	ङ	ङ	ਙ	ਙ	ng
ch	চ	চ	ਚ	च	ચ	च	ಚ	च	च	च	च	ਚ	च	च	ਚ	ਚ	ch
j	জ	জ	ਜ	ज	જ	ज	ಜ	ज	ज	ज	ज	ਜ	ज	ज	ਜ	ਜ	j
jh	ঝ	ঝ	ਝ	झ	ઝ	झ	ಝ	झ	झ	झ	झ	ਝ	झ	झ	ਝ	ਝ	jh
q																	q
x																	x
nj	ঞ	ঞ	ਞ	ञ	ઞ	ञ	ಞ	ञ	ञ	ञ	ञ	ਞ	ञ	ञ	ਞ	ਞ	nj
T	ট	ট	ṭ	Ṭ	ટ	Ṭ	Ṭ	Ṭ	Ṭ	Ṭ	Ṭ	ṭ	Ṭ	Ṭ	ṭ	ṭ	T
Th	ঠ	ঠ	ṭh	Ṭh	ਠ	Ṭh	Ṭh	Ṭh	Ṭh	Ṭh	Ṭh	ṭh	Ṭh	Ṭh	ṭh	ṭh	Th
D	ড	ড	ḍ	Ḍ	ਡ	Ḍ	Ḍ	Ḍ	Ḍ	Ḍ	Ḍ	ḍ	Ḍ	Ḍ	ḍ	ḍ	D
Dh	ঢ	ঢ	ḍh	Ḍh	Ḍh	Ḍh	Ḍh	Ḍh	Ḍh	Ḍh	Ḍh	ḍh	Ḍh	Ḍh	ḍh	ḍh	Dh

Roman Script	CONSONANTS SCHEDULED LANGUAGE																
	Assamese	Bengali	Bodo	Dogri	Gujarati	Hindi	Kannada	Kashmiri	Konkani	Marathi	Malayalam	Manipuri	Marathi	Nepali	Odia	Punjabi (Gurmukhi)	Roman Script
r	র	র	ਰ	र	ર	र	ರ	र	र	र	र	ਰ	र	र	ਰ	ਰ	r
l	ল	ল	ਲ	ल	લ	ल	ಲ	ल	ल	ल	ल	ਲ	ल	ल	ਲ	ਲ	l
w	ৱ	ৱ	ਵ	व	વ	व	ವ	व	व	व	व	ਵ	व	व	ਵ	ਵ	w
sh	শ	শ	ਸ਼	श	શ	श	ಶ	श	श	श	श	ਸ਼	श	श	ਸ਼	ਸ਼	sh
SH	ষ	ষ	ਸ਼	ष	શ	ष	ಷ	ष	ष	ष	ष	ਸ਼	ष	ष	ਸ਼	ਸ਼	SH
s	স	স	ਸ	स	સ	स	ಸ	स	स	स	स	ਸ	स	स	ਸ	ਸ	s
z	জ	জ	ਜ਼	ज	જ	ज	ಜ	ज	ज	ज	ज	ਜ਼	ज	ज	ਜ਼	ਜ਼	z
zha																	zha
h	হ	হ	ਹ	ह	ਹ	ह	ಹ	ह	ह	ह	ह	ਹ	ह	ह	ਹ	ਹ	h
f																	f
q																	q
z																	z
R	ৱ	ৱ	ṛ	Ṛ	Ṛ	Ṛ	Ṛ	Ṛ	Ṛ	Ṛ	Ṛ	ṛ	Ṛ	Ṛ	ṛ	ṛ	R
Rh	ৱ	ৱ	ṛh	Ṛh	Ṛh	Ṛh	Ṛh	Ṛh	Ṛh	Ṛh	Ṛh	ṛh	Ṛh	Ṛh	ṛh	ṛh	Rh
half	ৱ	ৱ	ṛ	Ṛ	Ṛ	Ṛ	Ṛ	Ṛ	Ṛ	Ṛ	Ṛ	ṛ	Ṛ	Ṛ	ṛ	ṛ	half

Roman Script	CONSONANTS SCHEDULED LANGUAGE							CONSONANTS NON-SCHEDULED LANGUAGE									
	Sanskrit	Sindhi	Santali	Tamil	Telegu	Urdu	Bhili/Bhildi	Halabi	Kharia	Korku	Lepcha	Limbu	Nisi	Sherpa	Tibetan	Tulu	Roman Script
k	क	क	□	க	క	ك	क	क	क	क	क	क	क	क	क	क	k
kh	ख	ख	□	ஊ	ఊ	ا	ख	ख	ख	ख	ख	ख	ख	ख	ख	ख	kh
g	ग	ग	□	இ	ఱ	ا	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	g
gh	घ	घ	□	ஊ	ఱ	ا	घ	घ	घ	घ	घ	घ	घ	घ	घ	घ	gh
ng	ङ	ङ	□	ஊ	ఱ	ا	ङ	ङ	ङ	ङ	ङ	ङ	ङ	ङ	ङ	ङ	ng
c	च	च	□	ச	ఱ	ا	च	च	च	च	च	च	च	च	च	च	c
ch	छ	छ	□	ஊ	ఱ	ا	छ	छ	छ	छ	छ	छ	छ	छ	छ	छ	ch
j	ज	ज	□	இ	ఱ	ا	ज	ज	ज	ज	ज	ज	ज	ज	ज	ज	j
jh	झ	झ	□	ஊ	ఱ	ا	झ	झ	झ	झ	झ	झ	झ	झ	झ	झ	jh
q																	q
x																	x
nj	ञ	ञ	□														nj
T	Ṭ	Ṭ	□														T
Th	Ṭh	Ṭh	□														Th
D	Ḍ	Ḍ	□														D
Dh	Ḍh	Ḍh	□														Dh

Roman Script	CONSONANTS SCHEDULED LANGUAGE							CONSONANTS NON-SCHEDULED LANGUAGE									
	Sanskrit	Sindhi	Santali	Tamil	Telegu	Urdu	Bhili/Bhildi	Halabi	Kharia	Korku	Lepcha	Limbu	Nisi	Sherpa	Tibetan	Tulu	Roman Script
r	र	र	□	ர	క	ك	र	र	र	र	र	र	र	र	र	र	r
l	ल	ल	□	ஊ	ఱ	ا	ल	ल	ल	ल	ल	ल	ल	ल	ल	ल	l
w	व	व	□	ஊ	ఱ	ا	व	व	व	व	व	व	व	व	व	व	w
sh	श	श	□	ஊ	ఱ	ا	श	श	श	श	श	श	श	श	श	श	sh
S	ष	ष	□	ஊ	ఱ	ا	ष	ष	ष	ष	ष	ष	ष	ष	ष	ष	S
s	स	स	□	ஊ	ఱ	ا	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	s
z	ज	ज	□	ஊ	ఱ	ا	ज	ज	ज	ज	ज	ज	ज	ज	ज	ज	z
zha																	zha
h	ह	ह	□	ஊ	ఱ	ا	ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह	h
f																	f
q																	q
z																	z
R			□														R
Rh			□														Rh
half			□														half

स्रोत : भारत की जनगणना 2011 – भाषाई मानचित्र – भारत (Census of India 2011 - LANGUAGE ATLAS – INDIA)

देवनागरी का विस्तार

पहले जहाँ सुलेखन के लिए परम्परागत पद्धति का प्रयोग किया जाता था, वहीं आज प्राविधिक उन्नयन के साथ — साथ सुलेखन तकनीक का भी विस्तार हो चला है। देवनागरी सुलेखन शैली वैयक्तिक अभिरुचि तक सीमित न रहकर बाज़ार में स्टार्टअप्स को गति प्रदान कर रही है। सांस्कृतिक नवजागरण के दौर में लिपियों का भी पुनर्नवन हो रहा है। औपनिवेशिक मानसिकता के संकुलों को तोड़ती हुई देवनागरी लिपि महज लेखन का माध्यम भर नहीं रही है, अपितु रचनात्मकता एवं राष्ट्रीय गौरव को अभिव्यक्त करने का जरिया बन गयी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संलयन से अभिकल्पन के क्षेत्र में नवप्रवर्तन के द्वार उन्मुक्त हुए हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव लिपियों पर भी पड़ा है। बाज़ार की आवश्यकता के अनुसार बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने क्षेत्रीय भाषाओं में अपने प्रतीक चिह्नों को ढालना शुरू किया है। आज माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस में देवनागरी में 'मंगल', 'अपराजिता', 'कोकिला', 'एरियल यूनिकोड एमएस', 'निर्मला', 'संस्कृत टेक्स्ट', 'शोभिका', 'उत्साह' जैसे फ्रॉन्ट्स उपलब्ध हैं। ऑस्ट्रेलियाई ग्राफिक अभिकल्पन सॉफ्टवेयर 'केनवा' में देवनागरी के लिए 'अनेक देवनागरी', 'लीनोटाइप देवनागरी', 'मिरियड देवनागरी', 'डिआइएन नेक्स्ट देवनागरी', 'नोटो सेरिफ देवनागरी', 'टाइरो देवनागरी', 'जैनी पूर्व', 'अलकतरा', 'रंग', 'राजधानी', 'साहित्य', 'यात्रा वन', 'कलम', 'लिनी देवनागरी', 'माकू देवनागरी', 'बादशाह', 'अक्सर', 'आर्य', 'जल्दी', 'मुंशी देवनागरी', 'क्वांटम देवनागरी', 'कोयला देवनागरी', 'अमिता', 'असर', 'पालकी', 'मुक्ता', 'हलंत' आदि फ्रॉन्ट्स के विकल्प उपलब्ध हैं।

1. **लिपियों का संलयन** : देवनागरी का दूसरी लिपियों के साथ संलयन विशिष्ट प्रकार की ब्रांड आइडेंटिटी को रचता है। भारतीय चॉकलेट ब्रांड 'जिअहो' द्वारा देवनागरी अंक प्रारूप का इस्तेमाल इसका उदाहरण है। क्षेत्रीय पहचान को भाषाई स्तर पर उतारकर इस ब्रांड ने नवाचार का परिचय दिया है।

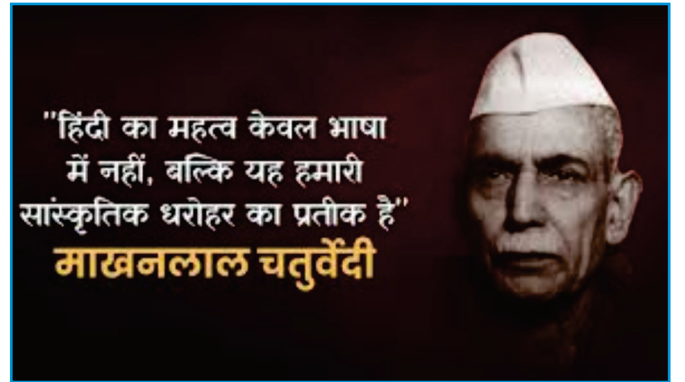
2. **द्विभाषी प्रतीक-चिह्न** : विदित हो, राजभाषा नियम 1976 के नियम 11 के अनुसार केंद्र सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, स्वायत्त निकायों, उद्यमों, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों आदि में द्विभाषी प्रतीक-चिह्नों का प्रयोग किया जाना अपेक्षित है। परन्तु आजकल लोकप्रिय ब्रांड भी बाज़ार में टिके रहने के लिए देवनागरी में प्रतीक-चिह्नों को ढाल रहे हैं। चाहे वह दूरसंचार क्षेत्र में 'एयरटेल' हो अथवा यातायात में 'टाटा', 'हीरो' या फिर 'बजाज' हो; देवनागरी में रचे हुए प्रतीक-चिह्न निजी कंपनियों के बाज़ार को विस्तृत करते हैं। इसी दिशा में 'किंगफिशर', 'एशियन पेंट्स' जैसे ब्रांड भी द्विभाषी प्रतीक-चिह्नों द्वारा ग्राहकों को लुभाने में लगे हुए हैं। 'स्प्राइट', 'कोकाकोला' प्रभृति शीतल पेय कंपनियां एवं 'पिज़्ज़ा हट', 'सबवे',

'स्टारबक्स' जैसे ब्रांड भी देवनागरी के उपयोग में पीछे नहीं हैं। 'इन्फोसिस' जैसी सूचना प्रौद्योगिकी की ख्यातिलब्ध कंपनियां भी देवनागरी को महत्व दे रही हैं।

3. **फैशन में देवनागरी का प्रवेश** : बॉलीवुड में पटकथा-लेखन और वस्तु-निवेदन के लिए भले ही रोमन लिपि का इस्तेमाल किया जाता हो, परन्तु फैशन उद्योग में देवनागरी प्रवेश कर चुकी है। संस्कृत के सूक्ति वाक्यों से लेकर हिन्दी के मुहावरों तक को कपड़ों पर मुद्रित किया जाता है। इसके साथ ही देवनागरी में टेटू बनवाने का चलन भी बढ़ चला है। ऐसे परिधान और टेटू एक तरफ तो हमें 'कूल' दिखाते हैं, वहीं दूसरी तरफ अपनी संस्कृति से भी जुड़ते जान पड़ते हैं।

निष्कर्ष

चाहे वह देसी हो अथवा बहुराष्ट्रीय, हिंदी के देशव्यापी पसारे के कारण यश, उपलब्धि और लाभ की इच्छा रखने वाली कोई भी कम्पनी अथवा व्यवसायिक प्रतिष्ठान स्वयं को देवनागरी से असंपृक्त नहीं रख सकता। अपनी समाहार शक्ति के फलस्वरूप देवनागरी ने कश्मीरी, संथाली, बांग्ला, असमिया, तमिल, मलयालम, कन्नड़, तेलुगु, उर्दू प्रभृति भाषाओं के विशेष स्वनिर्मों को भी अपनी वर्णमाला में स्थान दिया है। विभिन्न लिपि-चिह्नों के अंगीकरण द्वारा वर्णमाला का परिवर्धन तथा सभी भाषाओं को साथ लेकर चलने की भावना देवनागरी लिपि को अखिल भारतीय चरित्र प्रदान करती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि देवनागरी के प्रति बढ़ती हमारी रुचि प्रकारान्तर से देश की सांस्कृतिक एकता की सुदृढ़ता की द्योतक है।



हिंदी के लिए उपयोगी ई-टूल्स



आलेख

धीरज जुनेजा
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय सूरत

एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। हिंदी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ ही ग्यारह राज्यों और तीन संघ शासित क्षेत्रों की भी प्रमुख राजभाषा है। संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल अन्य इक्कीस भाषाओं के साथ हिंदी का एक विशेष स्थान है। यह देखा गया है कि इस दायित्व को समझते हुए, अधिकतर कार्मिक हिन्दी में कार्य करना चाहते हैं परंतु अंग्रेजी में कार्य करने के आदी होने के कारण कुछ कार्मिकों को हिन्दी में कार्य करने में कुछ व्यावहारिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। लेकिन आज के कार्य-परिवेश में विकसित सूचना एवं प्रौद्योगिकी के माध्यम से ऐसी समस्त कठिनाइयों का समाधान उपलब्ध है।

सूचना प्रौद्योगिकी ने हिंदी का उपयोग करके सरकारी संप्रेषण को सरल एवं प्रभावी बनाया है। सूचना प्रौद्योगिकी ने राजभाषा का महत्व बढ़ाया है। इसी कड़ी में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा देश में राजभाषा प्रचार एवं प्रसार के उद्देश्य से हिंदी के राजभाषाई कार्यों को बढ़ावा देने हेतु बहुत से हिंदी ई-टूल्स एवं सॉफ्टवेयर राजभाषा विभाग द्वारा विकसित किए गए हैं। भारत सरकार के साथ-साथ अनेक प्रतिष्ठित आईटी कंपनियों एवं भाषा प्रेमियों के अथक प्रयास एवं योगदान से यहीं सूचना प्रौद्योगिकी तकनीक भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार एवं इन भाषाओं के व्यावहारिक प्रयोग को सरल, सहज एवं सुगम बनाने की वाहक बनी। हिंदी के लिए उपलब्ध आधुनिक डिजिटल टूल्स भाषा सीखने को रोचक बनाते हैं, लेखन को सरल करते हैं और ज्ञान की पहुँच को व्यापक बनाते हैं। इस प्रकार, हिंदी ई-टूल्स न केवल भाषा कौशल को सुदृढ़ करते हैं बल्कि डिजिटल भारत की अवधारणा को भी मजबूती प्रदान करते हैं।

यहां सूचना प्रौद्योगिकी के ऐसे ही कुछ ई-टूल्स संबंधी जानकारी सांझा कर रहे हैं, जिनके प्रयोग से भारतीय भाषाओं विशेषकर हिन्दी में न सिर्फ सरकारी कामकाज अपितु व्यक्तिगत कार्य करने भी आश्चर्यजनक रूप से सरल हो गए हैं:

1) शब्दकोश : किसी भी भाषा में कार्य करते हुए वांछित भाव को प्रकट करने के लिए सही शब्दों का प्रयोग किया जाना अति आवश्यक है। राजकीय कार्य के महत्व के अनुरूप सही शब्द का चयन और अधिक आवश्यक हो जाता है। इस कार्य के लिए कई ऑनलाइन व ऑफलाइन शब्दकोश उपलब्ध हैं। इनमें से कुछ विशेष शब्दकोश निम्न प्रकार से हैं:-

*** ई-महाशब्दकोश:** यह सी-डेक के सहयोग से राजभाषा विभाग द्वारा विकसित ऑनलाइन शब्दकोश है। यह न सिर्फ समानार्थी शब्द या उसका अर्थ बताता है अपितु उसकी सम्पूर्ण प्रकृति तथा अंग्रेजी व हिन्दी वाक्य में उसके प्रयोग का उदाहरण भी प्रस्तुत करता है। इसे <http://e-mahashabdckosh.rb-aal.in/HindiInterface.aspx> लिंक पर उपयोग किया जा सकता है। इसे बुक मार्क करके सरलता से प्रयोग किया जा सकता है। यह सटीक प्रशासनिक शब्दों के चयन में उपयोगी है।



*** प्रशासनिक तथा तकनीकी शब्दावली (CSTT):** प्रशासनिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा विकसित शब्दकोश www.cstt.nic.in पर ऑनलाइन उपलब्ध है। यह शासकीय प्रयोजन के लिए सटीक एवं मानक शब्द उपलब्ध करवाता है। साथ ही वांछित शब्द से संबद्ध समस्त अन्य शब्दों का विकल्प भी प्रदान करता है। इसे कार्यालय में सभी के डेस्क पर उपलब्ध करवाए गए इन्टरनेट के द्वारा सरलता से प्रयोग किया जा सकता है। यह अंग्रेजी से हिन्दी व हिन्दी से अंग्रेजी समानार्थी दोनों प्रकार से शब्दों के चयन में उपयोगी है। इसे डेस्कटॉप, लैपटॉप व मोबाइल आदि पर बुकमार्क करके आवश्यकतानुसार प्रयोग किया जा सकता है। यह अनुवाद कार्य के लिए भी बहुत उपयोगी है।

*** हिंखोज(Hinkhoj) ऑनलाइन शब्दकोश व मोबाइल एप:** यह अंग्रेजी से हिन्दी तथा हिन्दी से अंग्रेजी दोनों प्रकार की आवश्यकताओं के लिए बेहतरीन शब्दकोश है। यह शासकीय एवं निजी प्रयोग के लिए अत्यंत उपयोगी है। इसमें शब्द की खोज के लिए बोलकर लिखने हेतु

माइक का विकल्प दिया गया है। विस्तृत जानकारी के लिए यह वांछित समानार्थी शब्द के साथ-साथ उस शब्द की प्रकृति, उस शब्द का सही उच्चारण, शब्द से संबन्धित अन्य समानार्थी एवं विपरीतार्थक शब्द, शब्द की परिभाषा एवं अंग्रेजी व हिन्दी दोनों भाषाओं में वाक्य प्रयोग भी दर्शाता है। यह शब्दकोश शब्द ज्ञान में वृद्धि के लिए नियमित सुझाव, शब्द-समूह व प्रतिदिन 'वर्ड ऑफ़ द डे' / 'आज का शब्द दर्शाता है।

2) गूगल ट्रांसलेट (Google Translate) ऑनलाइन

अनुवाद व मोबाइल एप: अनुवाद व शब्दार्थ संबंधी आवश्यकताओं के लिए यह एक उपयोगी टूल है। यह 100 से अधिक भाषाओं में अनुवाद की सुविधा उपलब्ध करवाता है। इसमें कीबोर्ड पर लिखकर व इनबिल्ट माइक के द्वारा बोलकर शब्दानुवाद या वाक्य अनुवाद किया जा सकता है। किसी दस्तावेज को अपलोड करके भी पूरे दस्तावेज का एक साथ अनुवाद किया जा सकता है। इसे <https://translate.google.com/> पर ऑनलाइन प्रयोग किया जा सकता है। गूगल ट्रांसलेट एप को प्ले स्टोर से निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है। गूगल ट्रांसलेट एप ऑफलाइन भी काम करता है। इस एप में कीबोर्ड के द्वारा अनेक भाषाओं में टाइप करके, माइक द्वारा बोलकर, लेख का चित्र लेकर अथवा टच पैनेल के विकल्प से अंगुली द्वारा अक्षर या वर्ण बनाकर शब्द लिखकर भी अनुवाद किया जा सकता है। फोन के कैमरे को वांछित शब्द के ऊपर ले जाने मात्र से ही यह शब्द का तत्काल अनुवाद उपलब्ध करवाता है। इस एप का उपयोग द्विभाषी बातचीत (Chat) में भी किया जा सकता है। फोन पर प्राप्त एसएमएस को भी इसके द्वारा अनुवाद करके पढ़ा जा सकता है। किसी टेक्स्ट को गूगल ट्रांसलेट एप की स्क्रीन पर कॉपी करके अनुवाद किया जा सकता है। अनुदित पाठ को सीधे ही ब्रूटुथ, ईमेल, व्हाट्सएप आदि अनेक माध्यमों से भेजा जा सकता है। यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि इस प्रकार के किसी भी एप या सॉफ्टवेयर द्वारा किया गया अनुवाद मशीनी अनुवाद होता है जो केवल दिए गए शब्द या वाक्य का शाब्दिक अनुवाद करता है, भाव का नहीं। अतः इसमें वांछित अनुवाद की दृष्टि से त्रुटि की संभावना भी रह सकती है। इसलिए ऐसे सभी उत्पादों का प्रयोग करते हुए विवेक का प्रयोग करना आवश्यक है। तथापि ये उत्पाद दैनिक उपयोग में काफी सहयोगी हैं।

3) टंकण (Typing) : भारतीय भाषाओं के कीबोर्ड मुख्य रूप से तीन भागों में वर्गीकृत है : इन्स्क्रिप्ट, फोनेटिक तथा टाइपराइटर (रेमिंगटन)।

इन्स्क्रिप्ट कीबोर्ड : नियमित टंकण करने वाले व्यक्ति भारतीय भाषाओं में टंकण के लिए पूर्व में प्रचलित रेमिंगटन कीबोर्ड के स्थान पर भारत सरकार द्वारा मानकीकृत इन्स्क्रिप्ट कीबोर्ड का प्रयोग करना बेहतर है, क्योंकि-

* सी-डैक द्वारा विकसित इन्स्क्रिप्ट (इंडियन स्क्रिप्ट का लघुरूप) भारतीय लिपियों का मानक कीबोर्ड है।

- यह देवनागरी, बंगाली, गुजराती, गुरुमुखी, कन्नड़, मलयालम, ओड़िया, तमिल तथा तेलुगू सहित 12 भारतीय लिपियों का मानक कीबोर्ड है।
- इन्स्क्रिप्ट ले-आउट में भारतीय लिपियों के सभी मानकीकृत चिह्नों को शामिल किया गया है।
- इस कीबोर्ड के ध्वन्यात्मक/वर्णक्रम गुण के कारण एक व्यक्ति जो कि किसी एक लिपि में इन्स्क्रिप्ट टाइपिंग जानता हो वह सभी भारतीय लिपियों में टाइप कर सकता है।
- इन्स्क्रिप्ट ले-आउट भारत सरकार का मानक कीबोर्ड होने के कारण सभी ऑपरेटिंग सिस्टम में डिफाल्ट अर्थात पहले से मौजूद रहता है।
- यह सामान्यतः 'मंगल' (यूनिकोड आधारित मानक) फॉन्ट में ही टाइप करता है।
- इन्स्क्रिप्ट सर्वाधिक गति वाली टाइपिंग है। आमतौर पर एक वर्ण के लिए एक कुंजी होने से समय कम लगता है एवं अशुद्धियाँ कम होती हैं।
- इन्स्क्रिप्ट का कुंजीपटल वैज्ञानिक एवं सुव्यवस्थित है। इसमें सभी स्वर बाई ओर एवं सभी व्यंजन दाई ओर स्थापित है जिससे इसे याद करना अत्यन्त सरल है। साथ ही सभी संयुक्ताक्षरों के लिए भी अलग से कुंजी दी गई है।
- टंकण सीखना सरल है। मात्र हफ्ते भर के अभ्यास से ही इन्स्क्रिप्ट में लिखना शुरू किया जा सकता है।
- टचस्क्रीन डिवाइस यथा टैबलेट, पीसी तथा मोबाइल फोन आदि के लिए भी इन्स्क्रिप्ट कीबोर्ड पूर्णतः उपयुक्त है।

विंडोज आधारित कम्प्यूटर में इन्स्क्रिप्ट कीबोर्ड सक्रिय करने की प्रक्रिया:

Go to Start > Control Panel > Regional & Language > Keyboard and Languages Tab > Change Keyboards > Add Devnagari-INSCRIPT keyboard layout for Hindi

इन्स्क्रिप्ट कीबोर्ड का मानकीकरण "डिपार्टमेंट ऑफ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी" (DIT) द्वारा किया गया तथा "ब्यूरो ऑफ इण्डियन स्टैंडर्ड" (BIS) द्वारा इसे राष्ट्रीय मानक घोषित किया गया।

फोनेटिक कीबोर्ड : जो व्यक्ति हिन्दी टाइपिंग सीखे बिना हिन्दी में टाइप करना चाहते हैं वे फोनेटिक कीबोर्ड का प्रयोग कर सकते हैं। इस कीबोर्ड के माध्यम से रोमन लिपि में टाइप किए गए शब्दों को उनकी ध्वनि के अनुरूप देवनागरी या किसी अन्य भारतीय भाषा में स्क्रीन देख सकते हैं। एक लिपि में टंकित शब्दों के दूसरी लिपि में परिवर्तन की इस प्रक्रिया को

लिप्यांतरण (Transliteration) कहा जाता है। यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि यह शब्द का अनुवाद नहीं करता अपितु यह केवल एक लिपि में लिखे गए शब्द को उसकी ध्वनि के आधार पर दूसरी लिपि में परिवर्तित करता है। यह सामान्यतः मंगल' (यूनिकोड आधारित-मानक) फॉन्ट में ही टाइप करता है। उदाहरणतः शब्द 'Indian' (रोमन लिपि-अंग्रेजी) को फोनेटिक कीबोर्ड के माध्यम से लिखने पर यह इंडियन (देवनागरी लिपि-हिन्दी) के रूप में प्राप्त होगा न कि 'भारतीय'। भारतीय भाषाओं के लिए कई प्रकार के फोनेटिक कीबोर्ड उपलब्ध हैं परंतु इनमें से तीन प्रमुख कीबोर्ड हैं-

माइक्रोसॉफ्ट इण्डिक लैंग्वेज इनपुट टूल : यह टूल नौ भारतीय भाषाओं में लिप्यांतरण की सुविधा प्रदान करता है। यह टूल उपयोग में बेहद सरल एवं प्रभावशाली है। यह एक ऑफलाइन टूल है जिसे <http://bhashaindia.com/Downloads/Pages/newpage.aspx> से निःशुल्क डाउनलोड करके संस्थापित (Install) किया जा सकता है।

गूगल इनपुट टूलस: यह टूल भारतीय भाषाओं सहित विश्व की लगभग 80 भाषाओं में लिप्यांतरण की सुविधा प्रदान करता है। यह ऑनलाइन व ऑफलाइन दोनों रूप में उपलब्ध है। इस टूल के ऑनलाइन वेबपेज <https://www.google.com/inputtools/try/> पर अपने विचार रोमन



लिपि में टाइप करके लगभग 80 भाषाओं में से किसी भी भाषा की लिपि में लिख सकते हैं तथा इस प्रकार कुछ हद तक अन्य भाषा-भाषियों से संवाद कर सकते हैं। इसे <https://www.google.com/inputtools/windows/> से निःशुल्क डाउनलोड करके संस्थापित (Install) किया जा सकता है।

हिंदी इंडिक इनपुट टूल: यह टूल 12 भारतीय भाषाओं में लिप्यांतरण की सुविधा प्रदान करता है। यह कीबोर्ड प्रत्येक वर्ग के लिए कुंजी दबाने पर मार्गदर्शन हेतु फ्लोटिंग पॉप अप स्क्रीन दर्शाता है जिसके माध्यम से वांछित शब्द के लिए सुझाव प्रदान किए जाते हैं। इसे <http://bhashaindia.com/Downloads/Pages/home.aspx> से निःशुल्क डाउनलोड करके संस्थापित (Install) किया जा सकता है।

मोबाइल फोन पर हिंदी टंकण: मोबाइल फोन हमारे जीवन का अहम हिस्सा बन चुका है। लगभग सभी मोबाइल फोन व सॉफ्टवेयर हिन्दी में टाइप करने की सुविधा प्रदान कर रहे हैं। तथापि मोबाइल फोन के लिए गूगल इंडिक कीबोर्ड एक ऐसा टूल है जो मोबाइल पर टंकण संबंधी सभी आवश्यकताओं का एकल समाधान प्रदान करता है। यह अंग्रेजी व हिन्दी टंकण के कई विकल्प एक ही स्क्रीन पर उपलब्ध करवाता है। एकल टच से हिन्दी से अंग्रेजी व अंग्रेजी से हिन्दी टंकण में अंतरण की सुविधा है। एकल टच से हिन्दी टंकण के चार विकल्पों में से किसी का भी चयन करके उपयोग किया जा सकता है। फोनेटिक कीबोर्ड के विकल्प से रोमन में लिखकर देवनागरी में लिप्यांतरण सरलता एवं सटीकता से प्राप्त किया जा सकता है। सीधे ही देवनागरी वर्णों का प्रयोग करके हिन्दी में लिखने का विकल्प उपलब्ध है। टच स्क्रीन के विकल्प के प्रयोग से भी वांछित शब्द लिखे जा सकते हैं। कीबोर्ड पर दिए गए माइक का प्रयोग करके बोलकर लिखने की सुविधा बेहद उपयोगी है। इसके प्रयोग से बड़े-बड़े संदेश अत्यधिक तीव्रता एवं स्पष्टता से लिखे जा सकते हैं। यह कीबोर्ड मोबाइल के लगभग सभी एप यथा एसएमएस, व्हाट्सएप, फेसबुक, ईमेल आदि में टंकण के लिए प्रयोग किया जा सकता है। इसे गूगल प्ले स्टोर से निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है।

1.प्ले स्टोर -Google Indic Keyboard -डाउनलोड -इंस्टाल

2. Setting - Additional Settings Language and Input - Keyboard & Input Method -Current Keyboard or Default Keyboard -English &Indic Languages- Google Indic Keyboard

रेमिंगटन कीबोर्ड (हिंदी टाइपराइटर कीबोर्ड लेआउट):

रेमिंगटन कीबोर्ड लेआउट देवनागरी लिपि टाइप करने का अब तक का सबसे लोकप्रिय तरीका है। रेमिंगटन हिंदी कीबोर्ड एक मानक हिंदी टाइपिंग कीबोर्ड लेआउट है जिसमें हिंदी फॉन्ट Devlys और Kruti Dev है। इस लेआउट को कंपनी ने इसी नाम से लोकप्रिय बनाया। वे भारत में देवनागरी टाइपराइटर के सबसे लोकप्रिय निर्माता थे। इस प्रकार कीबोर्ड लेआउट को रेमिंगटन लेआउट के रूप में जाना जाने लगा। इंटरनेट युग की शुरुआत से पहले, व्यावहारिक रूप से सभी हिंदी टाइपिस्ट इस कीबोर्ड लेआउट के आदी थे। रेमिंगटन हिंदी कीबोर्ड का उपयोग सरकारी टाइपिंग आधारित परीक्षा जैसे असिस्टेंट पोस्ट, एलडीसी पोस्ट, डेटा एंट्री ऑपरेटर में व्यापक रूप से किया जाता है।

4) मंत्र राजभाषा : राजभाषा विभाग की वेबसाइट के लिंक <https://mantra-rajbhasha.rb-aai.in/> पर अनुवाद के लिए इस टूल का प्रयोग किया जा सकता है। यहाँ टाइप करके अथवा किसी टेक्स्ट को कॉपी-पेस्ट करके अनुवाद किया जा सकता है। यहाँ से अनूदित पाठ को कॉपी-पेस्ट करके वांछित फाइल में प्रयोग कर सकते हैं।

5) गुगल डॉक्स (Google Docs) ऑनलाइन दस्तावेज संपादक व मोबाइल एप : आपका अपना निजी सहायक (PA):

यह टूल हमारे कार्यालयीन व निजी कार्य का सबसे प्रभावी सहयोगी सिद्ध हो सकता है। यह किसी भी प्रकार के प्रभावी दस्तावेज को बनाने, उसको सम्पादित करने, सहेजने तथा अन्य के साथ सरलता एवं सहजता से साझा करने का अत्यंत प्रभावी टूल है। इसमें किसी भी दस्तावेज को प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक विभिन्न प्रकार के फॉन्ट्स, एडिटिंग व स्टाइलिंग टूल, टेक्स्ट व पैरा फॉर्मेट टूल, लिंक इमेज या ड्राइंग आदि जोड़ने की समस्त सुविधाएं प्राप्त की गई हैं। कीबोर्ड द्वारा टाइप करने के अलावा इसमें दी गई माइक की सुविधा से हम स्वयं बोलकर (श्रुतलेखन द्वारा) अत्यधिक तीव्रता से बड़े-बड़े दस्तावेज तैयार कर सकते हैं। ये दस्तावेज स्वतः गुगल ड्राइव पर सहेजे जाते हैं जिन्हें कहीं भी, कभी भी प्रयोग किया जा सकता है। इस प्रकार सहेजे गए दस्तावेज गुगल डॉक्स के एप के साथ सिंक्रोनाइज रहते हैं, जिनका प्रयोग ऑफलाइन रहते हुए भी मोबाइल पर किया जा सकता है। ऑनलाइन डॉक्स में उपलब्ध सभी सुविधाएं मोबाइल एप पर भी उपलब्ध हैं जिनके द्वारा किसी भी दस्तावेज को न सिर्फ उसी कुशलता एवं सहजता से बनाया अपितु संपादित भी किया जा सकता है जो मोबाइल के ऑनलाइन होते ही ऑनलाइन उपलब्ध डॉक्स के साथ सिंक्रोनाइज हो जाता है। वाक से पाठ द्वारा दस्तावेज तैयार करने की गति एवं शुद्धता वक्ता के उच्चारण की गति, शुद्धता एवं स्पष्टता पर निर्भर करती है। गुगल डॉक्स पर तैयार या सहेजे गए दस्तावेज को वर्ड, ओडीटी, पीडीएफ सहित अनेक फॉर्मेट में डाउनलोड किया जा सकता है तथा ब्रूटथ, ईमेल, व्हाट्सएप, शेयरईट आदि अनेक माध्यमों से भेजा जा सकता है। गुगल डॉक्स केवल क्रोम ब्राउजर पर कार्य करता है। इसे प्रयोग करने के लिए गुगल अकाउंट का होना अनिवार्य है जिसके माध्यम से हम अपने गुगल डॉक्स में लॉग इन कर सकें। गुगल डॉक्स को प्ले स्टोर से निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है। मोबाइल फोन में गुगल डॉक्स पर कार्य करने तथा कम्प्यूटर पर गुगल डॉक्स में कार्य करने के लिए एक ही गुगल अकाउंट का प्रयोग करने पर दोनों में फाइलें समान रूप से सिंक्रोनाइज रहेंगी।

6) श्रुतलेखन : राजभाषा विभाग की वेबसाइट के लिंक <https://shrutlekhana-rajbhasha.rb-aai.in/> पर पंजीकृत करके वाक से पाठ (बोलकर लिखने) के लिए इस टूल का प्रयोग किया जा सकता है।

7) प्रवाचक: इसे राजभाषा विभाग की वेबसाइट के लिंक <https://pravachak-rajbhasha.rb-aai.in/UserRegistration.aspx> से अपने कम्प्यूटर पर डाउनलोड करके दिए गए स्थान पर पाठ को टंकित करके या किसी पाठ को पेस्ट करके सुना जा सकता है। इसमें बोलने की गति को धीमा या तीव्र किया जा सकता है।

8) टी.बी.आई.एल. (TBIL) डाटा कन्वर्टर : यह भारतीय भाषाओं के मध्य लिप्यांतरण का अत्यंत प्रभावी टूल है। यह ऑफलाइन टूल है। यह नौ भारतीय भाषाओं (बंगाली, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, मलयालम, मराठी, पंजाबी, तमिल व तेलुगू) के विभिन्न फॉन्ट के एक-दूसरे में परिवर्तन की सुविधा प्रदान करता है। यह उक्त नौ भाषाओं के अनेक यूनिकोड / नॉन-यूनिकोड फॉन्ट के उसी भाषा या इन नौ में से दूसरी भाषा के यूनिकोड / नॉन-यूनिकोड फॉन्ट में सरल एवं सहज लिप्यांतरण की सुविधा प्रदान करता है। इसका प्रयोग किसी टेक्स्ट वर्ड फाइल, एक्सेल शीट, एक्सै अथवा एस. क्यू.एल. फाइल के लिए किया जा सकता है। इसे <http://bhashaindia.com/Downloads/Pages/newpage.aspx> पर 'फॉन्ट टूल्स' से डाउनलोड करके इन्स्टाल किया जा सकता है।

(9) लीला (LILA) हिंदी पाठ्यक्रम एवं ऑनलाइन परीक्षाएँ:

निःशुल्क हिंदी भाषा सीखने के लिए राजभाषा विभाग द्वारा तैयार कराए गए लीला हिंदी प्रबोध, लीला हिंदी प्रवीण तथा लीला हिंदी प्राज्ञ पाठ्यक्रमों के सॉफ्टवेयरस उपलब्ध हैं। इन सॉफ्टवेयरस को केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली तथा विभिन्न केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उपसंस्थानों से निःशुल्क प्राप्त किया जा सकता है। इन सॉफ्टवेयरस के इंटरनेट संस्करणों से अंग्रेजी माध्यम के साथ-साथ विभिन्न भारतीय भाषाओं के माध्यम से भी निःशुल्क हिंदी सीखी जा सकती है। इनमें ऑडियो-वीडियो की सुविधा भी है।

उपर्युक्त टूल्स के उपयोग से निश्चित ही हिन्दी सहित कई भाषाओं में कार्य करना काफी सरल हो गया है। कृपया आवश्यकता के अनुरूप भाषा प्रौद्योगिकी के इन विशिष्ट टूल्स का प्रयोग करना चाहिए और अपने संवैधानिक व नैतिक दायित्व के निर्वहन के साथ-साथ निजी जीवन में भी स्वभाषा का प्रयोग करना चाहिए। संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करने के लिए आवश्यक है कि सरकारी कामकाज अनुवाद की अपेक्षा मूल रूप से हिंदी में किया जाए और अन्य स्थानीय भाषाओं में इसका अनुवाद किया जाए। भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों तथा बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से मेरा विनम्र आग्रह है कि स्थानीय भाषाओं के साथ-साथ वे सरकारी कामकाज में, मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले।

सूचनाओं के स्रोत

1. <http://bhashaindia.com>
2. <https://www.google.com/inputtools/>
3. <http://e-mahashabdkosh.rb-aai.in/>
4. <https://mantra-rajbhasha.rb-aai.in/>
5. <https://pravachak-rajbhasha.rb-aai.in/>

जो बांध सके फिर रिश्तों को वो डोर कहाँ से लाऊँ



कविता

विवेक मिश्रा
ग्राहक सेवा सहयोगी
विश्रामपुर शाखा

मन का अंधियारा दूर करे, वो भोर कहाँ से लाऊँ,
जो बांध सके फिर रिश्तों को वो डोर कहाँ से लाऊँ।

रिश्तों की शाख के पत्तों में, अपनी शाखों को छोड़ दिया,
शब्दों ने जो रिश्ता जोड़ा था, वो शब्दों ने ही तोड़ दिया,
अब जो बातें निःशब्द हुईं, उनको कैसे बतलाऊँ,
जो बांध सके फिर रिश्तों को वो डोर कहाँ से लाऊँ।

जिन रिश्तों के आकाश में बस, प्रेम के बादल घिरते थे,
बन कर अरमानों की बूँदें, नित हृदय धरा पर गिरते थे,
अब सूख चुकी इस धरती पर कैसे बरखा बरसाऊँ,
जो बांध सके फिर रिश्तों को वो डोर कहाँ से लाऊँ।

इक दौर भी ऐसा होता था, जब रिश्ते बोला करते थे,
अपनी डोरी की उलझन को, स्नेह से खोला करते थे,
अब स्नेह-संयम से फिर वो दौर कहाँ से लाऊँ,
जो बांध सके फिर रिश्तों को वो डोर कहाँ से लाऊँ।



मेरी बिटिया मुझे छोड़कर जा रही है...



कविता

राजीव कुमार
ग्राहक सेवा सहयोगी
नीमवाला शाखा

मेरी बिटिया मुझे छोड़कर जा रही है...

पापा-पापा रटती थी मेरा नाम, वो बिटिया मुझे आज छोड़कर जा रही है,
अरे! शादी होने वाली है उसकी आज, उसे लेने बारात आ रही है।
नींद में भी छोड़ती नहीं थी उंगली को मेरी,
में मिलने आती रहूँगी पापा! ऐसा वो मुझे आज समझा रही है।
मेरी बिटिया मुझे आज छोड़कर जा रही है.....

बारात की सेवा, दुल्हे का अभिवादन, बस किसी कारण से कोई मेरी
बिटिया को कुछ न कहे,
पर उसकी निगाहें मुझे ही दूँड रही थी, कहीं उसके पापा रो तो नहीं रहें।
ससुराल में जाकर पापा को याद तो करेगी न,
आखें आंसुओं से भरी हुई थी उसकी और देखो अपना सिर नहीं में हिला
रही है।
मेरी बिटिया मुझे आज छोड़कर जा रही है.....

प्राणी, माही, माऊ, बिल्ली, न जाने कितने नामों से उसे बुलाता था,
जान-बूझकर शरारत करती थी वो शायद, पता नहीं उसे डांट खाने में मजा
क्यों आता था।
बिल्लियों की तरह लडते देखा है, दोनों बहनों को एक कुरकुरे के लिए,
आज से मेरा ये कमरा तेरा, ऐसा छोटी बहन को बोलकर जा रही है।
मेरी बिटिया मुझे आज छोड़कर जा रही है.....

परिस्थिति कैसी भी हो, बेटियाँ हमेशा साथ देती है,
पर पता नहीं क्यों फिर भी सबको, बेटों की आस रहती है।
लडकियाँ कुछ नहीं कर सकती, पत्थर की तरह विश्वास है सबको,
पर उसी पत्थर को, अपने होंसले से तोड़ कर जा रही है।
मेरी बिटिया मुझे आज छोड़कर जा रही है.....



मेरी एक मुट्टी मिट्टी



कविता

खुशबू

अधिकारी

क्षेत्रीय कार्यालय गाज़ियाबाद

दिल्ली-एनसीआर, नगरों का मेल,
आशाओं का सागर, सपनों का खेल ।
ऊँची इमारतें हैं, सड़कों का जाल,
पर्यावरण बेहाल, तन का बुरा हाल ।

यमुना तट पर बसा ये नगर,
था हरियाली से सुंदर सफर ।
पेड़ों की छाँव, हवा थी बहती,
अब धूल, धुआँ, दिल को है दहती ।

कभी सुबह की किरणें मुस्कुराती थीं,
नदियों से ठंडी लहरें आती थीं ।
पर अब धुंध का पर्दा छा जाता है,
सूरज भी शरमाकर लौट जाता है ।

सर्दियों में यहां हवा रुक सी जाती,
प्रदूषण से स्कूलों की छुट्टी हो जाती ।
एक्यूआई बढ़ता है, ऊपर ही ऊपर,
साँस लेना हो जाता है बदतर ।

गाड़ियों की भरमार, सड़कें बेहाल,
हर मोड़ पर बस ट्रैफिक का जाल ।
इंजन की गरज, हॉर्न का शोर,
दिल्ली की हवा में प्रदूषण का जोर ।

फैक्ट्रियों का धुआँ, ऊँची चिमनियाँ,
हवा में उड़ती कार्बन कणिकाएँ ।
रात में शहर चाहे कितना भी चमके,
आसमान में तारे अब कम ही दमकें ।

कभी खेतों में थी खुशबू मिट्टी की,
फसल गाती थी धुन हरियाली की ।
पर अब पराली की आग है जलती,
धुएँ की परत नई कहानी कहती ।

ये आग जो किसान मजबूरी में लगाता,
सर्दियों में प्रदूषण को और है बढ़ाता ।
दिल्ली की हवा बन जाती है जहर,
जैसे शहर ने ओढ़ ली हो धूल की चादर ।

कभी यमुना की बहती थी निर्मल धार,
शहर की मलिनता का उस पर है भार ।
काले पानी की लहरें गवाही देती,
हमारी लापरवाही की हदें हैं कहती ।

जहाँ कभी अमलतास झरता खड़ा,
वहाँ अब हर जगह कंक्रीट है जड़ा ।
पक्षियों की चहचहाहट कम होती जाती,
शोर-प्रदूषण से उनकी दुनिया घबराती ।

दिल्ली की गर्मी अब और कठोर,
तापमान बढ़ता जाता है हर ओर ।
हीटवेव की मार से हर कोई त्रस्त,
जैसे अंगारों ने पहन लिया हो वस्त्र ।

हमें मिलकर यह संकल्प उठाना है,
शहर को स्वच्छ और स्वस्थ बनाना है ।
यमुना की धारा फिर से मुस्काए,
पेड़ों के झुंड फिर से लहलहाएं ।

सबसे पहले जरूरी पेड़ों की बहाली,
हर जगह हो पौधों की रखवाली ।
यमुना को साफ करने का अभियान,
निष्ठा और नीति से हों सारे काम ।

फिर हवा महकती हुई जब बहकर आए,
दिल्ली - एनसीआर का पर्यावरण खिलखिलाए ।
पर्यावरण के मोल को जन-जन तक पहुँचाएं,
आओ मिलकर फिर से धरती को स्वर्ग बनाएं ।

भारतीय कृषि: वर्तमान और भविष्य



आलेख

नितिन सेतिया

मंडल प्रबंधक
सी.आई.बी.एम मणिपाल

प्रस्तावना

भारत की पुण्यधरा सदैव अन्नदाता की पालक रही है। भारत की मिट्टी में जीवन सुगंध लिये मनुष्य को पोषित करते आई है। भारतीय कृषि केवल जीविका का साधन नहीं, बल्कि यह हमारे जीवन-मूल्यों, संस्कृति और सभ्यता की आत्मा है। ऋग्वेद से ही किसान को धरती का देवता कहा गया है। ये किसान का ही श्रम है जिससे सम्पूर्ण मानवता का पेट भरा है।

भारत की कृषि परम्परा वैदिक ऋचाओं जितनी प्राचीन और सिंधु की तरह गहराई लिए हुए है। वैदिक युग में किसान मात्र खेत जोतने वाला नहीं, वरन जीवन के संतुलन का रक्षक था। 'अन्न ब्रह्म' का उद्घोष इसी भारत भूमि पर हुआ। युगों के परिवर्तन के साथ जब औद्योगिकीकरण की आंधी चली, तब भी भारत का कृषक अपनी मिट्टी से जुड़ा रहा।

ऐतिहासिक संदर्भ और स्वतंत्रता आंदोलन में कृषक की भूमिका

अंग्रेजी दासता के दौरान कृषक का जीवन दुष्कर बना, उसका मासूम जीवन करों के बोझ तले दब गया। चम्पारण के किसान को नील की खेती करने के लिए विवश किया गया, उस पर अन्यायपूर्ण ढंग से कर लगाए गए, नील की खेती मुफ्त में करवाई गई और फिर शुक्ला जो मां भारती का एक लाल था उसके प्रयत्नों से चम्पारण के किसानों को अंग्रेजों के अत्याचार से मुक्ति की शक्ति मिली।

चम्पारण का ये किसान आंदोलन आगे चलकर एक आजादी आंदोलन बना। स्वतंत्रता के रूप में 1947 में कृषि का भी उत्कर्ष आया, कृषि योजनाओं की धुरी और विकास की आधार शक्ति बनी।

हरित क्रांति और आत्मनिर्भरता की यात्रा

बीसवीं सदी के छठे और सातवें दशक में हरित क्रांति ने भारत की भूख को मिटाने का काम किया। उत्तरप्रदेश की धरा में गेहूँ की जो सुनहरी लहरें लहराई उसके दम पर भारत एक आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में विकसित हुआ। इस दौरान उन्नत बीजों, मशीनों, यंत्रों ने कृषक को एक नई शक्ति दी।

परन्तु इस शक्ति में निहित थे कुछ प्रश्न—क्या उत्पादन का विस्तार ही प्रगति है? क्या उर्वरक आगे चलकर धरा की उर्वरकता के लिए काल तो नहीं बनेंगे? 1965 के युद्ध के दौरान किसान एक सैनिक की तरह ही मां भारती के लिए खड़ा हुआ और सैनिकों के साथ कदम से कदम मिलाकर पाकिस्तान को नाकों चने चबवा दिये।

तभी तात्कालिक प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने जय जवान जय किसान का नारा दिया। यह नारा किसान की महत्ता का प्रतीक बना और आज भी भारतीय कृषि की पहचान है।

वर्तमान स्थिति: उपलब्धियाँ और आंकड़े

आज का भारत विश्व के कृषि मानचित्र पर एक सशक्त राष्ट्र है। वर्ष 2024-25 में भारत ने रिकॉर्ड 353.96 मिलियन टन खाद्यान्न उत्पादन किया, जो पिछले साल की तुलना में 6.5% अधिक है। वर्ष 2025-26 के लिए केंद्र सरकार ने 362.50 मिलियन टन खाद्यान्न उत्पादन का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है।

किसान अब केवल हल चलाने वाला ही नहीं वरन वह एक कुशल प्रयोगकर्ता भी बन गया है। मौसम की सटीकता के कारण सटीक खेती, जैविक खेती और डिजिटल कृषि के युग में भारतीय किसान अब अवसरों के नए नए आयामों को छू रहा है। भारत का कृषि क्षेत्र देश के सकल घरेलू उत्पाद में 15% से अधिक का योगदान देता है।

आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25 के अनुसार कृषि क्षेत्र में मजबूत वृद्धि देखी गई है, जो वर्ष 2016-17 से वर्ष 2022-23 तक सालाना औसतन 5% रही है। चावल, गेहूँ, मक्का, मूँगफली और सोयाबीन जैसी प्रमुख फसलों में रिकॉर्ड पैदावार हासिल हुई है।



डिजिटल क्रांति और आधुनिक तकनीक

21वीं सदी में भारतीय कृषि डिजिटल क्रांति के दौर से गुजर रही है। 2025 तक 60% से अधिक भारतीय किसानों को फसल प्रबंधन के लिए डिजिटल सलाहकार प्लेटफार्मों तक पहुंच प्राप्त होने की उम्मीद है। आईओटी उपकरणों, ड्रोन, सैटेलाइट इमेजरी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का व्यापक उपयोग फसल प्रबंधन और उत्पादकता में सुधार कर रहा है।

- प्रिंसीजन फार्मिंग (सटीक खेती) से संसाधनों का इष्टतम उपयोग
- ब्लॉकचेन-आधारित ट्रेसेबिलिटी समाधान से आपूर्ति श्रृंखला में पारदर्शिता
- किसान उत्पादक संगठनों के माध्यम से सामूहिक सौदेबाजी शक्ति
- मौसम पूर्वानुमान और बाजार डेटा तक वास्तविक समय में पहुंच

प्रमुख चुनौतियों की सूची

चुनौती	विवरण
जलवायु परिवर्तन	सूखा-प्रवण क्षेत्रों में 30% तक उपज हानि, लगातार फसल विफलता की घटनाएं
जल की कमी	अपर्याप्त सिंचाई संरचना, मानसून पर अत्यधिक निर्भरता
मृदा क्षरण	120 मिलियन हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र प्रभावित, 10-20% उपज में कमी
श्रम संकट	श्रम लागत में 25% वृद्धि, कम यांत्रिकीकरण दर
बाजार अस्थिरता	प्रमुख फसलों की कीमतों में 30% उतार-चढ़ाव, उचित मूल्य न मिलना
खंडित भूमि जोत	छोटी और बिखरी हुई जोतें, आर्थिक रूप से अव्यवहार्य
ऋण की कमी	किरायेदार और भूमिहीन किसानों तक सीमित पहुंच
कटाई के बाद नुकसान	भंडारण और परिवहन सुविधाओं की कमी से 20-30% नुकसान

तालिका 1 : भारतीय कृषि के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ और उनका प्रभाव

सब दिक्कतों के बावजूद किसान हर वर्ष धरती का आंचल सींचकर लिख देता है एक नई जीवन कथा। सरकारों ने बीते वर्षों में किसानों के हित में अनेकों योजनाएं चलाई हैं, जैसे प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, मृदा स्वास्थ्य कार्ड, किसान क्रेडिट कार्ड आदि, लेकिन इन योजनाओं का पूर्ण लाभ सभी किसानों तक नहीं पहुंच पाया।

योजनाएं व नीतियां किसान की हालत सुधार नहीं पाई, किसान का विकास मात्र एक नारा बनकर रह गया और सुधार कागजी।

सरकारी पहल और नीतिगत सुधार :

केंद्रीय बजट 2025-26 में कृषि से संबंधित कई महत्वपूर्ण घोषणाएं की गई हैं जिनमें शामिल हैं:

1. 23 अनाज, 11 दालें और 7 तिलहन फसलों के उत्पादन को बढ़ावा देने की योजना

- एग्री-टेक स्टार्टअप की बढ़ती संख्या और नवाचार

डिजिटल एग्रीकल्चर मिशन के तहत 2030 तक सभी भारतीय किसानों को डिजिटल रूप से जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है।

वर्तमान चुनौतियाँ और किसान की विडंबना

परंतु हकीकत में आज का किसान बड़ा ही लाचार है जिसके माथे पर श्रम का पसीना और आंखों में भविष्य की चिंता साफ दिखाई दे रही है। पुराने समय में नौकरी जिसे किसान चाकरी का दर्जा देता था आज सरकारी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी भी 20 एकड़ किसान से ज्यादा खुशहाल जीवन-यापन कर रहा है।

किसान की हालत तो एक ऐसे वटवृक्ष जैसे है जो सूखे पत्तों के बीच हरेपन की आशा रखता है। कभी सूखा आता है तो कभी बाढ़, तो कभी एमएसपी का वायदा।

2. 100 कम उत्पादकता वाले जिलों में विशेष कार्यक्रम
3. किसान क्रेडिट कार्ड की सीमा 3 लाख रुपए से बढ़ाकर 5 लाख रुपए करना
4. 7.7 करोड़ किसानों, मछुआरों और डेयरी किसानों को लाभ
5. विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत 2,000 से अधिक टीमों गाँव-गाँव में वैज्ञानिक मार्गदर्शन प्रदान करेंगी
6. प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण
7. राष्ट्रीय कृषि बाजार के माध्यम से बेहतर मूल्य प्राप्ति
8. सूक्ष्म सिंचाई और जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन को प्रोत्साहन
9. कृषि उपज विपणन समिति अधिनियम में सुधार
10. कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डेटा विश्लेषण और रोबोटिक्स पर कौशल विकास भविष्य की संभावनाएं और दिशा

भारतीय कृषि का भविष्य उज्ज्वल और चुनौतीपूर्ण दोनों है। मैकिन्से की रिपोर्ट के अनुसार, भारत का कृषि क्षेत्र 2035 तक 1 ट्रिलियन से 1.4 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर और 2047 तक 1.8 ट्रिलियन से 3.1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर तक बढ़ सकता है। भारत का खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र 2035 तक 1.1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच सकता है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का अनुमान है कि 2030 तक खाद्यान्न की खपत 345 मिलियन टन तक बढ़ जाएगी, जो वर्तमान उत्पादन से काफी अधिक है। इसके लिए उत्पादकता में सतत वृद्धि आवश्यक है।

भविष्य की दिशा में प्रमुख रुझान

- **जलवायु-प्रतिरोधी फसलें:** जलवायु परिवर्तन के अनुकूल बीजों का विकास और प्रसार
- **धारणीय विकास:** जैविक खेती, प्राकृतिक कृषि और पर्यावरण-अनुकूल प्रमाणन
- **फसल विविधीकरण:** अनाज की जगह पोषक तत्वों से भरपूर विविध खाद्य पदार्थों का उत्पादन
- **बागवानी और पुष्प उत्पादन:** मूल्यवर्धन और निर्यात की संभावनाओं का दोहन
- **कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग:** फसल रोग पहचान, उपज पूर्वानुमान, और संसाधन अनुकूलन
- **कार्बन फुटप्रिंट निगरानी:** पर्यावरणीय स्थिरता के लिए उत्सर्जन ट्रैकिंग
- **अंतरराष्ट्रीय बाजारों में एकीकरण:** निर्यात क्षमता का विस्तार और मूल्य श्रृंखला सुधार

मिट्टी मानव के अस्तित्व की जननी है, और कृषि सेतु है मानव व प्रकृति के बीच का। कृषि गीत है श्रम का, आशा का, विश्वास का, मानवता के सभ्य विकास का। किसान धरती में बीज नहीं बोता बल्कि जीवन बोता है।

सामूहिक जिम्मेदारी और समाधान

समस्त समाज, सरकार को इस जीवन के आधार स्तम्भ के साथ खड़ा होना चाहिए, इसकी आह को सुनना, जानना और समझना चाहिए—नहीं तो न होगी कृषि और न बचेगी संस्कृति। धरा बन जाएगी बंजर और खतरनाक होगा तब हर एक मंजर।

किसान को भी भौतिकतावाद की चमक में अंधा होने से बचना होगा और धारणीय विकास को अपनाकर चलना होगा जिससे वर्तमान की जरूरतें भी पूरी होंगी। साथ ही साथ भविष्य भी सुरक्षित रहेगा, अन्यथा धरती मां का सच्चा पूजक कृषक भी मां के कलेजे में खंजर बोलने वाला बन जाएगा।

समाज को भी किसान के लिए अपना दिल खुला रखना होगा, सरकार को भी किसान का दर्द समझना होगा, क्योंकि किसान की पीड़ा समस्त मानवता व मानवीय समाज को पीड़ा में डाल देगी।

सात सूत्रीय रणनीति

भारत सरकार किसानों की आय दोगुनी करने के लिए सात सूत्रीय रणनीति पर काम कर रही है:

"प्रति बूंद-अधिक फसल" + "सूक्ष्म सिंचाई" + "मूल्यवर्धन"

1. **प्रति बूंद-अधिक फसल:** सूक्ष्म सिंचाई पर बल देकर जल संरक्षण और लागत कम करना
2. **मूल्यवर्धन:** खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र का विकास
3. **बाजार एकीकरण:** राष्ट्रीय कृषि बाजार के माध्यम से उचित मूल्य
4. **तकनीकी अपनाव:** आधुनिक कृषि यंत्रिकरण और डिजिटल साक्षरता
5. **फसल बीमा:** जोखिम कम करने के लिए व्यापक कवरेज
6. **मृदा स्वास्थ्य:** पोषक तत्व प्रबंधन और जैविक खेती
7. **ऋण सुलभता:** सभी किसानों, विशेषकर किरायेदार और भूमिहीन किसानों, तक पहुंच

निष्कर्ष

कृषक व प्रकृति दोनों ही समाज के लिए संजीवनी की तरह हैं, दोनों के अभाव में समाज अपना अस्तित्व ही खो देता है। अतः समाज को अपने जीवन आधार कृषक का अपने से भी ज्यादा ख्याल रखना चाहिए, जिससे उसका अस्तित्व सुरक्षित रहे।

भारतीय कृषि एक ऐसे मोड़ पर है जहाँ अवसर और चुनौतियाँ दोनों साथ-साथ हैं। डिजिटल तकनीक, वैज्ञानिक नवाचार, नीतिगत सुधार और सामाजिक जागरूकता के संयोजन से ही हम एक समृद्ध और टिकाऊ कृषि भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। 2047 में विकसित भारत का सपना तभी साकार होगा जब हमारा किसान खुशहाल, सशक्त और आत्मनिर्भर होगा।

जय किसान, जय विज्ञान, जय हिन्द!



लोग कहते हैं बेटी को मार डालोगे,
तो बहू कहीं से पाओगे?
जरा सोचो किसान को मार डालोगे,
तो रोटी कहीं से लाओगे?

वर्णों का वन



कहानी

हर्षा के आर

प्रबंधक

क्षेत्रीय कार्यालय

पालकाड़

अन्वी गाँव की सबसे जिज्ञासु बच्ची थी। उसे पेड़ों की सरसराहट, नदी की आवाज़ और पक्षियों की भाषा; सब समझने की कोशिश करना अच्छा लगता था। लेकिन उसे सबसे ज्यादा आकर्षित करते थे शब्द।

"शब्द" जो कभी खिलखिलाते, कभी रोते, कभी कहानी कहते हैं। वह हमेशा इनके बारे में सोचते रहती थी।

एक दिन, स्कूल जाते समय उसे रास्ते के किनारे एक चमकती हुई बेल दिखाई दी। बेल पर कोई फूल नहीं, बल्कि छोटे-छोटे चमकीले अक्षर लटके थे। अन्वी ने सोचा "यह कैसी बेल है?"

अन्वी ने एक अक्षर को छूना चाहा, लेकिन जैसे ही उसकी उँगली करीब पहुँची, पूरा जंगल सुनहरी रोशनी में बदल गया और अगले क्षण, वह एक अजीब सी जगह पर खड़ी थी। उसने देखा उसके सामने एक विशाल दरवाजा था; जिस पर लिखा था:

"वर्णों का वन — शब्दों का जन्म स्थान"

अन्वी की आँखें फैल गईं। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि यह हो क्या रहा है। वह धीरे-धीरे उस जादुई दुनिया में प्रवेश कर गई। जंगल में सबसे पहले उसने एक बहुत हल्की, गर्म रोशनी देखी। वह रोशनी आकार लेने लगी।

"मैं हूँ 'अ': शुरुआत का आलोक।"

'अ' अक्षर हवा में तैर रहा था, किसी दीपक की लौ की तरह।

इसके बाद, एक लंबी, दयालु रोशनी फैल गई..... "मैं हूँ 'आ'। मैं प्रेम की एक लम्बी रेखा हूँ, माँ की बाँहों जैसी।"

उससे अन्वी को दिल में कुछ मेहसूस होने लगा। अन्वी को लगा जैसे किसी ने उसे हल्का सा गले लगा लिया हो। फिर उसके बाद दो छोटे-छोटे अक्षर उछलते आए,

कभी पास, कभी दूर, नटखट.... शरारती जुड़वाँ.....

इ!"
ईई!"

उनकी आवाज़ में बच्चों जैसी चंचलता थी। इसके बाद एक गहरी, मीठी धुन गुँजी, मानो कहीं से नदी बह रही हो... उसने उस आवाज़ की ओर देखा, वो पास आ रही हैं....

"उ...
ऊ..."

अन्वी मंत्रमुग्ध होकर उन्हें देखती रही।

कोने में बैठे थे विद्वान "ऋट्ट"..... कोई भी सवाल पूछो जवाब तुरंत सामने।

इनके पीछे ही थे ए, ऐ, ओ, औ, अं, अ: खुशी खुशी खेलते। इन आवाजों की गहराई ने उसे चौंका दिया था, स्वरों ने उसे बताया..... "हम भाषा की धुन हैं। हमारे बिना कोई शब्द सांस नहीं ले सकता।" अन्वी ने महसूस किया कि ये अक्षर सचमुच जीवित हैं और बेहद सुंदर हैं।

"हे अन्वी....!" स्वरों ने कहा..... "अब तुम व्यंजनों से मिलो। वे शब्दों के कारीगर हैं।"

अन्वी ने हल्के से अपना सिर हिलाया जी..."

जंगल के अगले हिस्से में छोटे-छोटे घर बने थे। हर घर के बाहर एक अक्षर अपनी पहचान में मग्न था। सबसे पहले "क" आया, सख्त किनारे, बहुत ही गहन आवाज़। "मैं शुरुआत करता हूँ शक्ति से। मैं 'कर्म' हूँ, 'किला' हूँ, 'कविता' हूँ।"

उसके पीछे उछलता-फुदकता आया "ख"....." मैं हवा की तरह खुला हूँ। बिना मेरे तुम्हारी हँसी भी अधूरी होती है..... ख-ख-ख!" यह सुनते ही अन्वी ने हँसते हुए हाथ ताली बजाई।

कुछ दूरी पर उसने सुना गंभीर और गूँजते अक्षर, "मैं 'ग' हूँ : गौरव का प्रतीक।"

"और मैं 'घ': धरती की गहराई-सा गूँजता हूँ।"

फिर एक पत्ते के नीचे छोटा-सा अक्षर, अन्वी ने धीरे से उसकी ओर देखा, "ड... मैं चुप हूँ, पर जरूरी हूँ। बिना मेरे बहुत से शब्द बन ही नहीं सकते।"

आगे च, छ, ज, झ मानो इंद्रधनुष के रंगों की तरह उड़ते गए। हर अक्षर की अपनी आवाज़, अपना स्वभाव।

फिर आए, ट, ठ, ड, ढ, और शांत ण, कठोर किनारों वाले, पर बहुत गरिमामय।

फिर कोमल धारा की तरह आए त, थ, द, ध, न..... दिल के बहुत अच्छे। किसी को भी परेशानी हो, तुरंत दौड़कर पहुँच जाते।

फिर अन्वी के सामने पाँच प्यारे अक्षर एक साथ दौड़े आए, चारों ओर प्यारी प्यारी आवाज गूँज रही थी

प, फ, ब, भ, म..... जैसे किसी परिवार के भाई-बहन हों। आपस में कितना प्यार हैं।

उनके बाद आए, एक मिश्रण जैसा... **य, र, ल, व.....** हल्की हवा, धागा, तलवार और तरंग जैसे।

और अंत में, तीन चमकीले तारों जैसे अक्षर **श, ष, स...** जो अलग-अलग तरंगों का झरना रच रहे थे।

सबसे पीछे धीरे-धीरे चलता हुआ अक्षर, एक एहसास "मैं 'ह' हूँ : शब्दों की आखिरी हवा।"

मात्राएँ छोटी-छोटी परियाँ बनकर उड़ने लगीं और अक्षरों पर बैठकर उन्हें सही आवाज देने लगीं। अन्वी ने महसूस किया, हर अक्षर एक व्यक्ति है, एक भाव है, एक संसार है।

जंगल में अचानक अजीब-सी खामोशी छा गई। आकाश काला पड़ गया। स्वर्णों ने चिंतित होकर कहा, "अक्षरों का संतुलन टूट रहा है।"

अन्वी ने पूछा, "क्यों?"

"अ" ने धीमे से बताया, "दुनिया में लोग हिंदी अक्षरों को भूलते जा रहे हैं। वे हमें लिखना, बोलना और समझना छोड़ रहे हैं। जैसे-जैसे हम कम उपयोग होते हैं, हम कमजोर पड़ जाते हैं।"

तभी जंगल की जमीन फटने लगी और कुछ अक्षर फीके पड़ने लगे। अक्षर कमजोर पड़ने लगे। पुरा वातावरण बदल रहा था।

अन्वी ने घबराकर कहा, "मैं क्या करूँ? मैं मदद कर सकती हूँ?"

सभी वर्ण एक साथ बोले, "तुम्हें अपने मन से हमें पुकारना होगा। शब्द बनाओ, वाक्य बनाओ, कहानियाँ लिखो, और हमारी ध्वनि को जीवित रखो।" जंगल में अंधेरा पूरी तरह उतरने लगा। अन्वी ने आँखें बंद कर लीं, और मन में एक एक करके गुनगुनाने लगी, अ, आ, इ, ई, उ, ऊ..... क, ख, ग, घ.....

शब्द... वाक्य... कविता..... उसकी आवाज में उस भाषा के लिए सच्चा प्यार, वो उन्हे दिल से पुकारने लगी। अन्वी को लगा 'ये तो मेरे अपने हैं, इनको कुछ नहीं होने दूँगी।' उसकी आवाज़ में जादू था। जैसे-जैसे वह बोलती गई, सभी अक्षर चमकने लगे। जंगल में रोशनी लौट आई।

स्वर्णों और व्यंजनों ने मिलकर अन्वी के चारों ओर एक वृत्त बनाया। वे नाचने लगे, रोशनी के घेरे में और धीरे-धीरे शब्द बनने लगे,

"अमन

"घर

"सपना

"कलम

"आसमान

जंगल फिर से जीवित हो गया। चारों ओर खुशियों की लहर भरने लगी।

'अ' ने अन्वी के कंधे पर हाथ रखा, "बच्चे, तुमने हमें बचा लिया। याद रखो!..... हिंदी के अक्षर सिर्फ लिखावट नहीं, भावनाओं का पुल हैं। जितना उन्हें बोलोगी, जितना लिखोगी, वे उतने ही सुंदर, उतने ही जीवित रहेंगे। **अपनों की तरह, दिल के करीब.....**"

धीरे-धीरे जंगल की रोशनी धुंधली होने लगी। अन्वी खुद को वापस उसी पगडंडी पर खड़ा महसूस करने लगी, जहाँ से वह आई थी। लेकिन अब उसके हाथ में छोटी-सी चमक थी, एक अक्षर की,

"अ"

वह मुस्कुराई। उसे पता था शब्द अब सिर्फ किताबों में नहीं, उसके दिल में बसते हैं। भाषा एक सुंदर सा एहसास है..... किसी भी भाषा का अस्तित्व उसके प्रयोग पर निर्भर करता है। दैनिक जीवन में हिंदी का प्रयोग निरंतर करने से न केवल भाषा की गरिमा बनी रहेगी बल्कि आने वाली पीढ़ियों तक भी यह पूर्ण रूप से सुरक्षित पहुँच पाएगी और उस दिन से अन्वी हर दिन कहानी लिखती, कविता बनाती और वर्णों का वन उसकी कलम से हमेशा जीवित रहता।



परशिनिकडवु मुत्तप्पन मंदिर



आलेख

कीर्ति पी.सी

प्रबंधक (राजभाषा)

क्षेत्रीय कार्यालय, कण्णूर

परशिनिकडवु मुत्तप्पन मंदिर : "जहाँ भगवान इंसान बनकर अपने भक्तों से संवाद करते हैं और श्वान (कुत्ता) को पवित्र माना जाता है।

केरल को "ईश्वर का अपना देश" [God's own Country] कहा जाता है। यहां हम ऐसे बहुत सारे छोटे-बड़े मंदिरों को देख सकते हैं, जो न केवल पूजा-अर्चना के केंद्र हैं, बल्कि वे दक्षिण भारतीय वास्तुकला, मूर्तिकला और परंपराओं का प्रतीक भी हैं। हर एक मंदिर की अपनी एक कहानियाँ होती हैं, ये अपने अद्वितीय धार्मिक अनुष्ठान, आध्यात्मिक वातावरण, प्राचीन इतिहास, पूजा-पाठ आदि में अलग-अलग होते हैं।

आप लोगों ने एक ऐसे मंदिर के बारे में सुना है, जहाँ भगवान अपने प्रिय भक्तों से मिलते हैं और उनसे संवाद करते हैं, और जहाँ श्वान को पवित्र माना जाता है। यह है केरल का प्रसिद्ध 'परशिनिकडवु मुत्तप्पन मंदिर'।

यह मंदिर केरल के कण्णूर शहर से लगभग 18–20 किलोमीटर की दूरी



पर, वलपट्टणम नदी के किनारे परशिनिकडवु में स्थित है। इसका इतिहास 450 साल पुराना है। उत्तरी केरल में स्थित यह मंदिर समाज के सभी वर्गों के श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है, चाहे उनका धर्म या उनकी जाति कुछ भी क्यों न हो। पारंपरिक मंदिर शैली से अलग, यह एक तीन-मंजिला सफेद भवन है जो रूप और संरचना में विशिष्ट है। यहाँ का प्रतिष्ठित देव 'मुत्तप्पन' हैं, जिन्हें शिव और विष्णु दोनों का संयोग माना

जाता है – 'तिरुवप्पन्न' (विष्णु) और 'वेल्वाट्टम' (शिव)। ऐसा माना जाता है कि यहां के आराध्य देव 'मुत्तप्पन' ने ताउम्र दलितों और कमजोरों के हितों के लिए संघर्ष किया। उनके जीवन को 'मुत्तप्पन तेय्यम' नामक पारंपरिक नृत्य के जरिए भक्तों के आगे दर्शाया जाता है। भगवान मुत्तप्पन को उबले हुए चने, सूखी मछली और देशी शराब अर्पित की जाती है। यहां आने वाले सभी लोगों को निःशुल्क भोजन और रहने की सुविधा प्रदान की जाती है।



यह मंदिर तेय्यम के लिए प्रसिद्ध है जो एक अनुष्ठानिक कला है, जिसका प्रदर्शन यहां रोज सुबह और सायंकाल को किया जाता है। यह केरल के अन्य हिंदू मंदिरों में होनेवाली वैदिक पूजा पद्धति से एकदम अलग है। यहाँ पूजा का मुख्य माध्यम है 'मुत्तप्पन तेय्यम', जिसमें एक नर्तक-कलाकार भगवान 'मुत्तप्पन' का रूप धारण करता है। भक्तों को तेय्यम कलाकार से सीधे संवाद करने का अवसर मिलता है, और ऐसा माना जाता है कि कलाकार की बातें भगवान के वचन होते हैं। भक्तों के अनुसार 'मुत्तप्पन तेय्यम' की भविष्यवाणियाँ सटीक होती हैं। मुत्तप्पन को 'नायाट्टु' (शिकारी) रूप में स्वयं भगवान शिव का अवतार माना जाता है।

ऐसा कहा जाता है कि मुत्तप्पन के साथ एक श्वान था, इसलिए मंदिर परिसर में श्वान पवित्र माने जाते हैं और उन्हें यहाँ स्वतंत्र रूप से घूमने की अनुमति है। मंदिर के प्रवेश द्वार पर दो कुत्तों की मूर्तियाँ हैं, जिन्हें मुत्तप्पन के अंगरक्षकों के रूप में दर्शाया गया है। मंदिर में जब प्रसाद बनता है, तो सबसे पहले मंदिर के अंदर घूमनेवाले कुत्तों को दिया जाता है। मुत्तप्पन के सामने कुत्तों के महत्व के बारे में कई कहानियाँ प्रचलित हैं। इनमें से एक कहानी इस प्रकार है: कुछ साल पहले, मंदिर के अधिकारियों ने मंदिर के अंदर कुत्तों की संख्या कम करने का फैसला किया। उन्होंने मंदिर से कुछ कुत्तों और पिछों को वहाँ से भगाया। लेकिन उस दिन के बाद से, मुत्तप्पन तेय्यम करने वाला व्यक्ति तेय्यम की प्रस्तुति नहीं कर सका। (ऐसा माना जाता है कि तेय्यम करने वाले व्यक्ति को 'मुत्तप्पन' की शक्ति प्राप्त होती है। वह विशेष शक्ति तब तक उसके शरीर में रहती है जब तक तेय्यम की प्रस्तुति समाप्त नहीं होती)। मंदिर के अधिकारियों को जब यह एहसास हुआ कि 'मुत्तप्पन' तेय्यम करने वाले व्यक्ति के शरीर में प्रवेश नहीं कर रहे हैं, क्योंकि कुत्तों को मंदिर से बाहर निकाल दिया गया था, तो वे कुत्तों को वापस मंदिर ले आए। कहा जाता है कि मंदिर में कुत्तों को वापस लाने के बाद ही वहाँ तेय्यम की प्रस्तुति हो पाई।

किंवदंती के अनुसार उत्तरी मलबार के एरुवेसी गांव के सामंत अय्यंकार वाषुत्रोर और उनकी पत्नी, पडिकुट्टी अम्मा, की कोई संतान नहीं थी। पडिकुट्टी शिव की एकभक्त थीं। एक दिन उन्हें सपने में भगवान दिखे। अगले दिन, पडिकुट्टी और उनकी नौकरानियां नदी में स्नान करने के लिए गईं, जैसे ही उन्होंने डुबकी लगाई, उन्हें एक छोटे बच्चे के रोने की आवाज़ सुनाई दी। पास ही एक चट्टान पर एक सुंदर बच्चा लेटा हुआ था। उन्होंने इसे भगवान शिव का आशीर्वाद माना और बच्चे को बड़े प्यार से अपने 'इल्लम' (ब्राह्मणों का बड़ा घर) ले गयी और वह बच्चा अय्यंकार वाषुत्रोर और पडिकुट्टी अम्मा के बेटे के रूप में बड़े हुए। बच्चे को वेद और महाकाव्य सिखाया। वह अपने धनुष और तीर के साथ शिकार करने के लिए जंगल में जाता था। फिर वह दलितों और गरीबों को खाना खिलाता और आस-पास के लोगों से मिलता-जुलता था, जो ब्राह्मणों के जीने के तौर-तरीकों के खिलाफ थे, इसलिए उनके माता-पिता ने उनसे इस आदत को छोड़ने के लिए कहा और उन्हें डांटा। लेकिन लड़के ने उनकी चेतावनियों पर ध्यान नहीं दिया। वह बहुत निराश हो गया। लड़के ने गुस्से में आकर अपने माता-पिता को अपना दिव्य ईश्वरीय रूप (विश्वरूपम) दिखाया। तब उन्हें एहसास हुआ कि वह लड़का कोई साधारण लड़का नहीं है, बल्कि भगवान है। उन्होंने भगवान के सामने सिर झुकाया। जैसे ही वह अपने घर से बाहर निकला और चारों ओर देखा, आस-पास के सारे पेड़-पौधे उसकी आग में जल गये। मुत्तप्पन की नज़र में आने वाली हर चीज़ जलकर राख हो गई क्योंकि उनका अपने माता-पिता को छोड़ने का वक्त आ गया था, इसलिए वह काफी दुखी थे। यह देखकर पडिकुट्टी अम्मा ने उससे आँखों को पोंडकण्णु से ढकने का अनुरोध किया, क्योंकि उन्हें डर था कि किसी और अवसर पर ऐसी उग्र दृष्टि से ब्रह्मांडीय शक्ति प्रकट हो सकती है, जो पूरी दुनिया को बदल सकती है। मुत्तप्पन ने अपनी आँखें छिदवा लीं ताकि उसकी नज़र से किसी को नुकसान न हो। इसी वजह से 'तिरुवप्पन' (मुत्तप्पन का एक रूप) को अंधा दिखाया गया है।



मुत्तप्पन अपने माता-पिता को छोड़कर निकल पड़े और वह कुन्नतूर नामक सुंदर गांव में रहने लगे, जहां बहुत सारे ताड़ के पेड़ थे। वहाँ वह ताड़ के पेड़ों की ताड़ी से काफी आकर्षित हो गए। चंदन कुन्नतूर गांव का एक गरीब आदमी था। वह ताड़ी निकालने का काम करता था। हर दिन उसके ताड़ के पेड़ों से ताड़ी की चोरी होती थी, इसलिए उसने उस चोर को

पकड़ने का फैसला लिया। एक रात को एक बूढ़े आदमी को उसने ताड़ के पेड़ों से ताड़ी चुराते हुए पकड़ लिया। उसे बहुत गुस्सा आया और उसने अपना धनुष लेकर उस पर तीर चलाने की कोशिश की, लेकिन तीर छोड़ने से पहले ही वह बेहोश हो गया। चंदन की पत्नी उसे दूँढते हुए आई। अपने पति को पेड़ के नीचे बेहोश पाकर वह फूट फूटकर रो पड़ी। उसने ताड़ के पेड़ के ऊपर एक बूढ़े आदमी को देखा और उसे पुकारा, "मुत्तप्पन" (स्थानीय मलयालम भाषा में मुत्तप्पन का मतलब 'दादा' होता है)। उसने अपने पति को बचाने के लिए भगवान से प्रार्थना की। थोड़ी देर में, चंदन को होश आ गया। उसने मुत्तप्पन को उबले हुए चने, नारियल के टुकड़े, जली हुई मछली और ताड़ी चढ़ाई। (आज भी मुत्तप्पन के मंदिरों में, भक्तों को उबले हुए चने और नारियल के टुकड़े दिए जाते हैं।) उसने मुत्तप्पन से आशीर्वाद मांगा। मुत्तप्पन ने चंदन के अनुरोध पर कुन्नतूर को अपने निवास के रूप में चुना। यह बाद में कुन्नतूरपडी के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

कुछ वर्षों के बाद मुत्तप्पन कुन्नतूर को छोड़कर एक नई जगह की तलाश में निकल पड़े, ताकि वे अपने अवतार का मकसद पूरा कर सकें। उन्होंने वहाँ से निकलने के पहले कुन्नतूर से ऊपर की ओर एक तीर चलाया और वह तीर परशिशनी नामक जगह पर कांजीरम (जहरीले कुचिला का पेड़) के पेड़ पर चुभा हुआ पाया गया, जहाँ आज प्रसिद्ध परशिशनीकडवु मंदिर स्थित है। तीर को मंदिर में सुरक्षित रूप से रखा गया। तब से, भगवान मुत्तप्पन को परशिशनीकडवु में निवास करने वाला माना जाता है।

अपनी लंबी यात्रा में मुत्तप्पन पुरलीमला नामक जगह पर पहुँचे। वहाँ वे मुत्तप्पन के ही दूसरे रूप से मिले, जिसे 'वेल्लाट्टम' कहा जाता है। मुत्तप्पन उन्हें प्यार से 'चेरुक्कन' (मलयालम में 'चेरुक्कन' का अर्थ है 'छोटा लड़का') बुलाता था, वह उनके साथ गए। इस तरह, मुत्तप्पन को वलिया मुत्तप्पन (अर्थात् 'बड़ा मुत्तप्पन') या तिरुवप्पन मुत्तप्पन (विष्णु) कहा जाता है; और दूसरे मुत्तप्पन को वेल्लाट्टम (शिव) या चेरिया मुत्तप्पन (अर्थात् 'छोटा मुत्तप्पन') कहा जाता है। जब परशिशनिक्कडवु मंदिर में 'तेय्यम' की प्रस्तुति होती है, तब 'तिरुवप्पन' और 'वेल्लाट्टम' - मुत्तप्पन के दोनों रूप अपने भक्तों के सामने आते हैं। आरंभ में जो 'वेल्लाट्टम' आता है, वह स्वयं शिव का ही लघु रूप है। लेकिन बाद में मुत्तप्पन के भव्य रूप 'तिरुवप्पन' के साथ आने वाला 'वेल्लाट्टम', विष्णु का लघु रूप है, जो पौराणिक कथाओं के अनुसार, शिव की सहायता के लिए तब आते हैं जब वे पोयकण्णु (आँखों पर पट्टी बाँधकर) यात्रा करने लगते हैं और भोजन की तलाश में यात्रा करने में गंभीर कठिनाइयों का सामना करने लगते हैं। चेरिया मुत्तप्पन और वलिया मुत्तप्पन दोनों सुबह-सुबह 'तेय्यम' के रूप में अपने भक्त जनों को 'पवित्र दर्शन' और आशीर्वाद देते हैं।

'वेल्लाट्टम' अनुष्ठानिक अभिनय का एक लघु संस्करण है जिसमें आभूषण, सजावट और अन्य साज-सज्जा कम होती है, जिसके कारण भविष्यवाणी सहित अन्य सभी क्रियाएँ अधिक होती हैं और 'आट्टम'


(नृत्य) अपने चरम पर होता है। दूसरी ओर, 'तिरुवप्पन' इसका पूर्ण संस्करण है, जिसमें शाही पोशाक और प्रभामंडल का बड़ा आयाम होता है। चूँकि सजावट अधिक होती है, इसलिए सभी क्रियाएँ कम और धीमी होती हैं और वाणी संक्षिप्त और भविष्यवाणियाँ सटीक होंगी।

मुत्तप्पन के दोनों स्वरूपों ने अपनी लंबी यात्रा में केरल में कुल 308 मडप्पुराएँ (ऐसा भवन जहाँ पूजा, प्रार्थना या धार्मिक अनुष्ठान आदि किए जाते हैं) और अनगिनत 'पोडिक्कलम' (तीर्थस्थान) बनाए। मुत्तप्पन की पूजा स्थान को मडप्पुरा कहा जाता है। उत्तरी मलबार में कई मडप्पुराएँ हैं। इनमें से 'परशिशनी' मडप्पुरा सबसे प्रसिद्ध है। यहाँ आनेवाले मुत्तप्पन के भक्तों को चाय, उबले हुए चने और नारियल के टुकड़े दिए जाते हैं। यहाँ प्रतिदिन विशेष पूजा-पाठ और धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं, जिनमें दीपदान (दीप प्रज्वलन) एक महत्वपूर्ण धार्मिक अनुष्ठान माना जाता है। इसे भक्ति और श्रद्धा का प्रतीक माना जाता है। भक्त दीप जलाकर भगवान मुत्तप्पन के प्रति अपनी श्रद्धा और कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। मंदिर में

भक्तजन सुबह और सायंकाल तथा त्योहार जैसे विशेष अवसरों पर दीप जलाकर भगवान से आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। मंदिर परिसर में सैकड़ों दीपों के एक साथ प्रज्वलित होने का दृश्य अत्यंत भव्य और मनमोहक होता है।


दिसंबर के पहले सप्ताह परशिशनिक्कडवु मंदिर में 'पुत्तरी तिरुवप्पन' नामक वार्षिक फसल उत्सव मनाया जाता है, जिसमें बड़ी संख्या में भक्त लोग भाग लेते हैं। कण्णूर के स्थानीय लोग मुत्तप्पन को न्याय के देव मानते हैं। जिन पर अन्याय हुआ हो, वे यहाँ आकर न्याय की प्रार्थना करते हैं और विश्वास करते हैं कि मुत्तप्पन उनकी मदद करेंगे। इस मंदिर में प्रतिदिन होनेवाला तेय्यम नृत्य न केवल एक धार्मिक अनुष्ठान है, बल्कि भक्तों के लिए मुत्तप्पन के प्रत्यक्ष दर्शन और आशीर्वाद प्राप्त करने का सुअवसर भी है।

45 वें अंक पर आपकी प्रतिक्रियाएं



84
वर्षों का उत्सव

यूको बैंक UCO BANK
सम्मान आपके विश्वास का Honours your trust



एचओ/राजभाषा/200(21/7)/2025-26

दिनांक: 30.01.2026

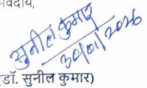
संपादक
केनरा ज्योति पत्रिका
केनरा बैंक
महोदय/महोदय,


विषय: तिमाही पत्रिका 'केनरा ज्योति' जुलाई-सितंबर, 2026 अंक

आपकी तिमाही पत्रिका 'केनरा ज्योति' की प्रति हमें प्राप्त हुई। एतदर्थ हार्दिक धन्यवाद।

'केनरा ज्योति' पत्रिका के इस अंक में विभिन्न विषयों पर सामयिक लेखों को समाहित किया गया है। 'केनरा ज्योति' पत्रिका के इस अंक में समाहित आलेख 'स्वयं सहायता समूहों और माइक्रो फ़ाइनेंस के माध्यम से महिला सशक्तिकरण', 'ग्राहक- सेवा एवं व्यवसाय के विस्तार में भारतीय भाषाओं की भूमिका', 'ग्राहक सेवा आत्मिक संवाद के साथ बैंकिंग', 'सात भारतीय महिलाओं की एक अनोखी सफलता की कहानी' तथा 'वर्ष 2047 तक सभी को वीमा- हर घर तक पहुंच के लिए कदम' अत्यंत समसामयिक एवं ज्ञानवर्धक है। इस अंक में श्री अतुल बंसल, सहायक महाप्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, रोहतक द्वारा 'रास्तों से रिश्ता' कविता सकारात्मक विचारधारा और कार्य के प्रति सतत समर्पण के प्रयास को प्रदर्शित करता है। साथ ही साथ 'भाषाओं की फुलवारी है' तथा 'कामयाबी' सकारात्मक जीवन के पहलुओं को दर्शाती है। 'केनरा ज्योति' पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित सृजनात्मक लेखों एवं कविताओं के रचनाकारों को अनंत शुभकामनाएँ एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई!

हमें आपकी पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,
भवदीय,

(डॉ. सुनील कुमार)
मुख्य प्रबंधक- राजभाषा



राजभाषा विभाग, उत्तर केंद्र, नई दिल्ली, 110 001
Official Language Dept., Head Office, P.O. Box, 10, 11M Sarani, Kolkata-700090
दूरभाष: 011-5155-7384 ई-मेल: kora@bhaa.cantt@ucobank.co.in
राजभाषा हिंदी में राष्ट्र का काम

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा किए गये निरीक्षण।





दिनांक 12-12-2025 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अर्धवार्षिक बैठक के दौरान “अपनी क्षेत्रीय भाषा को जानें-तेलुगु संस्करण” का विमोचन करते हुए प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री के. सत्यानारायण राजु, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (दक्षिण) के निदेशक श्री अनिर्बान कुमार विश्वास, मुख्य महाप्रबंधक, मानव संसाधन व जनसंपर्क विभाग, श्री बी पी जाटव, अंचल कार्यालय बेंगलूरु के अंचल प्रमुख श्री महेश एम. पै, मानव संसाधन व जनसंपर्क विभाग, महाप्रबंधक, श्री अमिताभ चटर्जी, सहायक महाप्रबंधक/पर्यवेक्षी कार्यपालक राजभाषा, श्रीमती श्रीकला श्रीकुमार एवं विभिन्न बैंकों व बीमा कंपनियों एवं वित्तीय संस्थानों के कार्यालय प्रधान।



दिनांक 15 नवम्बर 2025 को 198वीं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान कर्मचारियों एवं ग्राहकों को क्षेत्रीय भाषाओं से जोड़ने तथा भाषायी विविधता को प्रोत्साहन देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए ‘अपनी क्षेत्रीय भाषा को जानें – तमिल’ एवं ‘मलयालम’ पुस्तिकाओं का विमोचन करते हुए प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री के. सत्यानारायण राजु, कार्यपालक निदेशक श्री भवेन्द्र कुमार, कार्यपालक निदेशक, श्री एस. के. मजुमदार, मुख्य महाप्रबंधक, मानव संसाधन व जनसंपर्क विभाग, श्री बी. पी. जाटव तथा अन्य विभागों के विभाग प्रमुख एवं कार्यपालकगण।



केनरा बैंक
Canara Bank

भारत सरकार का उपक्रम



Together We Can

आपके सभी यूपीआई
लेन-देन के लिए
वन स्टॉप सॉल्यूशन
पेश है



से डाउनलोड करें

किसी भी बैंक के
ग्राहकों के लिए

सभी यूपीआई भुगतान
के लिए



एकीकृत डिजिटल
भुगतान एप्लिकेशन



सभी डिजिटल लेन-देन
एक ही जगह पर

बेहतर अनुभव के लिए
ऐप को अभी
डाउनलोड करें!



*नियम व शर्तें लागू

1 बैंक
नंबर



1800 1030



www.canarabank.bank.in